संस्कृत-विद्यापीठ-प्रकाशनमालाया अष्टात्रिंशं पुष्पम्

परमहंसपरिव्राजक—श्रीमदाद्यशङ्करभगवत्पादाचार्यवर्य— प्रणीत-
यतिदण्डैश्वर्य-विधानान्तर्गत-श्रीत्रिपुरास्तोत्राधारेण
— सङ्कलिता —
मेधा-साम्राज्य-पर्यन्ता सृष्टिक्रमरूपा सम्बुद्ध्यन्ता.

श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-
खड्गमाला

[१. षडुत्तरत्रिशतशक्तिनामावली २. श्रीत्रिपुरसुन्दरीत्रिशतीनाममाला-
३. चतुरशीत्युत्तरशत-महालक्ष्मीनामावली ४. श्रीदेवीवैभवाश्चर्याष्टोत्तरशत-
दिव्यनामावली ५. सर्वावरण-समष्टि-पुष्पाञ्जलि-समन्विता]



प्र० सम्पादकः —
डॉ० मण्डनमिश्रः, प्राचार्यः

"श्रीयन्त्रदीपिका"रूप—
प्राक्कथनलेखकः संग्राहकः सम्पादकश्च
डॉ० रुद्रदेवत्रिपाठी, आचार्यः
एम० ए० (संस्कृत-हिन्दी), पी-एच० डी०, डी० लिट्०,

प्रकाशन-स्थलम्
श्रीलालबहादुर-शास्त्री-केन्द्रीय-संस्कृत-विद्यापीठम्
शहीदजीतसिंहमार्गः कटवारियासराय,
नई दिल्ली-१६

"श्रीयन्त्र-दीपिका"

[प्राक्कथन]



श्रीयन्त्र :: महिमा, परिचय एवं उपासना-विधि

श्रीयन्त्र की महिमा

भारतीय मन्त्रविद्या एवं उपासना के क्षेत्र में "श्रीयन्त्र" की बड़ी महिमा है। श्री-विद्या, पञ्चदशी और षोडशी विद्या के नाम से भी इसी यन्त्र की पूजा-अर्चना होती है। साधकों की समस्त कामनाओं की पूर्ति एवं अन्यान्य देवताओं की उपासना से उपलब्ध होने वाले सभी साधनों की सुलभता के साथ ही इस यन्त्र की साधना से मोक्ष की प्राप्ति भी होती हैं। शास्त्रों में कहा गया है कि —

यत्रास्ति भोगो न च तत्र मोक्षो, यत्रास्ति मोक्षो न च तत्र भोगः।
श्रीसुन्दरीसेवनतत्पराणां, भोगश्च मोक्षश्च करस्थ एव ।।

अर्थात् जहां भोग है वहां मोक्ष नहीं है, जहां मोक्ष है वहां भोग नहीं है। किन्तु श्रीसुन्दरी-त्रिपुरसुन्दरी की सेवा-उपासना में जो लगे हुए हैं उनके लिए भोग और मोक्ष दोनों ही हथेली में रखे हुए के समान हैं–सुलभ हैं।

इस प्रकार इस लोक और परलोक के सुखों को देने वाली श्रीविद्या और श्रीयन्त्र का आविर्भाव भगवान् परमशिव ने भगवती पराम्बा के आग्रह से समस्त ऐहिक सिद्धियों को देनेवाले तथा पुरुषार्थचतुष्टय-धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के साधक के रूप में चौसठ तन्त्रों के साररूप में किया है। श्रीशंकराचार्य ने "सौन्दर्यलहरी" में यही बात निम्नलिखित रूप से व्यक्त की है —

चतुःषष्ट्या तन्त्रैः सकलमतिसन्धाय भुवनं,
स्थितस्तत्तत्सिद्धिप्रसवपरतन्त्रैः पशुपतिः।
पुनस्त्वन्निर्बन्धादखिल-पुरुषार्थैकघटना,
स्वतन्त्रं ते तन्त्रं क्षितितलमवातीतरदिदम् ।।३१।।

कुलार्णव, तन्त्रराज, शक्तिसङ्गमतन्त्र, श्रीविद्यार्णव, त्रिपुरारहस्य, परशुराम कल्पसूत्र,

नित्योत्सव, यन्त्रमहार्णव आदि अनेक ग्रन्थों में इस यन्त्र को महिमा गाई गई है। कहीं मन्त्र की महिमा को ध्यान में रखकर कहा गया है कि —

यस्य नो पश्चिमं जन्म, यदि वा शंकरः स्वयम् ।
तेनैव लभ्यते विद्या श्रीमत्पञ्चदशाक्षरी ।।
वाक्यकोटिसहस्रैस्तु जिह्वाकोटिशतैरपि ।
वर्णितुं नैव शक्येऽहं श्रीविद्याषोडशाक्षरीम् ।।

और कहीं श्रीचक्र–श्रीयन्त्र के दर्शन की महिमा दिखाई गई है —

सम्यक् शतं क्रतून् कृत्वा यत्फलं समवाप्नुयात् ।
तत्फलं समवाप्नोति कृत्वा श्रीचक्रदर्शनम् ।।

जब कि श्रीयन्त्र को स्नान कराने के पश्चात् उस जल को चरणामृत के रूप में पान करने का महत्त्व भी अनेक तीर्थों में स्नान करने के फल के समान दिखलाया है —

तीर्थस्नानसहस्रकोटिफलदं श्रीचक्रपादोदकम् ।

इन्हीं सब कारणों से श्रीयन्त्र की उपासना को समस्त देवताओं द्वारा वांछनीय तथा ब्रह्मानन्द रस के समान अनिवर्चनीय बतलाया है —

सरस्वत्या लक्ष्म्या विधि-हरिसपत्नो विहरते,
रतेः पातिव्रत्यं शिथिलयति रम्येण वपुषा ।
चिरं जीवन्नेव क्षपितपशुपाशव्यतिकरः,
परानन्दाभिख्यं रसयति रसं त्वद्भजनवान् ।। सौ० ल० ९९।।

श्रीयन्त्र का एक 'रेखात्मक स्वरूप' है तो दूसरा इसका 'विग्रह-(शरीराकृति-विशेष) स्वरूप' भी है। यही विग्रहात्मक रूप राजराजेश्वरी श्रीललिता महात्रिपुरसुन्दरी पराभट्टारिका के नाम से भी शंकराचार्य द्वारा स्तुत है —

"शरीरी शृङ्गारो रस इव दशां दोग्धि कुतुकम् ।।९२।।

और पद्मपुराण में श्री ललिता के पूजन का फल —

अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयशतानि च ।
ललितापूजनस्यैते लक्षांशेनापि नो समाः ।।

कहकर अतीव उन्नत व्यक्त किया है। यही देवीरूप सारे जगत् में व्याप्त हुआ जिसमें स्त्री और पुरुषरूप का कोई भेद नहीं रहा —

एवं युवतयः सद्यः पुरुषत्वं प्रपेदिरे ।
चक्षुष्मन्तो नु पश्यन्ति नेतरे तद्विदो जनाः ।। (दुर्गासप्तशती)

यही पुरुषरूप विष्णु के रूप में अवतरित हुआ । पद्मपुराण में भी स्वयं भगवान् ने नारद से कहा कि —

अहं च वासुदेवाख्यो नित्यं कामकलात्मकः ।
अहं च ललिता देवी पुंरूपा कृष्णविग्रहा ।।
आवयोरन्तरं नास्ति सत्यं सत्यं हि नारद ।
इदं वृन्दावनं नाम रहस्यं मम वै महत् ।।

इस प्रकार न केवल भगवती ने पुरुषरूप ही धारण किया अपितु अपने यन्त्र को भी वृन्दावन के रूप में अभिव्यक्त किया है । अतः श्रीयन्त्र की महिमा अतीव विस्तृत और रहस्यपूर्ण है ।

ऐसे यन्त्रराज को सर्वांश में समझने-समझाने का सामर्थ्य सभी सामान्यजनों में कैसे आ सकता है ? न केवल भारतवर्ष में ही अपितु समस्त विश्व में इस यन्त्र के रहस्यों को जानने की एक उत्कण्ठा जगी हुई है । तभी तो सर जॉन वुडरफ ने कहा था कि "जिस दिन श्रीयन्त्र को भले प्रकार से समझ लिया जाएगा, उस दिन विश्व का स्वरूप ही बदल जाएगा" ।

□ श्रीयन्त्र का परिचय

श्रीविद्या की आराधना के तीनरूप प्रसिद्ध हैं १- मन्त्रात्मक, २- यन्त्रात्मक और ३- विग्रहरूप । इनमें प्रथम मन्त्रात्मक रूप है जिसमें बाला, पञ्चदशी, षोडशी और महाषोडशी आदि मन्त्रों के अनेक प्रकारों के रूप में प्रसिद्ध मन्त्र हैं । इनका दीक्षापूर्वक जप करने से सर्वविध सिद्धि होती है । "वरिवस्यारहस्य" में भास्करराय मखी ने —

स जयति महान् प्रकाशो यस्मिन् दृष्टे न दृश्यते किमपि ।
कथमिव तस्मिन् ज्ञाते सर्वंविज्ञातमुच्यते वेदे ।।

यह कह कर उस प्रकाश की अपूर्व शक्ति का वर्णन किया है तथा उसके विज्ञान के लिये चौदह विद्याएँ और उनमें भी सारभूत वेदों का ज्ञान बताया है । वेदों का साररूप तत्त्व गायत्री-मन्त्र में निहित है । गायत्री मन्त्र के दो रूप हैं १- स्पष्ट, जो कि चतुर्विंशत्यक्षरात्मक है और २- परमगोपनीय श्रीविद्यारूप ।

द्वितीय रूप का प्रतीक श्रीयन्त्र है । इसमें शिव और शक्ति दोनों की स्थिति मानी गई है । चार शिवचक्र और पांच शक्ति-चक्रों से यह यन्त्र बनता है । कहा गया है कि —

चतुर्भिः शिवचक्रैश्च शक्तिचक्रैश्च पञ्चभिः ।
नवचक्रैश्च संसिद्धं श्रीचक्रं शिवयोर्वपुः ।।

इसी को अधिक स्पष्ट करते हुए लिखा गया है कि इस यन्त्र की रचना क्रमशः १- बिन्दु, २- त्रिकोण, ३- वसुकोण, ४- ५ दशारयुग्म, ६- चतुर्दशार, ७- अष्टदल, ८- षोडशार, ९- वृत्तत्रय औरं १०- भूपुरत्रय से होती है —

"बिन्दुत्रिकोण-वसुकोण- दशारयुग्म- मन्वश्रनागदलसंयुतषोडशारम् ।
वृत्तत्रयं च धरणीसदनत्रयं च श्रीचक्रमेतदुदितं परदेवतायाः ।।

इसी यन्त्र को कोणों के रूप में उनका प्रतीकात्मक परिचय देते हुए भी समझाया गया है । जिसमें श्रीयन्त्र के चारों ओर परिधि, जो तीन रेखात्मक है वह तीन शक्तियों का संकेत है । षोडशदलपद्म सोलह देवियों का प्रतीक है । अष्टदलपद्म अष्टलक्ष्मी का परिचायक है, इसके अन्तर्गत चतुर्दश त्रिकोण बनते हैं जो चतुर्दश शक्तियों का संकेत देते हैं । इसके भीतर दस त्रिकोण बनते हैं जो दस सम्पदाओं के सूचक हैं । दस त्रिकोणों के अन्तर्गत आठ त्रिकोण हैं ? जो लक्ष्मी के त्रिकोण है तथा इसमें जो विन्दु है वह भगवती का सूचक है । साधक इसी विन्दु पर मणिमण्डप में रत्नवेदी पर विराजमान कामेश्वर-कामेश्वरी का ध्यान कर पूजन करते हैं । इस प्रकार श्रीयन्त्र कुल मिलाकर २८१६ देवियों का सूचक है अतः इसकी पूजा से सभी शक्तियों की पूजा हो जाती है ।

श्रीयन्त्र में बने हुए इन चक्रों का नामात्मक-परिचय भी दर्शनीय है । तन्त्रशास्त्रों में ये नाम इस प्रकार दिये गये है —

चक्र	चक्रनाम	योगिनीदेवता	देवीनाम	मुद्रानाम
१- वैन्दवचक्र	सर्वानन्दमय	परापरातिरहस्य	त्रिपुरभैरवी	सर्वयोनि
२- त्रिकोणचक्र	सर्वसिद्धिप्रद	अतिरहस्य	त्रिपुराम्बा	सर्वबीज
३- अष्टारचक्र	सर्वरोगहर	रहस्य	त्रिपुरासिद्धा	सर्वखेचरी
४- अन्तर्दशारचक्र	सर्वरक्षाकर	निगर्भ	त्रिपुरमालिनी	सर्वमहांकुशा
५- बहिर्दशारचक्र	सर्वार्थसाधक	कुलोत्तीर्ण	त्रिपुराश्री	सर्वोन्मादिनी
६- चतुर्दशारचक्र	सर्वसौभाग्यदायक	सम्प्रदाय	त्रिपुरवासिनी	सर्ववशंकरी
७- अष्टदलचक्र	सर्वसंक्षोभण	गुप्ततर	त्रिपुरसुन्दरी	सर्वाकर्षिणी
८- षोडशदलचक्र	सर्वाशापरिपूरक	गुप्त	त्रिपुरेशी	सर्वविद्राविणी
९- वृत्तत्रयचक्र[1]	त्रैवर्गसाधनकर	मातृका	त्रिपुरेशिनी	सर्वसंक्षोभिणी
१०- भूपुरचक्र	त्रैलोक्यमोहन	प्रकटयोगिनी	त्रिपुरा	सर्वत्रिखण्डा

१- इस चक्र में तीन रेखाएं हैं, जिनमें १. बाह्य रेखा शुक्ल २- मध्य रेखा अरुण तथा ३- अन्तःस्थ रेखा कृष्ण है ।

इस प्रकार और भी नाम इस यन्त्र के प्रत्येक अंग के निर्दिष्ट हैं। सम्भवतः ऐसी कोई भी सृष्टि की वस्तु और विद्या नहीं है कि जिसका श्रीयन्त्र में समावेश न हो।

मानव शरीर और श्रीयन्त्र

मानव-शरीर और श्रीयन्त्र में भी एकरूपता है। इसके लिए कहा है कि-भगवती त्रिपुरेशी का महायन्त्र पिण्डात्मक है। इसे जो जानता है वह शिव, विष्णु, ब्रह्मा और योगीन्द्र है। पिण्ड और ब्रह्माण्ड का श्रीचक्र में ज्ञान करके उत्तम फल की प्राप्ति करना यह सामान्य तपस्या का फल नहीं है अर्थात् बड़ी तपस्या के द्वारा ही यह ज्ञान प्राप्त होता है।

त्रिपुरेशी-महामन्त्रं त्रिपिण्डात्मकमीश्वरि।
यो जानाति स योगीन्द्रः स शम्भुः स हरिर्विधिः॥
पिण्डब्रह्माण्डयोर्ज्ञानं श्रीचक्रस्य विशेषतः।
ज्ञात्वा शम्भुफलावाप्तिर्नाल्पस्य तपसः फलम्॥

इस दृष्टि से श्रीचक्रावयव और शरीरावयव का ऐक्य इस प्रकार वर्णित है —

१- विन्दु-ब्रह्मरन्ध्र। २- त्रिकोण-मस्तक। ३- अष्टकोण-ललाट। ४- अन्तर्दशार भ्रूमध्य। ५- बहिर्दशार-कण्ठ। ६- अन्तर्दशार-हृदय। ७- वृत्त-कुक्षि। ८- अष्टदल-नाभि। ९- अष्टदल के बाहर का वृत्त-कटि। १०- षोडशदल-स्वाधिष्ठान। ११- बाहरी-त्रिवृत्त-मूलाधार। १२- भूपुर की पहली रेखा-जानुयुगल। १३- द्वितीयरेखा-जंघा। १४- तृतीय-रेखा-पादयुगल।[1]

इसी प्रकार श्रीयन्त्र की शारीरिक चक्रों में स्थिति, दण्डी संन्यासियों के दण्ड में स्थिति[2] और मन्त्राक्षरों में स्थिति है[3]। सत्यादि ऊर्ध्वलोक, अतलादि अधोलोक, ब्रह्मेन्द्रादि देव, सूर्यचन्द्रादि ग्रह, अश्विन्यादि नक्षत्र, मेषादि राशि, वस्वादि नाग, वरुण,

---

१- अनेक ग्रन्थों में नौ चक्रों का ही उल्लेख मिलता है। उसके अनुसार कहीं तो इस चक्र (वृत्तत्रय) की गणना नहीं होती और कहीं विन्दु चक्र के रूप में गणना नहीं करते हैं।

इन रेखाओं के भी क्रमशः शुक्ल, अरुण और कृष्ण पीत वर्ण माने गये है।

२. यहां ७ और ९ संख्या में दो और वृत्तों का निर्देश हुआ है। यह यन्त्र-रचना पद्धति 'तन्त्रराज' के अनुसार है।

३. आद्यशंकराचार्य द्वारा विरचित "यतिदण्डैश्वर्यविधान" नामक ग्रन्थ इस बात को अतिविस्तार से बतलाता है। इस ग्रन्थ का हिन्दी अर्थ सहित सम्पादन हम(डॉ० रुद्रदेव त्रिपाठी) ने किया है। यह ग्रन्थ "निगमागमानुसन्धान-केन्द्र, के तत्त्वावधान में छपने वाला है।

गरुड आदि, मन्दारादि वृक्ष, रम्भादि अप्सराएँ, कपिलादि सिद्ध, वसिष्ठादि मुनि, कुबेरादि यक्ष, राक्षस, गन्धर्व, किन्नर, विश्वावसु आदि गायक ऐरावत आदि गजेन्द्र, उच्चैःश्रवा आदि अश्व, हिमालयादि पर्वत, गंगादि नदियां, समुद्र, नगर-राष्ट्र आदि सभी की उत्पत्ति श्रीचक्र से ही हुई है। अतः इनका भी इस यन्त्रराज में निवास है। सिद्धियां, धातु, मणियां, वर्णमाला, नदियां, अवस्थाएँ, क्रियाएँ आदि सभी का यन्त्रराज में समावेश वैज्ञानिक पद्धति से वर्णित होने के कारण ही यह यन्त्र अत्यन्त प्रभावशाली माना जाता है[1]।

विभिन्न आचार्यों ने श्रीयन्त्र की रचना पर इतना अधिक विमर्श किया है कि उन सब को यहां लिख पाना सर्वथा असम्भव है।

✯ श्रीयन्त्र की आवरण पूजा

'यन्त्रात्मक-पूजा-विधान, में ही आवरण पूजा होती है। उपर्युक्त दस चक्र और उनकी देवियों आदि की जो नामावली है, उस के द्वारा नवावरण अथवा दशावरणात्मक पूजा होती है। इसके अतिरिक्त 'षोडशावरणात्मक-पूजा का भी स्वतन्त्र विधान है, जिसमें निम्नलिखित छह चक्रों की ओर भावना की जाती है—

चक्र	चक्रनाम	योगिनीदेवता	देवीनाम
१- स्पन्दीचक्र (प्रथम)	———	चक्रस्थयोगिनी	ब्रह्मगायत्रीतुरीयासहित
२- स्पन्दीचक्र (द्वितीय)	———	निगर्भरहस्ययोगिनी	कालिकादि दशमहाविद्या
३- महावैन्दव चक्र	मुक्तिप्रदमहावैन्दवात्मकसामरस्य	परापरातिरहस्ययोगिनी	महात्रिपुरसुन्दरी
४- षट्कोणच	परब्रह्मात्मकसामरस्य	परापररहस्ययोगिनी	"
५- पंचसिंहासनचक्र	परब्रह्मात्मक	परापररहस्ययोगिनी	"
६- भूपुरवहिर्भागात्मक	सर्वाध्वशोधनचक्र	"	"

हमारे पूर्व महर्षियों ने अपनी क्रान्त दृष्टि से सांसारिक-प्रपञ्च में फँसे हुए मानवों की कठिनाइयों को वहुत पहले पहचान लिया था। उनकी सर्वसाधारण-हितकारिणी भावना की ही यह परिणति है कि साधना के क्षेत्र में विशाल से विशाल विस्तारवाली प्रक्रियाओं के साथ ही संक्षिप्त से संक्षिप्त विधियों के प्रकटन में उन्होंने संकोच नहीं किया है।

वहुदिनसाध्य पूजा विधानों को देखकर विघ्नवहुल जीवनयापन करनेवाला भावी साधक अपनी व्यस्तता, अज्ञता, साहाय्यशून्यता एवं विभिन्नविषयक दरिद्रता के भय से साधना में प्रवृत्त भी नहीं हो पायेगा, यह वात उनसे छिपी हुई नहीं थी। सम्भवतः, इसीलिये उन्होंने कृपा करके कुछ ऐसे सरस, सरल एवं सहजसाध्य विधानों को प्रस्तुत किया जिनसे

१. इन सब के सम्वन्ध में देखिये "श्रीविद्यारत्नाकर।'

बिना किसी भय और संकोच के साधक उपासना कर सकता है तथा यथारुचि आगे बढ़ सकता है ।

'श्रीचक्रराज की अर्चना का विधान अत्यन्त व्यापक है । पिण्ड और ब्रह्माण्ड के ऐक्य का प्रतीक यह यन्त्रराज कितने रहस्यों से ओत-प्रोत है ? कितने देवताओं का इसमें आवास है ? और वे किस-किस स्थान पर विराजमान हैं ? यह समझाते हुए उनकी अर्चना का सरल मार्ग 'आवरण-पूजा' से अनावृत होता है ।

श्रीयन्त्र की पूजा में आवरण-क्रम तथा आवरणदेवताक्रम के अनुसार पूजा का अत्यधिक महत्त्व है । सर्वसामान्य प्रचलित पद्धति एवं परम्परा के अनुसार यन्त्रराज को 'नवचक्रात्मक' एवं भगवती त्रिपुरसुन्दरी को नवावरण-देवता कह कर स्तुति-प्रार्थनापूजादि का विधान है ।

❁ षोडशावरण-पूजाविचार

षोडश आवरणात्मक पूजा में बिन्दु में अन्तर्भावित अन्यचक्रों की भावनापूर्वक पूजा करना ही प्रमुख है । इसका अधिक प्रचार नहीं होने का कारण यह प्रतीत होता है कि यह पूजा पूर्णाभिषिक्त एवं उसके पश्चात् होनेवाली दीक्षाओं को प्राप्त करने के अनन्तर ही की जाती है ।

वैसे षोडशी अथवा महाषोडशी की दीक्षा के पश्चात् षोडश आवरणात्मक पूजा करनी चाहिए, यह उचित प्रतीत होता है । भगवती का नाम 'षोडशी' होने से भी षोडश आवरण उपयुक्त लगते हैं । नित्याषोडशिकार्णव की टीका अर्थरत्नावली में 'संकेतपद्धति' के अनुसार श्रीयन्त्र को षोडशीरूप बताते हुए कहा है कि "सृष्टि, स्थिति और संहार के प्रत्येक की सृष्टि, स्थिति तथा संहारात्मकता मानने से जो नौ रूप होते हैं, वे 'नव-नित्या'रूप हैं और चतुराम्नायरूप श्रीचक्र, जिसमें—

पूर्वाम्नायः सृष्टिरूपः स्थितिरूपस्तु दक्षिणः ।
संहारः पश्चिमो ज्ञेयो ह्यनाख्यस्तूत्तरः स्मृतः ।।

चतुरस्रादि-अष्टारान्त तीन चक्र पूर्वाम्नाय सृष्टिरूप, चतुर्दशार एवं दशारद्वयरूप तीन चक्र दक्षिणाम्नाय स्थितिरूप, अष्टार, त्र्यस्र एवं मध्य ये तीन चक्र पश्चिमाम्नाय स्थितिरूप तथा सर्वसमष्टिचक्र अनाख्येय होने से उत्तराम्नायरूप माना गया है । इन्हीं आम्नायों को जो पूर्व, दक्षिण एवं पश्चिमाम्नायात्मक रूप हैं, उन तीनों के क्रमशः १- सृमष्टिसृष्टि, २- सृष्टिसृष्टि, ६- स्थितिसृष्टि, ४- संहारसृष्टि और ५- अनाख्या के रूप के में १- सृष्टिपञ्चक पूर्व में, २- स्थितिपञ्चक दक्षिण में तथा ३- संहारपञ्चक पश्चिम में और उत्तर में एकमात्र अनाख्यारूप होने से 'त्रिपञ्चीकरण समष्टिव्यष्ट्या' षोडशात्मक षोडशनित्यारूप 'श्रीचक्र'

है। ऐसे परमगुरु परमशिव के द्वारा उपदिष्ट श्रीचक्र को जो जानता है, वह देशिकाग्रणी मुक्तात्मा होता है—

तुर्यात्मकं पञ्चयुतं योगिनीचक्रमण्डलम् ।
यो जानाति स मुक्तात्मा सोऽन्वयी देशिकाग्रणीः ॥

इस दृष्टि से भी सोलह आवरणात्मक पूजा करना उचित होगा।

'यतिदण्डैश्वर्य-विधान' ग्रन्थ में ओङ्कार और श्रीचक्र का ऐक्य बताते हुए ओङ्कार में सोलह मात्राओं का निर्देश किया गया है तथा उनका ऐक्य षोडश आवरणस्थलों से दिखलाया है । यथा—

अकारः प्रथमः प्रोक्त उकारस्तदनन्तरम् ।
मकारश्चार्धमात्रा च नाद-बिन्दू ततः परम् ॥

कला ततः कलातीता शान्तिः शान्तेः परा ततः ।
उन्मन्येकादशी चैव द्वादशी तु मनोन्मनी ॥

पुरी च मध्यमा पश्चात् पश्यन्ती च परा ततः ।
एवं षोडशरूपोऽयं प्रणवः सूक्ष्ममात्रकः ॥

इस कथन के अनुसार १- अ, २- उ, ३- म्, ४- अर्धमात्रा, ५- नाद, ६- बिन्दु, ७- कला ८- कलातीता, ९- शान्ता, १०- शान्त्यतीता, ११- उन्मनी, १२- मनोन्मनी, १३- पुरी-वैखरी, १४- मध्यमा, १५- पश्यन्ती तथा १६- परा — इस प्रकार यह प्रणव सूक्ष्म मात्राओं से युक्त षोडश रूप है। और श्रीयन्त्र के षोडशावरण तथा षोडशीमन्त्र का इसी प्रणव के साथ ऐक्य है। अन्य आगमों में प्रणव का ही विस्तार श्रीचक्र है, यह भी बतलाया गया है। अतः इस दृष्टि से षोडशावरण-पूजा अपेक्षित है । ऐसे ही अन्य तर्क और भी दिए जा सकते हैं किन्तु विस्तारभय से हम नहीं देते हुए साधकों को इस ओर ध्यान देने तथा अपनी पूज्य गुरुपरम्परानुसार आज्ञाग्रहण करने की प्रार्थना करते हैं ।

□आम्नाय-व्यवस्था-परिचय

भगवान् शिव ने प्राणिमात्र के कल्याण के लिये जो उपदेश दिया वही आगम तथा आम्नाय के नाम से प्रसिद्ध हुआ। शिव ने यह उपदेश अपने पूर्वादि चार दिशामुख एवं एक ऊर्ध्वमुख से दिया था, अतः क्रमशः ये पांच आम्नाय माने गये। यथा —(१) पूर्वाम्नाय, (२) दक्षिणाम्नाय, (३) पश्चिमाम्नाय, (४) उत्तराम्नाय और (५) अधराम्नाय। उन के अधोमुख से प्राप्त उपदेश (६) अधराम्नाय के नाम से प्रसिद्ध है। ये ही मूल छः आम्नाय हैं। इन्हीं का अपरनाम 'आम्नायषट्क' है

इन आम्नायों में से पूर्वाम्नाय और दक्षिणाम्नाय के योग से (७) आग्नेयाम्नाय,

दक्षिणाम्नाय तथा पश्चिमाम्नाय के योग से (८) नैर्ऋत्याम्नाय, पश्चिमाम्नाय और उत्तराम्नाय के योग से (९) वायव्याम्नाय तथा उत्तराम्नाय एवं पूर्वाम्नाय के योग से (१०) ऐशानाम्नाय का उद्भव हुआ। इस प्रकार दस आम्नाय प्रसिद्ध हैं। इन आम्नायों अथवा आगमों में सभी देवियों और देवों के मन्त्र, न्यास, जप-क्रम, पूजा-क्रम, ध्यान-क्रम आदि का विस्तार से वर्णन प्राप्त होता है। इन्हीं के अनुसार उपासना करने से सिद्धि प्राप्त होती है।

इन आम्नायों के आधार पर सृष्टि, स्थिति, संहारादि क्रमों की भी व्यवस्था प्राप्त होती है, जो इस प्रकार है—

१- पूर्वाम्नाय सृष्टिक्रम, २- दक्षिणाम्नाय स्थितिक्रम, ३- पश्चिमाम्नाय लयक्रम, ४- उत्तराम्नाय अनाख्याक्रम, और ५- ऊर्ध्वाम्नाय भासाक्रम।

वेदों में भगवान् शिव के तत्पुरुषादि नामों का जो संकेत है वह इन आम्नायों के रूप में तन्त्रशास्त्रों में स्वीकृत हुआ है और यही श्रीविद्या के मन्त्रकूटों में भी समन्वित है। इस सम्बन्ध में 'यतिदण्डैश्वर्य-विधान' में स्पष्ट किया गया है, तदनुसार क्रमज्ञान इस तालिका से किया जा सकता है—

आम्नाय	सृष्ट्यादिक्रम	शिवनाम	कूट-व्यवस्था	कालक्रम
१- पूर्वाम्नाय	सृष्टि	तत्पुरुष	वाग्भवकूट	प्रातः
२- दक्षिणाम्नाय	स्थिति	अघोर	कामराजकूट	मध्याह्न
३- पश्चिमाम्नाय	लय	सद्योजात	शक्तिकूट	सायं
४- उत्तराम्नाय	अनाख्या	वामदेव	सप्तदशी[1]	तुरीय
५- ऊर्ध्वाम्नाय	भासा	ईशान	अष्टादशी	ब्राह्म

□आम्नायों के अनुसार उपासनाक्रम तथा कूटव्यवस्था

आम्नायों के आधार पर ही शक्त्युपासना के प्रमुख तीन क्रम, तीन भाग, तीन योगपद्धतियां, तीन मार्ग आदि का विशद वर्णन भी उपर्युक्त ग्रन्थ में ही ओङ्कार के अक्षरों तथा यतिदण्डगत परशुमुद्रा- प्रभृति विषयों के साथ श्रीचक्र के ऐक्य को समझाने के लिये किया गया है[2]। उसका संक्षिप्त रूप इस प्रकार है—

१— यहां महाषोडशी का भी उल्लेख है।

२— कादिः काली समाख्याता हादिः श्रीसुन्दरी मता।
सादिश्च तारिणी प्रोक्ता क्रमज्ञैस्तत्त्वदर्शिभिः॥
कादिः कुण्डलिनी प्रोक्ता हादिर्हंसक्रमः स्मृतः।
सादिश्च सर्वदा विज्ञैः संवरोधिक्रमः स्मृतः॥ यतिदण्डैश्वर्यविधान

क्रम	मन्त्रकूटमार्ग	योगक्रम	ओंकाराक्षर	कूट
काली	कादि	कुण्डलिनी	अ	वाग्भव
सुन्दरी	हादि	हंस	उ	कामराज
तारिणी	सादि	संवरौधी	म्	शक्तिकूट

पञ्चदशी के तीन कूटों का अन्य प्रकार से आम्नायरूप व्यक्त करते हुए कहा है कि उत्तर, पूर्व और पश्चिम आम्यायत्रयस्वरूप वाग्भवकूट है। दक्षिण, अधर और ऊर्ध्व आम्नायत्रयस्वरूप कामराज कूट है तथा उपाम्नायों के भेद-प्रभेद शक्तिकूट माने गये हैं।[1]

□नैर्ऋत्य और अधराम्नाय

नैर्ऋत्याम्नाय डामररूप होने से दक्षिणाम्नाय के अन्तर्गत करके समष्टिविधि से उपासना की जाती है। इसी प्रकार अधराम्नाय की उपासना भी दक्षिणाम्नाय के अन्तर्गत करके ही समष्टिविधि से की जाती है। अधराम्नाय बौद्धोपासित है। हां, इस उपासना में वामावर्तक्रम से पश्चिम की ओर वढ़ता हुआ नैर्ऋत्य तक पहुंचे तो कामादि षड्रिपुओं का नाश कर सकता है। अथवा बौद्धोपासनाक्रम से भी उपासना की जा सकती है। दक्षिणावर्तक्रम से चलनेवाले के लिये नैर्ऋत्यकोण अतिदूर होने से रिपुनाश न होकर पतन का भय रहता है किन्तु कामना-विशेष से अन्य दिक्कोणों कीं समष्टि एवं अन्य क्रम का भी आश्रय लिया जाता है।[2]

१– सौम्येन्द्रीपश्चिमाम्नायत्रितयात्मा च वाग्भवः ।
कादिः स एव कथितः कूट आगमवेदिभिः ॥
याम्याधरोर्ध्वत्रितयाम्नायात्मा कामराजकः ।
हादिः स एव कथितः कूटस्तन्त्रविशारदैः ॥
उपम्नायप्रभेदानां संस्मृतः शक्तिकूटकः ।
सादिः स एव कथितः कूटक्रमविवेचकैः ॥ वहीं ॥

२- नैर्ऋत्यस्य डामरत्वादाम्नाये दक्षिणे ततः ।
कृत्वा समष्टिं विधिना क्रियते तदुपासना ॥
तद्वच्चाधर आम्नायो बौद्धोपासित इत्ययम् ।
तथैव दक्षिणाम्नायो ह्युपास्यो न पृथक् क्वचित् ॥
वामावर्तक्रमेणैव गच्छेत् पश्चिमतो यदि ।
षट्कर्मणाऽऽशु नैर्ऋत्ये षड्रिपून् नाशयेत् तदा ॥
ततश्च मार्गो निर्विघ्नः सुगमो जायते भृशम् ।
यतो हि दक्षिणावर्त-क्रमेण व्रजतो यतेः ॥
नैर्ऋत्यस्यातिदूरत्वाद् रिपुनाशो न जायते ।
ततश्च मार्गे पतनाद् भीतिः सञ्जायते ध्रुवम् ॥ (इत्यादि यतिदण्डैश्वर्यविधान)

मूलाधारादि शरीर-चक्रों का भी इसी प्रकार आम्नायदर्शन विस्तार से प्राप्त होता है, जिसका ज्ञान प्राप्त करके अन्तर्याग-पद्धति से श्रीचक्रोपासना करना उत्तम है। श्रीविद्योपासना-क्रम में मूलाधार से पूर्व और सहस्रार के पश्चात् भी कतिपय चक्रों में स्मरण होता है। जिसमें— मूलाधार से पूर्व १- अकुल सहस्रार तथा २- विषुवत्, और सहस्रार के पश्चात् १- बिन्दु, २- अर्धचन्द्र, ३- रोधिनी, ४- नाद, ५- नादान्त, ६- शक्ति, ७- व्यापिका, ८- समना, ९- उन्मनी और १०- महाबिन्दु प्रमुख हैं। एतदर्थ अन्य तन्त्र-ग्रन्थों से ज्ञान एवं गुरूपदेश प्राप्तव्य हैं।

इस प्रकार आम्नायों का ज्ञान प्राप्त करके उपासना करने से शीघ्र सिद्धिलाभ होता है। अतः साधक को इस ओर भी प्रवृत्त रहना चाहिए।

'श्रीयन्त्र' में विराजित चक्रों का सृष्ट्यादिक्रम

● सृष्ट्यादि-पञ्चक्रम, चक्र और पूजाक्रम

सम्पूर्ण यन्त्रराज के चक्रों को ध्यान में रखकर अपनी-अपनी दीक्षा, अवस्था एवं गुरूपदेश के अनुसार अर्चना करने के लिए निम्नलिखित क्रम का निर्देश किया गया है—

१. सृष्टिचक्रक्रम

बिन्दु.त्रिकोण-वसुकोण-दशारयुग्म-मन्वस्र-नागदल-संयुत-षोडशारम्।
वृत्तत्रयं च धरणीसदनत्रयं च श्रीचक्रमेतदुदितं परदेवतायाः ॥१॥

२. स्थितिचक्रक्रम

भूबिम्बचक्रमथ षोडश चाष्ट-बिन्दु-रन्यष्टसंयुतमहद्द्वितयं दशारम्।
वेदार-संयुत-दशास्पदमध्यरूपां, त्वां वै महात्रिपुरसुन्दरि नौम्यहं श्रि ॥२॥

३. संहारचक्रक्रम

भूवेश्मग-त्रिवृतषोडशनागशक्र-दिग्युग्म-वस्वनलकोणगबिन्दुमध्ये।
सिंहासनोपरिगतारकपीठ-मध्ये, प्रोत्फुल्लपद्मनयनां त्रिपुरां भजेऽहम् ॥३॥

४. अनाख्याचक्रक्रम

बिन्दोः समारभ्य धरापुरान्तं, चक्राणि यान्यत्र विराजितानि।
तेषां समष्ट्या भवतीह रूपं, चक्रं ह्यनाख्याऽभिधमद्वितीयम् ॥४॥

५. भासाचक्रंक्रम

विन्दोरन्तर्गतं चक्रं डाकिनी-षट्कसंयुतम् ।
पञ्चपञ्चिकया युक्तं मध्यषट्कविराजितम् ॥५॥

बिन्दोर्भूपुरपर्यन्तं चक्राणां च समष्टिजम् ।
भासाचक्रं समाख्यातमूर्ध्वाम्नायात्मकं शुभम् ॥६॥

इन पद्यों के अनुसार इन चक्रों का स्पष्ट रूप इस प्रकार है—

१. सृष्टिक्रमानुसारी श्रीचक्रपूजाक्रम

१- विन्दु	२- त्रिकोण	३- अष्टकोण	४- अन्तर्दशार	५- वहिर्दशार
६- चतुर्दशार	७- अष्टदल	८- षोडशदल	९- वृत्तत्रय	१०- भूपुर ।

२. स्थितिक्रमानुसारी श्रीचक्रपूजाक्रम

१- भूपुर	२- वृत्तत्रय	३- षोडशदल	४- अष्टदल	५- विन्दु
६- त्रिकोण	७- अष्टकोण	८- अन्तर्दशार	९- बहिर्दशार	१०- चतुर्दशार ।

३. संहारक्रमानुसारी श्रीचक्रपूजाक्रम

१- भूपुर	२- वृत्तत्रय	३- षोडशदल	४- अष्टदल	५- चतुर्दशार
६- बहिर्दशार	७- अन्तर्दशार	८- अष्टकोण	९- त्रिकोण	१०- बिन्दु ।

४. अनाख्याक्रमानुसारी श्रीचत्रपूजाक्रम

सृष्टिक्रमात्मक चक्र के अनुसार ही इस क्रम में भी सभी चक्रों की उसी में दो स्पन्दीचक्रों के साथ कुल वारह चक्रों की समष्टि मानने से 'अनाख्याचक्र' की पूजा का क्रम बनता है ।

५. भासाक्रमानुसारी श्रीचत्रपूजाक्रम

इसमें भी सृष्टिक्रमात्मक सभी चक्र एवं विन्दु के अन्तर्गत चक्रों की भावना करके उसमें षड् डाकिनी, पञ्च पञ्चिका एवं षडध्व आदि के पूजास्थलरूप १- महावैन्दव-चक्र, २- विन्दुचक्रान्तर्गत षट्कोणचक्र, ६- मध्य एवं कोणचतुष्टय तथा ४- भूपुर के मध्य एवं वहिर्भाग की समष्टि मानने से 'भासाचक्र' की पूजा का क्रम बनता है ।

□ श्रीयन्त्रस्थ दस चक्रों का सृष्ट्यादि-क्रम

भूवृत्त-शशि-नागाढ्यं सृष्टिचक्रं वरानने ।
मनु-दिग्दशकैर्युक्तं स्थितिचक्रं शुभावहम् ।।
वस्वग्नि-बिन्दुसंयुक्तं चक्रं संहारकं स्मृतम् ।
सर्वेष्वनाख्यचक्रं तु भावयेत् साधकोत्तमः ।।

(तान्त्रिकोपासनादर्पण, द्वि० भाग)

अर्थात् १- भूपुर, २- त्रिवृत्त' ३- षोडशदल और ४- अष्टदल
१. सृष्टिचक्ररूप हैं । ५- चतुर्दशार ६- बहिर्दशार और ७- अन्तर्दशार
२. स्थितिचक्ररूप हैं । ८- अष्टकोण, ९- त्रिकोण तथा १०- बिन्दु
३. संहारचक्ररूप हैं । सभी चक्रों की समष्टिभावना ४- अनाख्या तथा
५- 'भासाचक्र' रूप है ।

□ श्रीएक्र के तीन क्रम

सभी-चक्रों के सृष्ट्यादि क्रम इस प्रकार भी होते हैं—

	सृष्टिक्रम	स्थितिक्रम	संहारक्रम
सृष्टिक्रम—	१	२	३-४
स्थितिक्रम—	२	३-४	२
संहारक्रम—	३-४	१	१

□ प्रत्येक चक्र का सृष्ट्यादि क्रम

श्रीचक्र के प्रत्येक चक्र का स्वतन्त्र सृष्ट्यादिक्रम भी होता है, जो इस प्रकार है—

१- भुपुर सृष्टि-सृष्टि, २- त्रिवृत्त- ब्रह्माण्डसृष्टिंव्यापक ३- षोडशदल- सृष्टिस्थिति, ४- अष्टदल- सृष्टिसंहार, ५- चतुर्दशार- स्थिति-सृष्टि, ६- बहिर्दशार- स्थिति-स्थिति, ७- अन्तर्दशार- स्थिति-संहार, ८- अष्टकोण- संहार-सृष्टि, ९- त्रिकोण- संहार-स्थिति, तथा १०- बिन्दु-संहार-संहार[1] ।

□ श्रीचक्र पूजाक्रम-विचार

दक्षिणामूर्ति सम्प्रदाय के अनुसार श्रीचक्रावरण-पूजा के पांच प्रकार हैं। तदनु-

---

१- इस प्रकार के विभाजन का ज्ञान 'नित्याषोडशिकार्णव' आदिग्रन्थों से विशेष-रूप से प्राप्त करना चाहिए। संहार के स्थान पर 'लय' शब्द का भी प्रयोग होता है ।

सार १- सृष्टिक्रम से सृष्टिचक्र में, २- स्थितिक्रम से स्थितिचक्र में तथा संहारक्रम से संहारचक्र में पूजा की विश्रान्ति होती है । शेष दो ४- अनाख्या और ५- भासा-क्रम में पूजा क्रम नहीं बदलता है ।

□ त्रिवृत्त-पूजन-सम्वन्धी विचार

श्रीविद्या महात्रिपुरसुन्दरी की उपासना के तीन मत प्रसिद्ध हैं—१- हयग्रीव, मत, २- आनन्दभैरव मत तथा ३- दक्षिणामूर्तिमत। इनमें हयग्रीवमतानुसार श्रीयन्त्र में त्रिवृत्त का आलेखन भी नहीं होता है और न पूजा ही की जाती है। आनन्द-भैरवमत में त्रिवृत्त लिखा जाता है किन्तु पूजा नहीं होती । दक्षिणामूर्ति मत में त्रिवृत्त लिखा जाता है और पूजा भी की जाती है । यह सामान्य विधान है ।

'सौन्दर्यलहरी' में भगवत्पाद शङ्कराचार्य ने तो त्रिवृत्त को श्रीचक्र का अङ्ग माना ही है । यथा—

> चतुर्भिः श्रीकण्ठैः शिवयुवतिभिः पञ्चभिरपि,
> प्रभिन्नाभिः शम्भोर्नवभिरपि मूलप्रकृतिभिः ।
> त्रयश्चत्वारिंशद्वसुदलकलाब्जत्रिवलय—
> त्रिरेखाभिः सार्द्धं तव चरणकोणाः परिणताः ॥११॥

इसमें 'त्रिवलय' का स्पष्ट उल्लेख हैं । लक्ष्मीधराचार्य ने अपनी टीका में 'मेखलात्रय' रूप शिवचक्र का स्मरण किया है । 'श्रीचक्रोद्धार-निरूपण' में ये त्रिवृत्त की परिगणना करते हैं । 'अष्टचक्रा नवद्वारा' इत्यादि श्रुतिवाक्य के व्याख्यान में भी १- अष्टकोण २-३-दशकोणद्वितय, ४- चतुर्दशकोण ५- अष्टपत्र, ६- षोडशपत्र, ७- त्रिवलय तथा ८- त्रिरेखात्मक चक्रों में त्रिवृत्त का संग्रह किया है ।

'नित्याषोडशिकार्णव', उसकी टीका 'ऋजुविमर्शिनी' तथा 'अर्थरत्नावली' में 'परिवेष' शब्द से इसका आख्यान हुआ है ।[1]

जहां-जहां 'नवावरण' एवं नवचक्र का कथन हुआ है, वहां विन्दु को 'चक्र'

१— 'सुभगोदय-वासना' में वृत्तत्रय को भगवती के तीन नेत्र मानकर स्तुति की गई है। यथा—

> सोमसूर्य-कृशान्वात्मतेजस्त्रितयरूपकम् ।
> नेत्रत्रयं भावयामि वृत्तत्रितयमञ्जसा ॥ ११ ॥

के रूप में न मानकर सिंहासन, प्रधानपीठ आदि माना है तथा 'वृत्तत्रय' को नौ की संख्या में समाविष्ट कर लिया है। बृहद्वडवानल-तन्त्र, यतिदण्डैश्वर्यविधान आदि अनेक ग्रन्थों में इसी प्रकार का निर्देश है । यथा—

नवावरणान्युक्तानि श्रीयन्त्राभ्यन्तरेऽपि च ।
बिन्दोर्न गणना तत्र तेष्वावरणकेषु च ॥
यतो बिन्दौ भवत्येव मूलदेवस्य संस्थितिः ।
सोऽप्यावरणरूपेण ततः परिणतो भवेत् ॥

इतना ही नहीं, स्वयं बिन्दु और उसमें भावित अन्य विन्दु, चतुष्कोण आदि सात आवरणों के मिलने से ही नौ आवरणों के साथ सोलह आवरण बनते हैं, यह भी वहां कहा गया है । नौ आवरणों के अतिरिक्त ये सात आवरण उत्तराम्नाय-स्वरूप माने गये हैं । यथा—

अस्मिन् बिन्दौ सुशोभन्ते सप्तान्यावरणान्यपि ।
त्रिकोणाद् भूपुरान्तान्यावरणानि नवैव हि ॥
इत्थं षोडशसंख्यानि भवन्त्यावरणान्यपि ॥ —यतिदण्डैश्वर्यविधान

वृत्तत्रय की पूजा से ऐश्वर्य-प्राप्ति होती हैं, ऐसा आगमों में कहा गया है । इसके आधार पर यह भी कहा जाता है कि प्राचीन काल में विरक्त सन्यासीगण जब यन्त्रपूजा करते थे तो उन्हें किसी प्रकार के ऐश्वर्य की अभिलाषा न होने से इसका प्रचार नहीं रहा और धीरे-धीरे पूजा-पद्धतियों में जैसे संहार-क्रम से की जाने वाली पूजा का ही संग्रह हुआ उसी प्रकार वृत्तत्रय की पूजा भी निकाल दी गई।

ऊपर जो मतत्रय या सम्प्रदाय त्रय की चर्चा हुई है उससे सम्बद्ध तर्क यह भी दिया जाता है कि पूर्णाभिषेक होने के पश्चात् अन्य सम्प्रदायों का दक्षिणामूर्ति-सम्प्रदाय में विलय हो जाने से सभी दक्षिणामूर्तिसम्प्रदाय के ही माने जाएगें । अतः वृत्तत्रय की पूजा होनी चाहिये । आदि ।

इस सम्बन्ध में यही उचित होगा कि 'अपने गुरूपदेश को ही इसमें सर्वोपरि मानें' ।

सृष्ट्यादिक्रम की दृष्टि से वृत्तत्रय की रेखाएं क्रमशः सृष्टि, स्थिति और संहार क्रम की द्योतक हैं । प्रचलित परम्परा में तीनों वृत्तों की रेखाएँ एकत्र ही लिखी जाती हैं जब कि अन्यत्र पृथक्-पृथक् तीन स्थानों पर लिखने का भी विधान है ।

□ श्रीयन्त्रस्थ चक्रों के द्वारा अन्यज्ञातव्य तत्त्व

श्रीयन्त्र में जिन १० चक्रों का स्मरण होता है, उनमें जिस प्रकार विभिन्न देवियों की स्थिति है, उसी प्रकार शारीरिक तत्त्वों का भी निवास है। यह प्रस्तुत तालिका द्वारा ज्ञातव्य है—

१. सर्वानन्दमयबैन्दव चक्र :—

सर्वचैतन्य एवं सर्वसाक्षी ईश्वर।

२. सर्वसिद्धिप्रद त्रिकोण चक्र :—

प्रकृतितत्त्व, महत्तत्त्व, अहङ्कारतत्त्व। अग्नितत्त्व, सोमतत्त्व, सूर्यतत्त्व ।

३. सर्वरोगहराष्टार चक्र :—

शीत, उष्ण, सुख, दुःख, इच्छा, सत्त्व, रज, तम, चिति, चित्, चैतन्य, चेतना, इन्द्रिय, कर्म, जीव, कला, सूक्ष्म देह ।

४. सर्वरक्षाकरान्तर्दशार चक्र :—

रेचक, पाचक, शोषक, दाहक, प्लावक, क्षारक, उद्धारक, क्षोभक, जृम्भक, मोहक (हेतु, परहेतु, पञ्च ज्ञानेन्द्रिय)।

५. सर्वार्थसाधक बहिर्दशार चक्र :—

त्वचा, आंख, कान, नाक, जिह्वा (पञ्च ज्ञानेन्द्रिय), वाक्, हाथ, पैर, पायु, उपस्थ, (पांच कर्मेन्द्रिय)।

६. सर्वसौभाग्यदायक चतुर्दशार चक्र :—

अलंबुसी, कुहू, विश्वदरी, वारणा, हस्तिजिह्वा, यशोवती, पयस्विनी, गान्धारी पूषा, शंखिनी, सरस्वती, इडा, पिङ्गला, सुषुम्णा (मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, चेतना, चैतन्य, उच्छ्वास, निःश्वास, इच्छा, ज्ञान, क्रिया, परा, लय, शून्य)।

७. सर्वसंक्षोभणाष्टदल चक्र :—

वचन, आदान, गमन, विसर्ग, आनन्द, हान, उपादान, उपेक्षा (अव्यक्ततत्त्व, महत्तत्त्व, अहंकार तत्त्व, शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध)।

८. सर्वाशापरिपूरक षोडशदल चक्र :—

मन, बुद्धि, अहंकार, शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध, चित्त, धैर्य, स्मृति, नाम, वार्धक्य, सूक्ष्म शरीर, जीवन और स्थूल शरीर, मन, दस इन्द्रिय, पञ्च महाभूत।

९. त्रैवर्गसाधनकर वृत्तत्रय चक्र :—

बालावस्था, यौवनावस्था, वृद्धावस्था, जाग्रदवस्था, स्वप्नावस्था, सुषुप्त्य-वस्था, तुर्यावस्था, तुरीयातीतावस्था, कामावस्था, क्रोधावस्था, भोजनावस्था, गमनावस्था इत्यादि २८ अवस्थारूप ।

१०. त्रैलोक्यमोहन भूपुर चक्र :—

१ संक्षोभण, विद्रावण, आकर्षण, वशीकरण, उन्मादन, महाङ्कुश, खेचर, बीज, योनि, त्रिखण्डा (१०) ।

२ काम, क्रोध, लोभ, मद, मात्सर्य, पाप, पुण्य (८) ।

३ अणिमा, लघिमा, गरिमा, महिमा, ईशित्व, वशित्व, प्राकाम्य, भुक्ति, प्राप्ति, सर्वकाम (१०) ।

४ ओज, रस, असृक्, मांस, मेद, अस्थि, स्नायु, मज्जा, शुक्र, रोम (१०) ।

५ सोना, चांदी, तांबा, लोहा, रांगा, पीतल, कांसा, सीसा, (८) ।

६ हीरा, मोती, पन्ना, नीलम, पुष्पराग, गोमेद, लसुनी, मूंगा, माणिक, पारसमणि(१०) ।

७ पीठ, ग्रह, राशि, नक्षत्र इत्यादि श्रीयन्त्र की उत्पत्ति के कारणीभूत अक्षर द्वारा मानव देह में हैं ।

श्रीयन्त्र में अक्षरों का वर्णन :—

१ बिन्दु=ॐ ।

२ त्रिकोण =वाग्बीज+कामबीज+शक्ति बीज ।

३ अष्टार =पँ+फँ+बँ+भँ+मँ+शँ+षँ+सँ ।

४ अन्तर्दशार=तँ+थँ+दँ+धँ+नँ+टँ+ठँ+डँ+ढँ+णँ ।

५ बहिर्दशार=चँ+छँ+जँ+झँ+ञँ+कँ+खँ+गँ+घँ+ङँ ।

६ चतुर्दशार=अँ+आँ+इँ+ईँ+उँ+ऊँ+ऋँ+ॠँ+लृँ+ॡँ+एँ+ऐँ+ओँ+औँ ।

७ अष्टदल=अँ+कँ+चँ+टँ+तँ+पँ+यँ+शँ ।

८ षोडशदल=अ+आ+इ+ई+उ+ऊ+ऋ+ॠ+लृ+ॡ+ए+ऐ+ओ+औ+अं+अः

९ वृत्तत्रय=श्रीप्रसाद बीज+लँ+क्षँ ।

१० भूपुर -पराप्रसाद बीज+हँ+क्षँ ।

'खड्गमाला' के सम्बन्ध में ज्ञातव्य

□ उत्पत्ति, तात्पर्य एवं महिमा

भगवत्पाद श्रीमदाद्यशङ्कराचार्य ने 'सौन्दर्य-लहरी' में भगवती त्रिपुरसुन्दरी की स्तुति करते हुए एक पद्य में कहा है—

स्वदेहोद्भूताभिर्घृणिभिरणिमाद्याभिरभितो,
निषेव्ये नित्ये त्वामहमिति सदा भावयति यः ।
किमाश्चर्यं तस्य त्रिनयनसमृद्धिं तृणयतो,
महासंवर्ताग्निर्विरचयति नीराजनविधिम् ॥३०॥

इसके अनुसार "भगवती के चरण-युगल से निःसृत दिव्य तेजःकिरणों तथा अणिमादि शक्तियों से आवृत ऐसे दिव्यस्वरूप की जो साधक तादात्म्यभावना करता है, अपने अस्तित्व को श्रीचरणों में लीन कर देने की भावना से चिन्तन करता है और भगवान् त्रिलोचन की समृद्धि को भी तुच्छ मानता है, उसकी महाप्रलयग्नि यदि आरती उतारती है तो इसमें आश्चर्य ही क्या है ? अर्थात् ऐसी अभेद-भावना से आपका सारूप्य प्राप्त किये हुए साधक का प्रलयानल भी कुछ नहीं बिगाड़ सकता" ।

इस पद्य में दर्शित श्रीयन्त्र से उद्भूत अणिमादि सिद्धि, ब्राह्म्यादि मातृका, सर्वसंक्षोभिण्यादि मुद्रा एव अन्य आवरणदेवताओं की पूजा का महत्त्व संकेतित है । परममाहेश्वराचार्य ने इस पद्य को 'सौभाग्यहृदय' नामक पञ्चदशमालामन्त्रमण्डल' का 'ध्यानश्लोक' कहा है । इसी के आधार पर डिण्डिम-भाष्य' में 'पञ्चदशाक्षर-महामन्त्र' के एक-एक वर्ण से उद्भूत 'पञ्चदशमाला'ओं के स्वरूप को 'ललिता-परिशिष्ट' महातन्त्र के अनुसार दिखलाया है । सौन्दर्यलहरी के अन्य टीकाकारों ने भी उपर्युक्त पद्य की व्याख्या में ऐसे ही संकेत दिये हैं ।

इस संकेत से यह स्पष्ट होता है कि 'माला-मन्त्र' को ही 'खड्गमाला' कहा गया है । यहां प्रयुक्त 'खड्ग' शब्द से तात्पर्य यह है कि जैसे सिद्ध एवं साधक द्वारा साधित खड्ग' समरभूमि —संकटकाल में तत्काल सहायता करता है, उसी प्रकार यह मालामन्त्र भी सिद्धि प्रदान करता है' । कहा भी गया है—

तादृशं खड्गमाप्नोति येन हस्तस्थितेन वै ।
अष्टादशमहाद्वीपसम्राड् भोक्ता भविष्यति ॥

प्राचीनकाल में राजा लोग किसी महायुद्ध में जव जाते थे तो उससे पूर्व अपने खड्ग को ऐसे ही मन्त्र-विधानों से सिद्ध कर लेते थे । उसका परिणाम यह होता था कि उसके द्वारा किया गया प्रहार अमोघ होता था एवं उनकी निः-

सन्देह विजय होती थी। ऐसी ही सिद्धि देने के कारण इस मालामन्त्र को 'खड्ग' नाम से सम्बोधित किया गया है।

'उमामहेश्वरसंवाद' के रूप में इसके लिये स्वयं पार्वती ने निवेदन किया है कि—

भगवन् देवदेवेश सर्वज्ञ करुणानिधे।
शुद्धशक्तिमहातन्त्रं ब्रूहि मे सकलेष्टदम्॥

और इसी के उत्तर में 'खड्गमाला' का कथन हुआ है। वहीं इसके महत्त्व एवं प्रकारों का निर्देश भी बड़े विस्तार से दिया है। जिसमें—

यस्य स्मरणमात्रेण चक्रपूजा-फलं लभेत्।

तथा— एषा विद्या महाविद्या समयाचारवर्तिनी।
अतिवीर्यतरा विद्या सूर्यकोटिसमप्रभा॥
कुलाङ्गनाकुलं सर्वं मदीयं परमेश्वरि।

और— नवावरणदेवीनां ललिताया महौजसः।
एकत्र गणनारूपो मन्त्रो मन्त्रार्थगोचरः॥[1]
सर्वागमरहस्यार्थस्मरणात् पापनाशिनी।
ललिताया महेशान्या मालाविद्या महीयसी॥
नरवश्यं नरेन्द्राणां वश्यं नारीवशङ्करम्।
अणिमादिगणैश्वर्यरञ्जनं पापभञ्जनम्॥
तत्तदावरणस्थायिदेवतामन्त्रपञ्जरम्।
मालामन्त्रमयं गुह्यं परं धाम प्रकीर्त्यते॥ इत्यादि॥

इनसे यह सिद्ध होता है कि यह 'समयाचारवर्तिनी महाविद्या' अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है, इसके स्मरण से चक्रपूजा का फल प्राप्त होता है और नवावरणदेवियों का एकत्र गणना-रूप मन्त्र होने से यह माला-विद्या मन्त्र-पञ्जररूप अत्यन्त गुह्य है[2]। अधिक क्या कहा जाए? इसके नित्यजप से साधक परमपुण्यात्मा बनता है और उसके तेजस्वी देह को देखकर भूत-प्रेतादि भी त्रस्त होते हैं—

सप्ताष्टमालिकाजापी नित्यं पुण्यमयाकृतिः।
ज्वलन्नग्निरिव त्रस्तैर्वीक्ष्यते भूत-पूतनैः॥

१- एकावर्तनमात्रेत्र वेदवेदाङ्गगोचरः। इति पाठान्तरम्।
२- सौन्दर्यलहरी के 'डिण्डिम भाष्य' तथा 'देवीपूजा-कल्प' 'पञ्चदश-खड्गमाला-स्तोत्र' आदि ग्रन्थों में इस सम्बन्ध में पूर्वभाग तथा अन्त्यभाग का पूरा अंश पठनीय है।

प्रस्तुत खड्गमाला के सम्बन्ध में विशेष स्मरणीय

आजकल सभी उपासना-सम्बन्धी शास्त्रीय परम्पराएं अस्त होती जा रही हैं । प्राचीन ग्रन्थों की प्राप्ति का अभाव, गुरु-परम्परा के प्रति उदासीनता तथा तीव्र जिज्ञासा की न्यूनता के साथ ही योग्य पथ-प्रदर्शकों की कमी के कारण शनैः शनैः शैथिल्य भी व्याप्त हो रहा है ।

भारत की ऐसी विभिन्न उपासना-पद्धतियों में 'श्रीचक्रराज' की उपासना और उससे सम्बद्ध दीक्षा-पद्धतियों की भी परम्परा लुप्त न हो, इस दृष्टि से यहां प्रस्तुत की गई 'खड्गमाला' में 'बाला' की दीक्षा से आरम्भ कर 'महामेधा–साम्राज्य' दीक्षा तक के उपासकों के लिए अर्चना-क्रम में आने वाले देवताओं के सम्बुद्ध्यन्त नामों का संग्रह क्रमशः दिया गया है । इसके द्वारा पूजा करनेवाले साधक अधो लिखित नियमों का अवलम्बन करें —

१- 'बाला' तक की दीक्षा प्राप्त साधक 'दस आवरण' तक के नामों से अर्चना करें । इनमें 'पञ्च-पञ्चिका' और 'पञ्चसिंहासनों' की पूजा न करें ।

२- 'पञ्चदशी' तक की दीक्षाप्राप्त साधक (पञ्चसिंहासन पूजा छोड़कर) पञ्च-पञ्चिका सहित दशावरणात्मक अर्चना करें ।

३- 'महाषोडशी' तक की दीक्षावाले पञ्च-पञ्चिका एवं पञ्च-सिंहासन-पूजा सहित 'द्वादशावरणात्मक, पूजा करें ।

४- 'सप्तदशी' 'मेधा-दीक्षा' प्राप्त और 'अष्टादशी'-'महामेधा-दीक्षा' प्राप्त 'पञ्चदशावरण' तक पूजा करें ।

५- 'महासाम्राज्य-मेधादीक्षा' प्राप्त 'समया-विद्या तक यजन करें ।

६- 'निर्वाण-विद्या-दीक्षा-प्राप्त 'षोडश आवरण' तक यजन करें ।

इसमें 'दशकूटात्मिका अष्टोत्तरशतभुजा महानिर्वाणत्रिपुर-सुन्दरी' की पूजा होती है। यह षोडशमुखी है । इसका स्वरूप 'ज्योतिर्वक्त्र, में कराली के चिन्तन से उत्तराम्नाय और ऊर्ध्वाम्नाय का मिलन होता है और इन दोनों (गुह्यकाली ५४ भुजा और महा-त्रिपुरसुन्दरी ५४ भुजा) के मिलन से 'अष्टोत्तरशतभुजा निर्वाण महात्रिपुरसुन्दरी' बन जाती है। ऐसा आदेश है ।

प्रस्तुत 'खड्गमाला' का विस्तृत परिचय तथा यन्त्रगत पूजास्थान-निर्देश

पूर्वोक्त 'खड्गमाला' की अपेक्षा प्रस्तुत 'खड्गमाला' का अपना स्वतन्त्र महत्त्व कितना अधिक है, यह हमने पहले प्रतिपादित कर दिया है। अब हम इस खड्गमाला में संगृहीत नामावली द्वारा, श्रीन्यत्रराज में अर्चन करने के स्थानों का तथा अन्यान्य आवश्यक ज्ञातव्य विषयों का विस्तृत परिचय दे रहे हैं —

१- सृष्टिक्रम के अनुसार यहां सर्वप्रथम ६ नामों से षडङ्गार्चन का विधान हुआ हैं, जो 'सकलीकरण' के रूप में है। इसमें हृदय आदि छह अंगों के नामसहित भगवती का स्मरण है।[1] यह पूजा यन्त्र के मध्य में विन्दु पर विराजमान देवी के अग्रभाग में तथा विन्दु के आसपास आग्नेय, ईशान, नैर्ऋत्य एवं वायुकोणों में होती है।[2]

२- इसके पश्चात् समस्त आम्नायों के अधिष्ठाता 'साम्बसदाशिव' तथा छह आम्नायों के देवों का स्मरण है। यह पूजा मध्यविन्दु तथा क्रमशः — पश्चिम, उत्तर, पूर्व, दक्षिण, अधः और ऊर्ध्व दिग्भागों में होती है।

३- 'रति, प्रीति' आदि सोलह 'परापरयोगिनियां' हैं। इनकी पूजा विन्दुचक्र में की जाती है। ये रक्तवर्णा एवं पाशाङ्कुशधनुर्बाणधरा हैं।

४- त्रिपुरभैरवी चक्रनायिका हैं। अतः इनकी पूजा विन्दु के मध्य में और वहीं आम्नायनायिका 'अघोरकुब्जिका' की पूजा की जाती है। इन के साथ ही 'सिद्धि' दक्षभाग में, 'मुद्रा' वाम भाग में तथा 'दर्शन' अग्रभाग में पूजित होते हैं। चक्रस्वामिनी और योगिनी की पूजा पुनः विन्दु के मध्य में होती है।

इस प्रकार बिन्दुरूप 'सर्वानन्दमय-चक्र' में इन ३६ देवताओं की पूजा होती है।

५- त्रिकोण के बाहर तथा अष्टकोण के अन्दर के भाग में १५ नित्यादेवियों का 'कामेश्वरी' से 'चित्रा' तक स्मरण करते हुए पूजा का विधान है। इन नित्याओं में कामेश्वरी

१- ये ही षडङ्गयुवतियां कहलाती हैं। अतः पूजा में 'हृदयदेव्यम्बां पूजयामि' ऐसा पाठ भी दिया गया है (देवीपूजाकल्प पृ० १३१)

२- यन्त्रराज को अधस्त्रिकोण के रूप में रखकर उसके ऊपरी भाग को पूर्व, नीचे का भाग पश्चिम तथा दक्षिण भाग में दक्षिण दिशा और वामभाग में उत्तर दिशा माननी चाहिये। इसी के अनुसार आग्नेयादि कोणों की भावना भी करनी चाहिये।

आकाशतत्त्वाधिष्ठात्री, भगमालिनी तथा नित्यक्लिन्ना वायुतत्त्वाधिष्ठात्री, भेरुण्डादि तीन अग्नितत्त्वाधिष्ठात्री, शिवदूत्यादि चार जलतत्त्वाधिष्ठात्री और नीलपताकादि पांच भूतत्त्वाधिष्ठात्री देवियां हैं। इनके पश्चात् 'महानित्या ललिता', जिस तिथि की पूजा कर रहे हों, उस दिन की 'तिथि-नित्या' एवं उसी दिन की 'दिननित्या' का नाम ग्रहण करके विन्दु के निकट त्रिकोण के मध्य में पूजा होती है[1]। नित्याओं के पूजन का क्रम अधःकोण से आरम्भ होकर वामावर्त से ५-५-५ तीनों रेखाओं में पूर्ण होता है। अन्यत्र सप्तदशीनित्या और अष्टादशीनित्या की पूजा होती है। यह नित्याओं की पूजा ५४ वें नाम तक पूर्ण होती है।

६- इसके पश्चात् 'गुरुमण्डलार्चन' का क्रम है। जिसमें सर्वप्रथम परौघ की पूजा है। जिसमें पहले श्रीविद्यानन्दनाथात्मक चर्यानन्दनाथ की पूजा विन्दु में, मूलत्रिकोण चक्रगत वामकोण से आरम्भ कर पूर्वरेखा में उड्डीशानन्दनाथादि ४, दक्षिण रेखा में षष्ठीशानन्दनाथादि ४ तथा अपने अग्रकोण से प्रारम्भ करके वामरेखा में मित्रेशानन्दनाथादि ४ की पूजा होती है।

७- तदनन्तर नाद-प्रकृतिक, गुणत्रय प्रधान, त्रिशक्तिरूप, रेखात्रयात्मक, वन्धूक पुष्प के समान वर्णवाले त्रिकोण के अग्रकोण में विन्दुदेवी महाकामेश्वरी कामगिरि पीठ पर, महावज्रेश्वरी जालन्धर पीठ पर त्रिकोण के दक्षकोण में, महाभगमालिनी पूर्णगिरिपीठ पर उसी के वामकोण में तथा महात्रिपुरसुन्दरी महोड्ड्याणपीठ पर त्रिकोणगत मध्यबिन्दु में पूजित होती हैं। इसके अनन्तर चक्राधिष्ठात्री अतिरहस्ययोगिनी की पूजा भी अग्रकोण के अन्तर्भाग में करें।

८- तत्पश्चात् शक्ति और शिव के (उभयात्मक) आयुधचतुष्टय की पूजा है। यह पूजा त्रिकोण के वाहर चतुष्कोण अर्थात् वाम, दक्षिण और अग्रकोण के वाहर पूरी रेखाओं के साथ ऊपर की रेखा से युक्त चतुष्कोण की भावना करके क्रमशः अग्रभाग पश्चिम में बाणयुगल, उत्तर में धनुषयुगल, पूर्व में पाशयुगल तथा दक्षिण में अंकुशयुगल, इस प्रकार होती है।

यहां यह विशेष ज्ञातव्य है कि —

ये आयुध सृष्टिक्रम में कामेश्वरी और कामेश्वर के समान रहते हैं, अतः यहां वैसा ही लिखा गया है। किन्तु स्थितिक्रम में भगवती के आयुध वदल जाएंगे। यथा — १- पुस्तक, २- अक्षमाला, ३- पाश और ४- अंकुश। जवकि इस क्रम में कामेश्वर के आयुध पूर्ववत् रहेंगे। अतः इसमें छह आयुधों की पूजा होगी। इसी प्रकार संहार क्रम में भगवती द्विभुजा होंगी अतः उनके दो आयुध १- गुटिका और २- पान-पात्र रहेंगे। जवकि

१- ये नाम तान्त्रिक-पञ्चाङ्ग के द्वारा जानकर जोड़े जा सकते हैं।

कामेश्वर के आयुध वदलकर क्रमशः १- पाश, २- कपाल, ३- खड्ग और ४- खेटक रहेंगे। विशेष गुरुमुख से जानें।

इस पूजा के बाद मूलदेवता सृष्टि कामेश्वरी और सृष्टि कामेश्वर की पूजा मध्य विन्दु में करें।

अन्यत्र पूजा-पद्धतियों में परौघ पूजा के पश्चात् दिव्यौघादि की पूजाओं का उल्लेख है।

६- तदनन्तर, त्रिकोण की पूर्वरेखा के ऊपर दक्षिण एवं उत्तर की ओर तीन आयत-लम्बी रेखाओं की भावना करके दक्षिण की ओर से नीचे की रेखा से ऊपर की ओर क्रमशः दिव्यौघ, सिद्धौघ तथा मानवौघ की पूजा का विधान है। इनमें नाम क्रमाङ्क ७९ से श्रीपरप्रकाशानन्दनाथादि—श्रीकामेश्वर्यम्बान्त ७ दिव्यौघ, श्रीभोगानन्दनाथादि-श्री-सहजानन्दनाथान्त ४ सिद्धौघ एवं श्रीगगनानन्दनाथादि—श्रीअमृतानन्दनाथान्त १२ मानवौघरूप ओघत्रय का यजन होता है। यह नाम संख्या १०१ तक का क्रम है।[1]

विशेष- मानवौघ के 'प्रियानन्दनाथ' के पश्चात् षोडशी के उपासकों के लिये श्री-विद्यार्णव ग्रन्थ के अनुसार श्रीषोडशीगुरु ओघत्रय के अन्य नामों से पूजा का भी निर्देश प्राप्त होता है। वे नाम इस प्रकार हैं —

(१) दिव्यौघ —

१- व्योमातीताम्बा	३- व्योमगाम्बा
२- व्योमेश्यम्बा	४- व्योमचारिण्यम्बा

५- व्योमस्थाम्बा।

१- जम्मू (काश्मीर) स्थित रघुनाथ मन्दिर के पुस्तकालय तथा मण्डीनरेश राजा सर योगेन्द्रसेन के चित्रभण्डार में प्राप्त 'आम्नायसप्तविंशतिरहस्य' के अनुसार यह ओघत्रय दक्षिणामूर्तिसम्प्रदायानुगत कादिविद्योपासकों का है किन्तु उसमें सहजानन्दनाथादि चार नाम हैं। पूज्य स्वामी श्रीकरपात्री जी महाराज ने 'श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-वरिवस्या' में श्रीषोडशीगुरुपरम्परा, हादि पञ्चदशी उपासकगुरुपरम्परा, मन्वादिविद्यागुरुपरम्परा तथा अज्ञात-गुरुपरम्परा के गुरुक्रम का भी संग्रह पूजा-विधान में दिया है।

दतिया के परमपूज्य राष्ट्रगुरु स्वामीजी महाराज ने अपने ग्रन्थ 'सप्तविंशति-रहस्य' में श्रीकामराजपरम्परा में दिव्यौघ के उक्त नामों में से कुछ परिवर्तन के साथ केवल पांच नामों को ही बतलाया है। कुछ पुस्तकों में अम्बान्तनामों के साथ आनन्दनाथ पद जोड़कर उन्हें भी पुंरूप में ही माना है। दतिया से प्रकाशित 'श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीपूजा-पद्धति' में परौघ गुरुमण्डल की पूजा निर्दिष्ट नहीं है।

(२) सिद्धौघ —

१- उन्मनाकाशानन्दनाथ
२- समनाकाशानन्दनाथ
३- व्यापककाशानन्दनाथ
५- शक्त्याकाशानन्दनाथ
५- ध्वन्याकाशानन्दनाथ
६- ध्वनिमात्राकाशानन्दनाथ
७- अनाहताकाशानन्दनाथ
८- विन्द्वाकाशानन्दनाथ
९- इन्द्वाकाशानन्दनाथ ।

(३) मानवौघ —

१- परमात्मानन्दनाथ
२- शाम्भवानन्दनाथ
३- चिन्मुद्रानन्दनाथ
४- वाग्भवानन्दनाथ
४- लीलानन्दनाथ
६- सम्भ्रमानन्दनाथ
७- चिदानन्दनाथ
८- प्रसन्नानन्दनाथ
९- विश्वानन्दनाथ ।

इन नामों से भी गुरूपदेशानुसार पूर्वक्रम से ही पूर्वोक्त स्थानों पर पूजा की जा सकती है ।[1] किन्तु 'ज्ञानार्णव' के अनुसार षोडशी-उपासना में भी पूर्वोक्त कादिविद्योपासक-ओघत्रय की परम्परा को ही माना है । अतः यहां भी वही क्रम दिया है ।

१०- प्रस्तुत खड्गमाला में विशेष रूप से नाम क्रमाङ्क १०२ श्रीकपिलानन्दनाथ से १२९ श्रीसुरेश्वराचार्य तक २८ नाम 'गुरुसन्तति' के हैं । इनमें २१ महर्षि तथा भगवत्पाद श्रीशङ्कराचार्य के गुरु, स्वयं तथा शिष्यचतुष्टय का नामस्मरण है । अन्यत्र पूजाग्रन्थों की अपेक्षा यहां ये नाम विशिष्ट महत्त्वपूर्ण संगृहीत हैं । इन्हीं के साथ १- परात्परगुरु, २- परमेष्ठिगुरु एवं ३- परमगुरु की तीनों रेखाओं में और समस्तगुरुमण्डलविलीन-दक्षिणामूर्ति की विन्दु में पूजा होगी । इनके पश्चात् आचार्यादि आत्मपादुकान्त ८ नामों से भी त्रिकोण के ऊपर भावित तीन रेखाओं में पूजा का निर्देश है ।

यहां तक पूजन करके चक्रनायिका त्रिपुराम्बा (मध्य में), आम्नायनायिका

१- 'आम्नायसप्तविंशतिकारहस्य' के अनुसार श्रीविद्यार्णवोक्त षोडश्युपासना में वर्णित ओघत्रय को ही रूपान्तर से निर्दिष्ट कर — श्रीशिवानन्दनाथ पराशक्त्यम्बादि-सहित श्रीविष्णुदेवानन्दनाथ तक ओघत्रय के २३ नाम, हादिविद्योपासकों के २१ नाम, मन्वादिपरम्परा के १९ नाम तथा परोपासकों के (परशुरामकल्पसूत्र, अष्टमखण्ड, पराक्रमसूत्र २६ के अनुसार) १४ नाम दिये हैं । सप्तविंशतिकारहस्य में इनके अतिरिक्त ऊर्ध्वाम्नाय में षोडश्युपासकों के लिये कादिविद्यागुरुमण्डल, मानवौघ शुद्धपरम्परा (ओघत्रय) तथा लोपामुद्रा परम्परा (ओघत्रय) का विशेष निर्देश है , जो वहीं द्रष्टव्य है ।

(अग्रकोण के अन्तर्भाग में), सिद्धि (दक्षभाग), मुद्रा (वामभाग), दर्शन (अग्रभाग) एवं चक्रस्वामिनी और योगिनी की मध्य में पूजा की जाती है।

इस प्रकार 'त्रिकोणात्मक सर्वसिद्धिप्रदचक्र' के बाह्यभाग तथा 'त्रिकोणरेखा, बिन्दु एवं तच्चक्रोर्ध्वभावित रेखात्रय' में ११२ नामों से, नित्या, परौघ, बिन्दु-त्रिकोण-पीठ देवियां, चक्राधिष्ठात्री, आयुध, मूल देवता, दिव्यौघ, सिद्धौघ, मानवौघ, गुरुसन्तति, गुरुत्रय, आचार्य, आत्मपादुका, चक्रनायिका, आम्नायनायिका, सिद्धि, मुद्रा, दर्शन, चक्रस्वामिनी, एवं योगिनी की पूजा का क्रम दिखलाया गया है। यहां तक १४८ नामों का परिचय है।

११- इसके पश्चात् 'अष्टार-चक्र' में वाशिन्यादि-वाग्देवता की पूजा है। षट्कोण तथा त्रिकोण से निर्मित यह चक्र ककारप्रकृतिक, अष्टमूर्त्यात्मक, कामेश्वरस्वरूप एवं पद्मराग के समान रुचिर है। इसमें देवी के अग्रकोण से आरम्भकर वामावर्त से अष्टकोण-रूप त्रिकोणों में आठ वाग्देवताओं की पूजा की जाती है। तदनन्तर चक्रनायिका और सर्व आम्नायनायिका की पूजा मध्य में होगी। यहीं उन्मनी आदि ४ आम्नायदेवियों की चारों दिशाओं में तथा ऊर्ध्व एवं अनुत्तराम्नाय देवियों की पूजा मध्यमें निर्दिष्ट है। यह प्रचलित पूजा से नवीन क्रम है। पश्चात् दक्षभाग में सिद्धि, वामभाग में मुद्रा, अग्रभागमें दर्शन एवं पुनः मध्य में चक्रस्वामिनी तथा रहस्ययोगिनी की पूजा का विधान वर्णित है।

यह क्रम 'सर्वरोगहरचक्र' में २१ नामों द्वारा पूजन से नाम संख्या १६९ तक का है।

उपर्युक्त बिन्दु, त्रिकोण तथा अष्टकोणरूप तीन चक्रों की समष्टि मानकर प्रथम समष्टिपूजा का सूचन किया गया है। यहां सृष्टिलयात्मक, पश्चिमाम्नायेशी अघोरकुब्जिका-विलीन सृष्टिलय महाकामेश्वरी स-भैरव शिवादिस्वगुरुपूर्वक पश्चिमाम्नायात्मक शक्तिकूट-देवता की श्रीपादुका का अर्चन होता है।

१२- प्रस्तुत 'खड्गमाला' के १७० संख्यक नाम से १७९ संख्यक नाम तक रेफ-प्रकृतिक, दश कलात्मक, वैश्वानर (अग्नि) स्वरूप, जपाकुसुमवर्णमय 'अन्तर्दशार' में देवी के अग्रकोण से आरम्भ कर वामावर्तविधि से दस कोणों में सर्वज्ञादि दस निगर्भयोगिनियों की पूजा होती है।

तदनन्तर चक्रनायिका त्रिपुरमालिनी और आम्नायनायिका सिद्धलक्ष्मी की पूजा चक्र के मध्य में तथा वहीं अग्रभागमें षड्दर्शनों की समष्टि–पूजा करके दक्षभाग में सिद्धि, वामभाग में मुद्रा, अग्रकोण में चक्र के स्वतन्त्र दर्शन के रूप में 'सौरदर्शन' की पुनः पूजा की जानी चाहिये। और मध्य में चक्रस्वामिनी एवं योगिनी की पूजा करके नामसंख्या १९२

तक का क्रम पूर्ण करना चाहिये। यह 'सर्वरक्षाकर-चक्र' है

१३- इसके पश्चात् सृष्टिक्रमानुसार चक्र–पूजा में एकारप्रकृतिक, दशावतारात्मक, विष्णुस्वरूप, सिन्दूरवर्णमय 'बहिर्दशार' में देवी के अग्रकोण से आरम्भ कर वामावर्त-पद्धति से दस कोणों में सर्वसिद्धिप्रदादि दस कुलोत्तीर्णयोगिनियों की पूजा का विधान (१९३ संख्यक नाम से आरम्भ कर २०२ संख्यक नाम तक) पूर्ण करें।

तदनन्तर श्रीचक्रनायिका त्रिपुराश्री और आम्नायनायिका श्यामाकाली की पूजा, चक्र के मध्यगत कोण की रेखा पर श्रीविचारत्नाम्बा की तथा शेष चार की क्रमशः दक्षिणावर्तक्रम से वायव्य, ईशान, आग्नेय एवं नैऋत्य कोणों में पञ्चरत्नाम्बाओं की पूजा करें।

विशेष

अन्यत्र आवरण-पूजा क्रम में पञ्चपञ्चिकाओं की पूजा क्रमशः श्रीचक्र में बिन्दु-चक्र पर सिंहासनाकार से पीठभावना करके एक के ऊपर एक पांच चौकियों के मध्य एवं चारों कोणों में पूजा करने का निर्देश किया गया है, किन्तु यहां चक्रों के साथ प्रत्येक पञ्चिका की पूजा का पृथक् पृथक् विधान दिया गया है। यह क्रम 'श्रीविद्यार्णव' ग्रन्थ के अनुसार है।

तत्पश्चात् दक्षभाग में सिद्धि, वामभाग में मुद्रा, अग्रकोण में दर्शन, मध्य में चक्र-स्वामिनी और योगिनी की पूजा करनी चाहिये। यह क्रम २१४ संख्यक नाम तक 'सर्वार्थसाधक-चक्र' में पूर्ण होता है।

१४- क्रमाङ्क २१५ से २२८ तक के नामों से ईकारप्रकृतिक चतुर्दशभवनात्मक, महामायारूप, दाडिमपुष्पवर्णमय, 'चतुर्दशार' में देवी के अग्रकोण से आरम्भ कर वामावर्त से चौदह कोणों में सम्प्रदाय-योगिनियों की पूजा की जाती है। तत्पश्चात् चक्रनायिका और आम्नायनायिका की मध्य में पूजा करके पञ्चकल्पलताम्बाओं की पूजा क्रमशः मध्य, कोणरेखा एवं वायव्यादि कोणों में दक्षिणावर्त क्रम से सम्पादित होगी। तब दक्ष में सिद्धि, वाम में मुद्रा, अग्रकोग में दर्शन और मध्य में चक्र-स्वामिनी तथा योगिनी की पूजा होती है।

यहां २४० नामों तक 'सर्वसौभाग्यदायक-चक्र' का पूजनक्रम पूर्ण होता है।

इसके अनन्तर यहां 'खड्गमाला' में द्वितीय 'समष्टि-पूजन' का उल्लेख है, जिसमें उपर्युक्त १- अन्तर्दशार, २- बहिर्दशार तथा ३- चतुर्दशार चक्रों की समष्टि मानकर पूजा करने का विधान है। यह सृष्टि-स्थिति-निलयात्मक, दक्षिणाम्नायेशी, श्यामादक्षिणकाली-विलीन, सृष्टिस्थितिमहाकामेश्वरी, सभैरव-शिवादिस्वगुरुपूर्वक, दक्षिणाम्नायात्मक वाग्भव-

कूटदेवता की पादुका-पूजा की गई है।

१५- क्रमाङ्क २४१ के नाम से २४८ तक के नामों द्वारा हकारप्रकृतिक, अष्टमूर्त्यात्मक, शिवरूप, जपाकुसुमसमानवर्णवाले आठ पत्रों में श्रीदेवी के पृष्ठदल (ऊपर के मध्यभाग) से आरम्भ कर पूर्व, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर दिशाओं में तथा आग्नेयादि विदिशाओं के कोणों में क्रमशः अनङ्गकुसुमादि अनङ्गमाली तक गुप्ततरयोगियों की पूजा वर्णित है। तदनन्तर चक्रनायक त्रिपुरसुन्दर, आम्नायनायक भुवन की पूजा मध्य में एवं महामञ्च से सम्बद्ध २० भैरव, ५ सुन्दर तथा ५ प्रेतासनों की पूजा का क्रमिक निर्देश है जिसमें पूर्व दिशा के मध्यभाग से आरम्भ कर चैतन्यादि तीन भैरव, आग्नेयकोणस्थ अधोमुख मणिपूर तेजोऽधिपति रुद्र (प्रेतासन) त्रिपुरामञ्चदेवता, दक्षिण में अघोरादि पांच भैरव, कोणस्थ अधोमुख अनाहत वायव्याधिपति ईश्वर (प्रेतासन) त्रिपुरामञ्चदेवता, पश्चिम में षट्कूटादि पाच भैरव तथा कोणस्थ अधोमुख पृथिव्यधिपति ब्रह्मा (प्रेतासन) त्रिपुरामञ्चदेवता, उत्तर में भुवनेश्वरादि पांच भैरव एवं कोणस्थ अधोमुख स्वाधिष्ठान जलाधिपति विष्णु (प्रेतासन) त्रिपुरामञ्चदेवता, पूर्व में बालात्रिपुरसुन्दर भैरव और सम्पत्प्रदभैरव मध्यस्थ प्रेतासन के अधोभाग में पञ्चसुन्दर तथा मध्य में सदाशिव प्रेतासन के पूज्य देवों का नामस्मरण किया गया है।

इनकी पूजा इन्हीं निर्दिष्ट स्थानों पर होती है।[1] इन तीस देवताओं की पूजा के पश्चात् दक्ष में सिद्धि, वाम में मुद्रा (दोनों में पुंरूप), अग्रभाग में दर्शन और मध्य में चक्रस्वामी तथा गुप्ततरयोगी की पूजा होती है।

यहां नाम संख्या २८५ तक की पूजा का क्रम 'सर्वसंक्षोभण-चक्र' में पूर्ण होता है।

१६- इस के पश्चात् नाम क्रमाङ्क २८६ से ३०१ तक के नामों से 'सकारप्रकृतिक, षोडशकलात्मक, चन्द्रस्वरूप, श्वेतवर्ण, अमृतरसवर्षणपूर्ण, षोडशदलकमल' में देवी के अग्रवर्तीदल से आरम्भ कर वामावर्त क्रम से कामाकर्षिण्यादि शरीराकर्षणान्त सोलह गुप्तयोगियों की पूजा का संकेत है। तदनन्तर चक्रनायक 'त्रिपुरेश' तथा आम्नायनायक 'अन्नपूर्ण' की पूजा मध्य में करके पञ्च कोशाम्बाओं की पूर्ववत् मध्य कोणरेखा एवं कोण-चतुष्टय में पूजा वर्णित है। और दक्ष में सिद्धि, वाम में मुद्रा, अग्रभाग में दर्शन, तथा पुनः मध्य में चक्रस्वामी तथा गुप्तयोगी का पूजाहेतु नाम स्मरण हुआ है।

यहां नाम संख्या ३१३ तक 'सर्वाशापरिपूरक-चक्र' का पूजा-क्रम पूर्ण होता है।

१७- नाम क्रमाङ्क ३१४ से ३७४ तक सृष्टिक्रम से मायाप्रकृतिक, गुण-प्रकृति-

---

१- यहां यह क्रम दक्षिणावर्त से है कहीं कहीं वामावर्त का भी निर्देश है।
२- अन्यत्र पूजापद्धतियों में इन्हें कला कहा है किन्तु ये यहां योगी हैं। अतः पुरुष-रूप में योगी लिखा गया है।

वागात्मक, जलस्वरूप, कृष्ण, अरुण और श्वेतवर्ग त्रिरेखामय 'त्रिवृत्त' में वामावर्त क्रम से प्रथम रेखा में कामेश्वरादि १६ योगी[1], द्वितीय रेखा में अमृतादि १६ योगी तथा तृतीय रेखा में कालारात्रादि २९ योगियों का स्मरण करते हुए पूजा का निर्देश है। ये योगी क्रमशः स्वर्लोक, भुवर्लोक, एवं भूलोकवासी हैं। इसके पश्चात् चक्रनायक एवं आम्नायनायक की मध्य में पूजा करके पांच कामदुघाओं की क्रमशः मध्य और कोण-चतुष्टय में, दक्ष में सिद्धि, वाम में मुद्रा तथा अग्रभाग में दर्शन की पूजा होकर चक्रस्वामी तथा योगी की पूजा मध्य में होती है।

यहां नाम संख्या ३८६ तक 'त्रिवर्गसाधक-चक्र' का पूजाक्रम पूर्ण होता है।

१८- इसके अनन्तर नाम क्रमाङ्क ३८७ से ४१५ तक सृष्टिक्रम से लकार प्रकृतिक, पृथिव्यात्मक, कृष्ण,[2] अरुण, एवं श्वेतवर्ण, त्रिरेखामय चतुर्द्वार शोभित भूपुर-चतुरस्र में प्रवेश-पद्धति से पश्चिमादि द्वारचतुष्टय के दक्षिण भागों में, वाय्वादि कोणों में तथा पश्चिम-नैर्ऋत्य के मध्य और पूर्व-ईशान के मध्य में क्रमशः संक्षोभिण्यादि मुद्राओं, ब्राह्म्यादि अष्टमातृकाओं तथा अणिमादि दस सिद्धियों की पूजा का विधान है। यहां भूपुरचक्र के शिवात्मक होने से सभी की पुंरूप में पूजा उल्लिखित है। यथा —

सर्वसंक्षोभण से सर्वत्रिखण्ड तक की पूजा प्रथम कृष्णरेखा[1] में पश्चिम, उत्तर, पूर्व और दक्षिण द्वारों के दक्षिणभागों में, वायु, ईशान, आग्नेय तथा नैर्ऋत्य कोणों में, पश्चिम-नैर्ऋत्य के मध्य बाहर तथा पूर्व ईशान के मध्य अन्दर क्रमशः १० का नामस्मरण हुआ है। चतुरस्र की अरुणवर्णा मध्यरेखा में 'असिताङ्ग भैरव' सहित 'ब्राह्मी मातृका'[3] से 'संहार-भैरव' सहित 'महालक्ष्मी मातृका' तक पश्चिमादि पूर्वोक्त चार द्वारों के वामभागों में तथा वाय्वादि पूर्वदर्शित चार कोणों में पूजित होंगे। चतुरस्र की अन्तिम रेखा में भी प्रथम रेखा के समान चार द्वार, चार कोण तथा दोनों मध्यभागों में अणिमासिद्ध से प्राप्तिसिद्ध तक सिद्धों की पूजा का निर्देश है।

यहां विशेष यह है कि द्वितीय सिद्ध नाम में 'गरिमासिद्ध' का भी नाम स्मरण है, यह नाम अन्य पूजा-पद्धतियों में नहीं है।

१९- इसके पश्चात् मध्य बिन्दु में 'सर्वकामसिद्ध', पूर्व में तृतीय रेखा के अन्दर चक्रनायक, पूर्व में मध्य रेखा पर आम्नायनायक तथा पूर्व में प्रथम रेखा पर श्रीविद्यालक्ष्म, वाय्वादि

---

१ — यहां यह क्रम वामावर्त से है कहीं दक्षिणावर्त का भी निर्देश है

२ — अन्य पूजा पद्धतियों में यह पीतरेखा कथित है।

३ — यहां इन मातृकाओं को भैरव के साथ होने से स्त्रीरूप लिखा है। यदि ये स्वतन्त्र होंगी तो पुंरूप भी हो सकता है।

चार कोणों में दक्षिणावर्त से एकाक्षरी लक्ष्मादि चार लक्ष्म (पञ्चलक्ष्म्यम्वाओं के पुंरूपों) की पूजा होती है। तदनन्तर दक्षभाग में सिद्ध, वामभाग में मुद्रा, अग्रभाग में दर्शन तथा मध्य में चक्रस्वामी एवं योगी की पूजा से यह क्रम पूर्ण होता है।

२०- कच्छपादि आठ निधियों की पूजा भूपुर के बाहर पूर्वादि चार द्वार तथा चार कोणों में पूर्व से दक्षिणावर्त क्रम से पूजा होगी। चार द्वारों पर ही बाहर चार आम्नायों के नायक[1] देवों की पूजा, बाह्यकोणभागों में नैर्ऋत्य, आग्नेय, ईशान तथा वायव्य में तिरस्करण, वनदुर्गा, कामरति (युगल) और वसन्तप्रीति (युगल) की पूजा करके पूर्वादि दस दिशाओं में दस दिक्पालों के आयुध, दस दिक्पाल, उत्तर में भैरव, पश्चिम में सर्वयोगी, पूर्व में क्षेत्रपाल, दक्षिण में गणपति तथा भूपुर के चारों द्वारों पर पूर्वादिक्रम से वनदुर्गा, अघोर, सुदर्शन एवं शरभ की पूजा का विधान है।

यहां नाम क्रमाङ्क ४७० तक 'त्रैलोक्यमोहनचक्र' का पूजा क्रम पूर्ण होता है।

यहीं तृतीय 'समष्टि पूजा' होती है जिसमें उपर्युक्त अष्टदल, षोडशदल, त्रिवृत्त तथा भूपुर-चतुरस्र की समष्टि मानकर 'पूर्वाम्नायेशी, सृष्टिनिलया, सृष्टिसृष्टिभुवनेश्वरी-विलीन, सृष्टिसृष्टिमहाकामेश्वरी, सभैरवशिवादिस्वगुरुपर्यन्त-पूर्वाम्नायात्मक कामराज-कूटस्थ देवता की पादुकापूजा का विधान सम्पन्न होता है।

२१- इसके पश्चात् 'चतुर्दशार' और 'बहिर्दशार' इन दोनों के अन्तर्भागों से निर्मित प्रथम 'स्पन्दीचक्र'[2] में ३१ गायत्रीमन्त्रवर्णों की देवियों की पूजा होती है। तदनन्तर 'चतुर्दशार' और 'त्रिकोण' के अन्तर्भाग से निर्मित अन्तः स्पन्दीचक्र में तुरीयपाद के वर्णों की ९ देवियों की पूजा करके मध्य में चक्रनायिका, सर्वाम्नायनायिका, दक्ष में सिद्धि, वाम में मुद्रा और मध्य में पुनः स्पन्दीचक्राधिष्ठात्री एवं चक्रस्थयोगिनी की पूजा की जाती है।

२२ - तत्पश्चात् चतुर्दशार-विनिर्मित 'द्वितीय स्पन्दीचक्र' में कालिकादि दस महाविद्याओं की पूजा करके मध्य में दशमहाविद्यामयी महात्रिपुरसुन्दरी और आम्नायनायिकाओं की पूजा का क्रम निर्दिष्ट है। इनमें दो-दो आम्नाय की देवियां तथा एक-एक समष्टि की देवियां हैं। इनकी पूजा क्रमशः चार दिशा, चार विदिशा, ऊर्ध्व और अधोभाग की भावना करते हुए तत्तत् स्थानों पर होती है। बाद में इन सबकी महासमष्टि के रूप में आम्नायनायिका 'त्रिशक्ति चामुण्डा (सादिकूटात्मिका)' चार कोणदेवी तथा त्रिशक्ति से

---

१ — यहां मातृकाओं की पूजा भी हो सकती है क्योंकि यह भूपुर से बाहर की पूजा है।

२ - प्रथम और द्वितीय स्पन्दीचक्रों के स्थान चतुर्दशारादि चक्रों के कोणभागों के रिक्त स्थान माने जाते हैं। इन्हें गुरुमुख से समझना चाहिये।

मिलाकर उग्रचण्डा उपाम्नायसहिता महात्रिपुरसुन्दरी एवं चक्रनायिका वालासुन्दरी की बिन्दु में पूजा की जाती है। तदनन्तर दक्ष में सिद्धि, वाम में मुद्रा और मध्य में द्वितीय स्पन्दी-चक्राधिष्ठात्री एवं 'निगर्भरहस्ययोगिनी' की पूजा करनी चाहिये।

यहां नाम क्रमांक ५४७ तक का पूजा क्रम द्वादशावरणरूप सम्पन्न होता है।

२३ - विन्दुचक्रान्तर्गत त्रिविन्दुरूप महावैन्दवचक्र की भावना करके उसमें आम्नाय-नायिकासहित भैरवों की, तीन विद्येश्वरियों की ललिता, ऊर्ध्वाम्नायेश्वरी तथा महाषोडशी सहित भैरवों की पूजा होती है। तदनन्तर चक्रनायिका और आम्नायनायिका की मध्य में, दक्ष में सिद्धि, वाम में मुद्रा तथा अग्रभाग में चक्राधिष्ठात्री एवं योगिनी की पूजा सम्पन्न होती है।

यहां तक २६ देवताओं की पूजा होने से नामाङ्क ५७३ तक का विधान पूर्ण हो जाता है। यह पूजा महाविन्दु की रेखा की मोटाई, ऊंचाई, और गोलाई के क्रम से पूर्ण करने का विधान है।

इसके साथ ही यहां उपर्युक्त प्रथम एवं द्वितीय स्पन्दीचक्र तथा महावैन्दव-चक्र की समष्टि-भावना करके उत्तराम्नायेशी, अनाख्यानिलया, कामकलागुह्यकाली विलीन अनाख्या महात्रिपुरसुन्दरी भैरवसहित शिवादिस्वगुरुपूर्वक उत्तराम्नायात्मक अनाख्याकूट देवताओं की 'चतुर्थसमष्टि-पूजा' सम्पूर्ण होती है।

२४ - तदनन्तर विन्दु के ऊपरी भाग में प्रणव-ओङ्कार की भावना करके वेदत्रय-स्वरूपिणी, वेदाधिष्ठात्री (महानिर्वाणसुन्दरी की अङ्गदेवता) शक्तियां, ओङ्कार के पांच अङ्ग १- ऊर्ध्वशुण्ड, २- अधःशुण्ड, ३- मध्यशुण्ड एवं ४- चन्द्रकला में विद्या, अविद्यादि ४ की पूजा तथा ५- विन्दु में सृष्ट्यादि सुन्दरी-पञ्चक की पूजा होती है। मध्यविन्दु में ऊर्ध्वाम्नायमहात्रिपुरसुन्दरी की पूजा करके ओङ्कार में चार समयानित्या, मस्तिष्क में स्थित अङ्गुष्ठरूप पुरुष के शुक्लादि सप्तचरण, षडन्वयादि सप्त शाम्भव तथा कूटत्रय की अर्चना विहित है। यहीं चक्रनायिका एवं ऊर्ध्वाम्नायनायिका की पूजा करके पूर्ववत् सिद्धि, मुद्रा, चकाधिष्ठात्री तथा योगिनी की पूजा से क्रम पूर्ण किया जाता है।

यहां नाम क्रमाङ्क ६१६ तक विन्दूपरिविभावित 'परब्रह्मात्मक सामरस्यचक्र' की चतुर्दशावरणरूप पूजा सम्पन्न होती है।

२५- श्रीचक्रस्थ विन्दु में षट्कोण की विभावना करके उसमें अर्धनारीश्वर सहित महाशाम्भव का चिन्तन कर वहीं षट्कोण के मध्य में निर्वाण-भैरव-सहित-महात्रिपुर-सुन्दरी की पूजा और छह कोणों में ३६० रश्मियों के साथ नवात्मेश्वरादि छह देवों की अर्चना होती है। ये शक्तियां शक्तिसङ्गमतन्त्र के अनुसार क्रमशः अग्नि की ५६+५२

=१०८, सूर्य की ६२+५४=११६ तथा चन्द्र की ७२+६४=१३६ हैं। इन्हीं का सम्पूर्ण योग १०८+११६+१३६=३६० होता है। इनके पश्चात् षडाम्नाय की ६ निर्वाणविद्याएं विभिन्न बीजसहित, विभिन्न कूटात्मिका निर्वाणरूपा ५ **समयाविद्याएं** अघोरादि नवरत्नकुब्जिकाएं और कामादि नवरत्नसुन्दरियों की भी विन्दु में ही पूजा होती है। तत्पश्चात् वहीं ६ निर्वाणमहात्रिपुरसुन्दरी एवं सर्वाम्नायनायिका की पूजा करके दक्षभाग में सिद्धि, वामभाग में मुद्रा तथा मध्यमें चक्राधिष्ठात्री एवं योगिनी की पूजा का विधान है।

यहां नाम क्रमाङ्क ६१७ से ६६१ तक ४७ देवताओं की अर्चना का क्रम परब्रह्मात्मक-चक्र में पञ्चदशावरण के रूप में सम्पन्न होता है।

२६ - भूपुर के वहिर्भाग में 'सर्वाध्वशोधनचक्र' की भावना करके षडध्व ६, तत्त्वात्मा १, षट्शारीरचक्रयोगिनीसहित देव ६ तथा मध्य में चक्रनायिका एवं चक्रनायक की पूजा का क्रम निर्दिष्ट है। इसी के साथ दक्ष में सिद्धि और वाम में मुद्रा, अग्रभाग में सर्वदर्शनोत्तीर्णस्वरूपिणी तथा मध्य में सर्वाध्वशोधनचक्रनायिका एवं योगिनी की पूजा से यह क्रम पूर्ण होता है।

यहां नाम क्रमाङ्क ६६२ से ६८१ तक 'खड्गमाला' का पाठ पूर्ण हो जाता है।

इसके पश्चात् पांचवीं समष्टिपूजा होती है जिसमें सर्वाम्नायात्मक ऊर्ध्वाम्नायेशी भासानिलया ललिता महात्रिपुरसुन्दरीविलीन भासामहाकामेश्वरी समस्त श्रीचक्रपीठादिमातान्त पाशुपतस्वरूप महापाशुपतविद्या ऊर्ध्वज्योतिःस्वरूप ऊर्ध्वमुखशिवादिस्वगुरुपूर्वक ऊर्ध्वाम्नायात्मकभासाकूटदेवता की 'पञ्चमसमष्टिपूजा' सम्पन्न होती है।

□ तुरीया के उपासकों के लिये विशिष्ट पूजाक्रम

जो उपासक तुरीया की पूजा करते हैं, उनके लिये यहां प्रस्तुत 'खड्गमाला' के अन्त में सृष्टिक्रम और लयक्रम दोनों ही क्रमों की पूजा के लिये पांच आवरणों में पूजित होने वाली देवियों के नाम एवं क्रम दिखलाये हैं जिनमें—

१- वामादि १७ शक्तियां अष्टदल के मूलवृत्त में (सृष्टिक्रम में सप्तमावरण तथा लयक्रम में चतुर्थावरण के रूप में) पूजित होंगी।

२- चार अवस्था देवियां चतुर्दशार चक्र के दोनों पार्श्व, अग्रभाग तथा मध्य में (सृष्टिक्रम में षष्ठावरण एवं लयक्रम में पञ्चमावरण के रूप में) पूजित होंगी।

३-षड् वाक् शक्तियां बहिर्दशार के दोनों पार्श्व, अग्र और मध्यभाग में (सृष्टिक्रम में पञ्चमावरण तथा लयक्रम में षष्ठावरण के रूप में) पूजित होंगी।

४- वामादि पांच देव अन्तर्दशार चक्र के दोनों पार्श्व तथा अग्रभाग में (सृष्टिक्रमानुसार चतुर्थावरण एवं लयक्रमानुसार सप्तमावरण के रूप में) पूजित होंगे।

५- पञ्चबाणदेवता अष्टकोणचक्र के दोनों पार्श्व तथा अग्रभाग में (सृष्टिक्रमानुसार तृतीयावरण एवं लयक्रम में अष्टमावरण के रूप में) पूजित होते हैं।

साधक इन नामों को सम्बोधनान्त बनाकर माला के रूप में पूजा करें।

□खड्गमाला का प्रयोग-विधान

ऐसी महामहिम-शालिनी 'खड्गमाला' का प्रयोग अत्यन्त प्राचीनकाल से होता आया है। रुद्रयामल में 'देवीभक्त' के नित्यकर्तव्यों का संकेत करते हुए कहा गया है कि—

जपान्ते शुद्धमाला च ह्याम्नायस्तोत्रमुत्तमम्।
ललितानामसाहस्रं सर्वपूर्तिकरं स्तवम्॥
स्तवराजं च पञ्चैतान् भक्तः प्रतिदिनं पठेत्।

इसके अनुसार उपासना के दैनिक कर्मों में 'माला-विद्या' का प्रयोग भी अत्यावश्यक है। श्रीचक्रोपासकों का अनुष्ठान अत्यन्त वैज्ञानिक तथा शास्त्रसम्मत है। कोई भी कार्य उसमें ऐसा नहीं है, जिसमें चक्र, पिण्ड और ब्रह्माण्ड के ऐक्यसाधन के साथ ही आध्यात्मिक अभ्युन्नति का समन्वय न हो। 'खड्गमाला' में आये हुए समस्त नामों का प्रयोग १५ दिनों के आधार पर १५ प्रकारों से समायुक्त हुआ है। आगमों का वचन है कि—

शुद्धा नमोऽन्ताः स्वाहान्तास्तर्पणान्ता जयान्तकाः।
प्रवृत्तयः पञ्चधा स्युर्मालासु निखिलास्वपि॥
शुद्धायाः शक्तिमालाया जपस्तेन विधीयते।
पञ्चधा जायते नित्यं पुरश्चर्या-फलं भवेत्॥

इसके अनुसार निम्नलिखित प्रारम्भिक पांच प्रकार होते हैं—

१- शुद्धा	—	सम्बुद्ध्यन्ता,
२- नमोऽन्ता	—	नमःपदयुक्ता चतुर्थ्यन्ता,
३- स्वाहान्ता	—	स्वाहापदयुक्ता
४- तर्पणान्ता	—	तर्पयामिपदयुक्ता द्वितीयान्ता,
५- जयजयान्ता	—	जयजयपदयुक्ता सम्बुद्ध्यन्ता

इन पांच प्रकारों का शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से पूर्णिमा तक और अमावस्या से कृष्णपक्ष की प्रतिपदा तक का प्रयोग करने की दृष्टि से ५-५ तिथियों का क्रम बताया है जिसमें प्रथम शक्तिमाला, द्वितीय शिवमाला और तृतीय शिवशक्ति-मिथुन-मालारूप पाठ होते हैं । इस प्रकार प्रतिपदा से पञ्चमी तक १- शक्तिमाला, षष्ठी से दशमी तक २- शिवमाला, और एकादशी से पूर्णिमा तक ३- मिथुनमाला का प्रयोग होता है । यह पन्द्रह पाठों का क्रम पञ्चदशी-मन्त्र को ध्यान में रखकर दिया गया है । प्रत्येक माला का जो ध्यान मुद्रित पुस्तकों में दिया गया है, वह केवल भगवती के और उसके भक्तों को प्राप्त होनेवाले सामर्थ्य को सूचित करता है । अतः इनके १५ ध्यान-पद्य प्राप्त करना भी आवश्यक है ।

इन मालाओं से किस प्रकार क्या करना चाहिये ? इस पर भी विचार हुआ है । यथा—सम्बुद्ध्यन्त माला का केवल पाठ होता है । नमोऽन्तमाला के प्रत्येक नाम से पुष्पाक्षत अर्पित होते हैं । स्वाहान्तमाला से अग्नि में आहुति दी जाती है । तर्पणान्त-माला के नामों से श्रीयन्त्र पर विशेषार्घ्यामृत द्वारा तर्पण किया जाता है । तथा जय-जयान्त माला से पुष्पाञ्जलि अर्पित करने का विधान है ।

नित्योत्सवादि-ग्रन्थों में इस सम्बन्ध में विशेष बताया गया है । यदि यह सब न हो सके तो पाठ मात्र से भी पूर्ण लाभ होता है ।

□ खड्गमाला के तान्त्रिक प्रयोग

श्रीचक्रराज की पूजा के पश्चात् 'खड्गमाला' से पूजा होती है । यदि पूजा न हो सके तो केवल पाठ भी कर सकते हैं । विशेष कार्य की सिद्धि के लिए भी इसके द्वारा बहुत से प्रयोग किये जाते हैं । 'पञ्चदश-खड्गमाला' के सम्बन्ध में जो प्रयोग लिखे गये हैं वे इससे भी करने चाहिए । यहाँ पाठकों की जानकारी के लिए कुछ प्रयोग हम दे रहे है—

१- आकर्षण के लिए — प्रतिदिन पाठ से पूर्व अश्वारूढामन्त्र का जप १००० करें । ऐसा पाठ एक मास तक करने से कार्यसिद्धि होती है । इन्हीं मन्त्रों से सरसों तथा राई से दशांश हवन भी करें ।

२- वशीकरण के लिए — मालामन्त्रों को जयान्त बनाकर रक्तकनेर के पुष्पों से पूजा करें । दाडिम के पुष्पों से हवन करना उत्तम है ।

३- सम्मोहन के लिए — भी कुंकुम, एवं अष्टगन्ध द्वारा मालामन्त्रों से पूजा करें ।

इन्हीं वस्तुओं को अभिमन्त्रित करके धारण करें। तथा अश्वारूढा के मन्त्र का आदि-अन्त में जप भी करना चाहिए।

४- स्तम्भन के लिए चम्पा के पुष्प अथवा हरिद्रा से यन्त्रराज पर मालामन्त्रों द्वारा पूजन करें। पीतवस्तु का नैवेद्य चढाएं तथा पीताम्वरामन्त्र का आदि अन्त में जप करें।

इसी प्रकार अन्य प्रयोग भी इस मालाविद्या के पाठ एवं पूजन के होते हैं। हवनीय द्रव्य की दृष्टि से विभिन्न वस्तुओं का प्रयोग भी इसमें अपेक्षित है। जैसे—

१- आरोग्य– दही अथवा घृत से, २– धनसम्पत्ति- खीर से, ३– विशेष धन-प्राप्ति-शहद से, ४– सुखप्राप्ति-शर्करासे, ५- इष्टसिद्धि और अरिष्टनाश-दाख से, ६– शत्रुनाश– नमक तथा राई से, ७-सम्पत्ति–श्रीफल नारियल से, तथा ८- रोगनाश-दूर्वा, त्रिमधु और गिलोय से, ९– वाणीसिद्धि–कपूर से तथा १०- भूत-प्रेतबाधा-नाश–करञ्ज के पुष्प से, ११- लक्ष्मीप्राप्ति - विल्वपत्र अथवा तुलसी से।

रोग शान्ति के लिए रोग के अनुसार आयुर्वेदिक ओषधि को कलश के जल में डाल कर उसका स्पर्श करते हुए मालामन्त्र से अभिमन्त्रित करें और वह जल रोगी को पिलायें। ऐसे ही अन्य बहुत से प्रयोग प्राप्त होते हैं जो गुरुपरम्परा से ज्ञातव्य हैं।

□ वज्रपञ्जराख्य मन्त्र

आगमों में ऐसा निर्देश प्राप्त होता है कि 'खड्गमाला' का पाठ करने से पूर्व 'वज्रपञ्जर' संज्ञक मन्त्रों का भी एक पाठ होना चाहिए। अतः उन मन्त्रों का सङ्कलन साधकों की सुविधा के लिये हम यहां दे रहे हैं।

१- गणपतिमन्त्र— ॐ श्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा।

२- भुवना— ह्रीं।

३- वाग्देवी— ऐं क्लीं सौः वद वद वाग्वादिनि स्वाहा।

४- नकुली— ऐं ॐ ओष्ठपिधाना नकुली दन्तैः परिवृता पविः। क्लीं सर्वस्यै वाच ईशाना चारु मामिह वादयेत्। सौः।

५- त्रिपुरा— ह्सौं हसकलह्रीं ह्सौः।

६- ब्रह्ममन्त्राः— ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः।
भवे भवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः ॥१॥
ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः।

कालाय नमः कलविकरणाय नमो वलविकरणाय नमो बलाय नमो वलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः ॥२॥

ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः ।
सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥३॥

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि ।
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥४॥

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम् ।
ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम् ॥५॥

७- पञ्चाक्षरमनुः — नमः शिवाय (अथवा)

८-षडक्षर-मनुः— ॐ नमः शिवाय

९- भूरादिसप्यकम्— ॐ भूः, ॐ भुव ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ।

१०- नारायण-मन्त्र— ॐ ह्रीं नमो नारायणाय ।

११- नवार्णः ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ।

१२दशार्णान्नपूर्णा— श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ अन्नपूर्णे स्वाहा ।

१३- दशाक्षरी रुद्रमन्त्रः— ॐ नमो भगवते रुद्राय ।

१४- भास्कर-मन्त्रः— ॐ घृणिः सूर्य आदित्योम् ।

१५- विष्णु-मन्त्रः— ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

१६- भुवनेशी— श्रीं ह्रीं श्रीं ।

१७- पञ्चशी— कएईल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं ।

१८- षोडशी— श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं ऊं ह्री श्रीं क ५ ह ५ स ४ सौः ऐं क्लीं सौः ।

१८- भैरवी— ऊं ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौं हसौंः (ग्रं ग्रं ह्सें) श्रीं ह्रीं ऐं ऐं समयिनि मदिरानन्दसुन्दरि समस्तसुरासुरवन्दिते श्रीं ह्रीं भुजङ्गभूपालमौलिमालार्चितचरणमाले विकटदन्त-खटा-

टोपाभिचरिणि मदीयं शरीरं रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा[1] ।
ॐ भूः स्वाहा । ॐ भुवः स्वाहा ॐ स्वः स्वाहा ॐ
भूर्भुवः स्वः स्वाहा । नराऽन्त्रमालाभरणभूषिते
महाकौलिनि महाब्रह्मवादिनि महाधनोन्मादकारिणी महा-
भोगप्रदे मदीयं शरीरं वज्रमयं कुरु कुरु दुर्जनान् हन
हन महीपालान् क्षोभय क्षोभय परचक्रं भञ्जय भञ्जय
जयङ्करि गगनगामिनि त्रैलोक्यस्वामिनि समलवरयूं
रमलवरयूं यमलवरयूं भमलवरयूं श्रीभैरवि प्रसीद प्रसीद
स्वाहा ।

प्रार्थना— रक्ष रक्ष महादेवि शरीरं परमेश्वरि ।
मदीयं मदिरानन्दे आपादतलमस्तकम् ॥

☐ प्रस्तुत 'खड्गमाला' का महत्त्व

पूर्ववर्णित 'खड्गमाला' की अपेक्षा इस पुस्तक में प्रकाशित 'खड्गमाला' का अपना स्वतन्त्र महत्त्व है । इसमें दिये गये नामों का संग्रह सृष्टिक्रमानुसार षोडश-आवरण के देवताओं की पूजा-पद्धति को ध्यान में रखकर किया गया है ।

हमारे यहां उत्तरभारत एवं दक्षिणभारत के श्रीविद्योपासकों में बहुधा नवा-वरण-पूजा का ही सर्वसाधारण रूप से क्रम प्रचलित है । यही क्रम सभी पूजा-पद्धतियों में सविधि वर्णित है । मां की अनुकम्पा से उनके भक्तवर्ग का यथार्थरूपेण मार्गदर्शन करने लिये ही अनेक पूज्य गुरुजनों ने 'सपर्या-पद्धति, वरिवस्या, अर्चन-चन्द्रिका, नित्यार्चन, पूजा-पद्धति' आदि नामों से श्रीयन्त्रराज के आवरणार्चन का मार्ग प्रशस्त किया है । प्रायः ये सभी पद्धतियां संहार-क्रम से ही पूजन-क्रम का निर्देश करती हैं । अतः अन्य क्रमों का ज्ञान सामान्यसाधकों को नहीं हो पाता है । उन की पूर्ति इसमें की गई है ।

---

१. यही मन्त्र अन्यत्र कुछ पाठान्तरों के साथ इस रूप में प्राप्त होता है—'ॐ' ऐं ह्रीं श्रीं हस्फ्रें हस्फ्रीं हस्फ्रें श्रीं ह्रीं ऐं समयिनि मदिरानन्दसुन्दरि समस्तसुरासुरवन्दिते भुजङ्ग-भूपालमौलिमालार्चितचरणकमले विदितदन्तखटाटोपनिवारिणि मदीयं शरीरं वज्रमयं कुरु कुरु दुर्जनं हन हन दुष्टमहीपालान् क्षोभय क्षोभय परचक्रं भञ्जय भञ्जय जयङ्करि गगनगामिनि त्रैलोक्यस्वामिनि समलवरयूं रमलवरयूं यमलवरयूं श्रीभैरवि प्रसीद प्रसीद स्वाहा ।

तथा उपर्युक्त अन्य मन्त्रों के पाठ का उल्लेख नहीं है ।

साथ ही उनमें 'त्रिवृत्त' के पूजन का भी समावेश नहीं है । इस सम्बन्ध में सम्प्रदायानुरोध को ही मुख्य कारण बनाया जाता रहा है । —(जिसका विचार हम पहले कर चुके हैं ।) और प्रायः आम्नायों की दृष्टि से स्वतन्त्र नाम-विभाग को भी महत्त्व नहीं दिया गया है । जबकि पृथक्-पृथक् आम्नायों की देवियां, देव तथा चक्र-स्वामिनियों, योगिनियों का यहां क्रमिक नामस्मरणसहित यथास्थान पूजन क्रम भी दिखलाया गया है ।

पञ्चपञ्चिकादि का पूजन प्रायः सभी पद्धतियों में विन्दु में ही निर्दिष्ट है, जब कि यहां श्रीविद्यार्णव के अनुसार प्रत्येक चक्र में यह पूजनक्रम लिया गया है ।

दश महाविद्यादि का स्मरण, आम्नायनायिकाओं का स्मरण, बिन्दुगत अन्य चक्रों का स्मरण, विभिन्न कूटात्मक विद्याओं का स्मरण और तुरीयोपासकों के लिए विशिष्ट पूजाक्रम भी इसमें समाविष्ट है जो प्रायः दुर्लभ है ।

मेधासाम्राज्य तक का क्रम इसमें पूर्णरूपेण दिया गया है जो अब तक अप्रकाशित ही था ।

□ प्रस्तुत खड्गमाला की आवश्यकता

वर्तमान समय में प्रचलित पूजा-पद्धतियों में देखने में आता है कि श्रीयन्त्र में सर्वत्र शक्ति की ही पूजा की जाती है शिवरूप में केवल कामेश्वर की ही पूजा होती है। 'सौन्दर्यलहरी, सुभगोदय, यतिदण्डैश्वर्य-विधान, वडवानलतन्त्र, त्रिपुरारहस्य' आदि को देखने से यह स्पष्ट होता है कि श्रीयन्त्र शिवशक्त्यात्मक है तो पूजा भी शिवशक्त्यात्मक होनी चाहिए । विन्दु को शिवरूप माना है । त्रिकोण, वसुकोण, दशारद्वय तथा चतुर्दशार ये 'शक्ति चक्र' हैं तथा भूपुर, त्रिवृत्त, षोडशदल एवं अष्ट-दल 'शिवचक्र' हैं । सौन्दर्यलहरी की टीका लिखते हुए अरुणाभोदिनी टीका में 'भागवतमतरहस्य' का प्रमाण प्रस्तुत किया है :—

चतुर्भिः शिवचक्रैश्च शक्तिचक्रैश्च पञ्चभिः ।
शिवशक्तिमयं ज्ञेयं श्रीचक्रं शिवयोर्वपुः ॥

इसी को 'भैरवयामल' में भगवान् शंकर ने पार्वती को स्पष्ट किया है कि : —

चतुर्भिः शिवचक्रैश्च शक्तिचक्रैश्चः पञ्चभिः ।
नवचक्रैश्च संसिद्धं श्रीचक्रं शिवयोर्वपुः ॥

त्रिकोणमष्टकोणं च दशकोणद्वयं तथा । चतुर्दशारं चैतानि शक्तिचक्रणि पञ्चच ॥
बिन्दुश्चाष्टदलं पद्मं पद्मं षोडशपत्रकम्, । चतुरश्रं च चत्वारि शिवचक्राण्यनुक्रमात् ॥

भगवत्पाद श्रीगौडपादाचार्य द्वारा प्रणीत 'सुभगोदय' का यह श्लोक भी द्रष्टव्य है ।

हलो बिन्दुर्वर्गाष्टकभिदलं शाम्भववपुश्चतुश्चक्रं चक्रस्थितमनुभयं शक्तिशिवयोः ।
निशाद्या दर्शान्ताः श्रुतिनिगदिताः पञ्चदशधा, भवेयुर्नित्यास्तास्तव जननि मन्त्राक्षरगणाः ॥

—सुभगोदय ।२५।

इसी को दृष्टि में रखते हुए भगवत्पाद श्रीशंकराचार्यजी ने "यतिदण्डैश्वर्य-विधान" में शिवचक्रों में पुंलिग, शक्तिचक्रों में स्त्रीलिंग एवं उभयात्मक में उभयलिंग के नामों का प्रयोग किया है। चक्रविद् के लक्षणों का निर्देश करते हुए ब्रह्माण्डपुरण में तो यह भी कहा गया है कि—

शैवानां चैव शाक्तानां चक्राणां च परस्परम् ।
अविनाभावसम्बन्धं यो जानाति स चक्रवित् ॥

'महात्रिपुर-सुन्दरी-हृदय' में भी यही बात कही गई है। यथा—

त्रिकोणमष्टकोणं च दशकोणद्वयं तथा ।
चतुर्दशारं चैतानि शक्तिचक्राणि पञ्च च ॥
बिन्दुरष्टदलं पद्मं तथा षोडशपत्रकम् ।
चतुरस्रं च चत्वारि शिवचक्राणि सुन्दरि ॥

—महायोनितन्त्र

इसी प्रसंग में गोवर्धन-पीठाधीश्वर, जगद्गुरु शङ्कराचार्य स्व० श्रीभारती-कृष्ण तीर्थ के 'सगुणब्रह्म और त्रिशक्तितत्त्वस्वरूपमीमांसा' (शक्ति अङ्क-कल्याण) लेख में दर्शित ये वचन भी स्मरणीय हैं— "...उपासना काण्ड में स्पष्ट किया गया है कि शक्ति और शिव को अलग करके उसमें से सिर्फ एक की उपासना नहीं करनी चाहिये ईशावास्योपनिषद् के 'सम्भूति' और 'असम्भूति' सम्बन्धी मन्त्रों से भी यही तात्पर्य निकलता है ।

लक्ष्मीनारायण-हृदय में भी स्पष्ट किया गया है कि—लक्ष्मीः क्रुध्यति सर्वदा अर्थात् भगवान् को छोड़कर केवल भगवती की उपासना करने से केवल भगवान् ही रुष्ट नहीं होते अपितु भगवती भी रुष्ट होती है ।

देवताओं के नाम गौरीशङ्कर, सीताराम, लक्ष्मीनारायण, राधाकृष्ण आदि भी इसी के सूचक हैं । भगवान् शक्ति के अधिष्ठान हैं इसलिए आधाररूप ईश्वर के बिना शक्ति रह ही नहीं सकती ।

इसी दृष्टि से ललितासहस्रनाम के 'शिवशक्त्यैक्यरूपिणी' नाम से देवी के विशेष्यरूपी नामों का उपसंहाररूपी वर्णन करके अन्तिम नाम विशेषणरूपी ललिताम्बिका' दिया गया है । इसका तात्पर्य यह है कि विशेषणरूपी ललिताम्बिका के जो विशेष्यरूपी 'श्रीमाता' 'श्रीमहाराज्ञी' आदि ९९९ नाम पहले दिये गये हैं, उन सबका 'शिवशक्त्यैक्यरूपिणी' इस एक नाम में अन्तर्भाव, उपसंहार, घनीकरण और क्रोडीकरण किया गया है इत्यादि[1] ।

'सुभगोदय-वासना' में भी स्तुति की गई है कि—

अहन्तेदन्तयोर्बीजमविभागरसात्मकम् ।
शिवशक्तिमयं चक्रं विश्वाकारं भजाम्यहम् ।।७।।

इन्हीं सब वचनों को दृष्टि में रखकर ऐसी 'खड्गमाला' की आवश्यकता समझी गई और उसकी पूर्ति इसके प्रकाशन से होगी ऐसी आशा है ।

□पञ्चदशमाला के सम्बन्ध में

इस खड्गमाला में जिन नामों का संग्रह है, उनमें चक्रों के अनुसार ही पुंलिंगादि नामों का प्रयोग हुआ है। अतः यदि इसके १५ प्रकार बनाने की रुचि हो तो इन सब नामों को पहले स्त्रीलिंग बनाने से शक्तिमाला बनेगी, पुंलिंग बनाने से शिवमाला बनेगी और उभयरूपों का एक साथ प्रयोग करने से मिथुनमाला बन सकेगी ।

□नामपारायण-प्रीता (उपसंहार)

'ललितासहस्रनामस्तोत्र' में वाग्देवियों ने भगवती के सहस्रनामों में एक नाम 'नामपारायण-प्रीता' भी दिया है, इसके अनुसार यह ज्ञात होता है कि श्रीराजराजेश्वरी की प्रसन्नता के लिए उनके नामों का पारायण करना भी अत्यावश्यक अङ्ग है। सम्भवतः यही लक्ष्य में रखकर विभिन्न प्रकार की नामावलियां तन्त्रग्रन्थों में प्रस्तुत हुई हैं। इनमें संगृहीत नाम न केवल संख्याभेद से ही अपना विशिष्ट महत्त्व रखते हैं, अपि तु उनके चयन की पृष्ठभूमि में "बहुत ही रहस्यपूर्ण तत्त्वों का समावेश" प्रस्तुत कर साधक के सर्वविध कल्याण की कामना भी सदा अग्रसर रही है ।

ऐसी ही नामावलियों में 'खड्गमाला' के नाम से आवरण-पूजा में आनेवाले नामों का क्रमिक संग्रह भी अपना प्रमुख स्थान रखता है। इसी को 'मालामन्त्र' के नाम से सम्बोधित किया गया है।

श्रीयन्त्रराज की पूजा के विभिन्न प्रकारों में 'खड्गमाला' का नवावरणगत यह नाम-संग्रह बहुत प्रसिद्ध है। किन्तु षोडश आवरणरूप पूजा करनेवाले साधकों के लिए ऐसी कोई खड्गमाला अभी तक प्राप्त नहीं थी। इसी अभाव की पूर्ति को लक्ष्य में रखकर 'यतिदण्डैश्वर्य-विधान' आदि ग्रन्थों के आधार पर यहां 'खड्गमाला' तैयार की गई है।

इसका संकलन परमपूज्य अनन्तश्रीविभूषित, स्वामी श्रीविद्यारण्यजी आश्रम की महती अनुकम्पा से हुआ है। आप जब इन्दौर (म० प्र०) में चातुर्मास-हेतु विराजमान थे, तब इन्दौर के ही विख्यात चिकित्सक, आयुर्वेद के मूर्धन्य विद्वान् और गौमाता के अनन्य उपासक वैद्यराज पं० हरिशङ्करजी शर्मा आयुर्वेदाचार्य (हरिद्वार) ने बड़े ही परिश्रम से यन्त्रशास्त्र के गूढरहस्यवेत्ता पूज्य स्वामी जी के सांनिध्य में बैठकर इस 'खड्गमाला' का आलेखन किया।

मेरे पूज्य मातुल होने के कारण बाल्यकाल से ही आपका मुझ पर पूर्ण वात्सल्य रहा है। कई बार रुग्ण होने पर आपने चिकित्सा करके जीवनदान दिया है और पूज्यपाद स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज से श्रीविद्यादीक्षा प्राप्त करने के पश्चात् उपासना-विषयक विचार-विमर्श भी होता रहता है। उन्होंने यह ग्रन्थ मुझे प्रकाशनार्थ देकर जो कृपा की है, उसके लिये मैं प्रणतिपूर्वक उनका आभार मानता हूं।

जब इस 'खड्गमाला' के मुद्रण की बात आई तो मैंने 'श्रीलालबहादुरशास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, दिल्ली' के यशस्वी प्राचार्य डॉ० मण्डन मिश्रजी से निवेदन किया तथा हमारे द्वारा सम्पादित की जानेवाली त्रैमासिक शोध पत्रिका "शोध-प्रभा" में इसे छपाने की स्वीकृति मांगी। प्राचार्यजी ने सहर्ष स्वीकृति प्रदान की और इसकी अतिरिक्त पुस्तक छपाने की भी अनुमति प्रदान की। इस अनुमति के लिये श्रीयुत प्राचार्यजी का मैं पूर्ण कृतज्ञ हूं।

पूज्य स्वामी श्रीविद्यारण्यजी महाराज की मुझपर भी अनन्य अनुकम्पा है। वर्षों से उनके पावन चरणों में बैठकर उपासना-सम्बन्धी मार्गदर्शन प्राप्त कर रहा हूं। जैसे किसी अबोध बालक को अंगुली पकड़ कर सिखाते हैं, उसी प्रकार आप गम्भीर से गम्भीर विषय को सरलता से समझाते रहते हैं। जब इस 'खड्गमाला' का सम्पादन कार्य मैंने आरम्भ किया तो मेरे मन में आया कि जब तक इस क्रम का परिचयात्मक ज्ञान प्राप्त नहीं कर लिया जाए तब तक कुछ लिख नहीं पाऊंगा। इस दृष्टि से विगत दो वर्षों से निरन्तर प्रयत्नशील रहा और जब भी समय मिलता पूज्यश्री के सांनिध्य में पहुंच कर जानने का प्रयास करता। महाराजश्री का स्वास्थ्य ठीक न होने पर भी जयपुर और गाजियाबाद में आपने बहुत ही आत्मीयता से मुझे समझाया और सप्रमाण विवेचन किया। पूज्य स्वामीजी महाराज की सदा यह भावना रही है कि "भारत की अति प्राचीन उपा-

सना एवं योग-विषयक जो ग्रन्थसम्पत्ति इधर-उधर अस्त-व्यस्त हो गई है, दासता एवं सङ्कट के काल में जिसे नष्ट-भ्रष्ट कर दिया गया है तथा जिन गोपनीय प्रक्रियाओं का ज्ञानाभाव एवं अभिरुचि के अभाव में लोप होता जा रहा है, उसका संरक्षण अवश्य होना चाहिए। आज का साधक वास्तविक मार्ग से अपरिचित होने के कारण अत्यन्त परिश्रम करने पर भी लक्ष्य तक पहुंचने में अक्षम होता है, उसके लिये भी आपने अनेक व्यवस्थित पद्धतियों का सङ्कलन करके सदा ही योग्य व्यक्तियों के कल्याणार्थ मार्गनिर्देशन किया है। एतदर्थं आपके चरणकमलों में कोटि-कोटि प्रणाम कर भविष्य में भी ऐसी कृपा बनाये रखने की प्रार्थना करता हूं।

जब 'खड्गमाला' का मुद्रण आरम्भ हुआ तो मैंने सोचा कि इसमें और भी कुछ दुर्लभ सामग्री (पूजाविषयक) जोड़ दी जाए तो उत्तम रहेगा। इस विचार से इसके साथ ही १- श्रीविद्यार्णवोक्त ३६० देवीनामावली, २- तन्त्रोक्त महात्रिपुरसुन्दरी त्रिशती नामावली, ३- श्रीविद्यार्णवोक्त १८४ महालक्ष्मी-नाममाला, ४- गर्भकुलार्णवरहस्य-जीवतन्त्रोक्त श्रीदेवीवैभवाश्चर्याष्टोत्तरशतनामावली, तथा ५- (षोडशावरणात्मक) सर्वावरणसमष्टिसुमनोऽञ्जलि का भी संयोजन करके मुद्रित कराने का लोभ संवरण नहीं कर पाया।

आधुनिक युग के अनुसार ग्रन्थ-गरिमा को प्रकट करनेवाला प्राक्कथन भी ग्रन्थ का अत्यावश्यक अंग माना जाता है। इसी दृष्टि से 'श्रीयन्त्र-दीपिका' के रूप में यह विस्तृत प्राक्कथन भी इसके साथ जुड़ा है।

अन्त में अपने पूज्य विद्यागुरु एवं आद्यदीक्षागुरु पूज्यपाद स्व० स्वामी श्रीकृष्णानन्दजी तीर्थ तथा पूज्यपाद स्व० श्री आत्मदेवाश्रमजी महाराज (विदिशापीठाधीश्वर) के चरणों में साष्टांग प्रणाम करता हूं जिनकी अहैतुकी कृपा से इस पावन पथ में प्रवेश मिला। साथ ही परमपूज्य गुरुदेव स्वामी श्रीहरिहरानन्द सरस्वती (श्रीकरपात्रस्वामीजी) महाराज के चरणों में भी भक्तिपुरस्सर अनेकशः प्रणाम करता हूं, जिनकी अपार करुणा से मुझे पूर्णाभिषिक्त होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। तथा परमादरणीय कविराज श्रीसीतारामजी शास्त्री श्रीविद्याभास्कर (कलकत्ता) को भी मैं प्रणाम करता हूं, जिनका अपार अनुराग उपासना के क्षेत्र में मेरा सम्बल बना है।

इन्हीं शब्दों के साथ प्रस्तुत प्रकाशन में अज्ञानवश मुझ से कुछ त्रुटियां हुई हों, उनके लिए क्षमा-याचना करते हुए विज्ञ पाठकों-उपासकों से त्रुटिशोधन एवं मुझे सूचन करने की विनम्र प्रार्थना करता हूं। करुणामयी विरूपाक्ष-वक्षोविहारिणी दाक्षायणी सबका कल्याण करे। इसी कामना के साथ—

—डॉ० रुद्रदेवत्रिपाठी

मङ्गल-मालिका

कृत्याकृत्य-विवेककर्मविमुखान् स्थाणूपमान् मादृशान्,
तीरस्थान् निजचेतना- विरहितान् दृष्ट्वा दयान्दोलितः ।
यो ज्ञानाम्बुधिरुच्छलन्नवनवैस्तुङ्गैस्तरङ्गै रलं,
सेकं सेकमहो करोति हरितांस्तस्मै नमस्कुर्महे ॥ १ ॥

रेखा-विन्दु-विसारिणी नवनवोन्मेषेषु सञ्चारिणी,
वर्णव्रात-विहारिणी स्फुरदनेकाङ्कौघ - विस्फारिणी ।
नानानिर्मलिनाकृतिव्रततिभिर्भक्तार्तिसंहारिणी,
काचिद् यन्त्रमयी चकास्तु हृदये माता जगत्तारिणी ॥ २ ॥

मातस्तावकमासनं द्युतिमयं विन्दुत्रिकोणाञ्चितं,
तन्मध्ये वसुदिग्दशारमनुभिः कोणैर्युतं सुन्दरम् ।
पश्चान्नागदलाङ्कितं त्रिभिरथो वृत्तैस्तथा भूपुरै—
र्युक्तं भाति सुखावहं पुरमयं तं यन्त्रराजं भजे ॥ ३ ॥

सर्वस्या अस्ति यन्त्राकृतिमतिविततेर्यन्त्रराजो निधानं,
यद्विन्दोः सूक्ष्मरूपा रुचिमतिकृतिमद्बिन्दवः सृष्टिमाप्ताः ।
एकैकस्य प्रगत्या मिलितुमथ मिथो रेखया वर्द्धमानाः,
प्राप्तास्ते यन्त्रभावं तदिह विजयते बीजरूपं त्रिकोणम् ॥ ४ ॥

कोणाः सन्तु कियन्त एव विशदाः स्वल्पा अनल्पास्तथा,
तिर्यञ्चः किमु वा दिगामुखगता ऊर्ध्वाधरा वक्रगाः ।
वृत्तं वा कमलाकृतिर्भवतु तद्यन्त्रं नमामो यतो,
रेखास्वेव विराजिता विजयते सर्वाऽपि लेखावली ॥५ ॥

आम्नायाङ्कणवेदिकासु विलसत् सृष्ट्यादि-नानाक्रम—
प्राप्तार्चासु समग्रचक्रनिवहे स्फूर्जद् महादैवतम् ।
श्रीयन्त्रं किल षोडशावरणयुक् पूज्यं प्रसादप्रदं,
भक्त्याऽऽनम्य भवाटवीभयजयायाहं हृदा भावये ॥ ६ ॥

श्रीषोडशानन्दनाथपदकञ्जालिगुञ्जितुः ।
रुद्रदेवानन्दनाथ— कृतिरस्तु सतां मुदे ॥ ७ ॥

—रुद्रदेवत्रिपाठी

१ श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी–

२ खड्गमाला

तथा

१. षष्ट्युत्तरत्रिशतशक्तिनामावली
२. श्रीत्रिपुरसुन्दरीत्रिशतीनाममाला
३. चतुरशीत्युत्तरशत-महालक्ष्मीनामावली
४. श्रीदेवीवैभवाश्चर्याष्टोत्तरशतदिव्यनामावली
५. सर्वावरण-समष्टि-पुष्पाञ्जलिश्च

॥ ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दर्यै ॥

परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीमदाद्यशङ्करभगवत्पादाचार्यवर्य— प्रणीत-यतिदण्डैश्वर्यविधानान्तर्गत-श्रीत्रिपुरास्तोत्राधारेण[1] सङ्कलिता मेधासाम्राज्य-पर्यन्ता सृष्टिक्रमरूपा[2] सम्बुद्ध्यन्ता

श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-

खड्गमाला

❖ ❖ ❖

अथ विनियोगः :—

ॐ अस्य श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीखड्गमाला-मन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिर्ऋषिः पङ्क्तश्छन्दः सृष्टि-महात्रिपुरसुन्दरीदेवता क ५ बीजं, स ४ शक्तिः, ह ६ कीलकं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीप्रसादसिद्ध्यर्थे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः :—

दक्षिणामूर्ति-ऋषये नमः	(शिरसि)
पङ्क्तच्छन्दसे नमः	(मुखे)
सृष्टिमहात्रिपुरसुन्दरीदेवतायै नमः	(हृदये)
क ५ बीजाय नमः	(गुह्ये)
स ४ शक्तये नमः	(पादयोः)
ह ६ कीलकाय नमः	(नाभौ)
विनियोगाय नमः	(सर्वाङ्गे)

कर-हृदयादिन्यासाः :—

	(प्रथमवारम्)	(द्वितीयवारम्)
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क ५	अंगुष्ठाभ्यां नमः ।	— हृदयाय नमः ।

१- ग्रन्थेऽस्मिन् प्रत्येकं नाम्ना सह—
"ऐं ह्रीं श्रीं या वै शिवा भगवती देवतास्वरूपिणी त्रिपुरसुन्दरी तस्यै वै नमो नमः"
इत्यादि - संयुक्तत्वात् तत्र 'स्तोत्र'रूपेण प्रोक्तेति ।

२- बिन्दुत्रिकोणवसुकोणदशारयुग्ममन्वस्रनागदलसंयुतषोडशारम् ।
वृत्तत्रयं च धरणीसदनत्रयं च, श्रीचक्रमेतदुदितं परदेवतायाः ॥
(इत्यनुसारम्)

३ क्लीं ह ६ तर्जनीभ्यां नमः । — शिरसे स्वाहा ।
,, सौः स ४ मध्यमाभ्यां नमः । — शिखायै वषट् ।
,, ऐं क ५ अनामिकाभ्यां नमः । — कवचाभ्यां हुम् ।
,, क्लीं ह ६ कनिष्ठिकाभ्यां नमः । — नेत्रत्रयाय वौषट् ।
,, सौः स ४ करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः । — अस्त्राय फट् ।

ध्यानम् :—

आब्रह्माण्डपिपीलिकान्ततनुभृत्सूज्जृम्भमाणा स्फुटं,
जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिभासकतया सर्वत्र या दीव्यति ।
सा देवी जगदम्बिका भगवती श्रीराजराजेश्वरी,
श्रीविद्या करुणानिधिः शुभकरी भूयात् सदा श्रेयसे ॥

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमो —

हृदयदेवि
शिरोदेवि
शिखादेवि
कवचदेवि
नेत्रदेवि
अस्त्रदेवि
साम्बसदाशिव
सद्योजात
वामदेव
तत्पुरुष १०
अघोर
कालाग्निरुद्र
ईशान
रते
प्रीते
मनोभवे
द्राविणि
क्षोभिणि
वशीकरणि
आकर्षिणि २०
मीनकेतने
सुभगे
भगे
भगसर्पिणि
भगमालिनि
अनङ्गे
अनङ्गमेखले
अनङ्गमदने
अनङ्गमदनातुरे
त्रिपुरभैरवि ३०
अघोरकुब्जिके
प्राप्तिसिद्धे
सर्वयोनिमुद्रे
शैवदर्शन
सर्वानन्दमयचक्रस्वामिनि
परापररहस्ययोगिनि
कामेश्वरीनित्ये
भगमालिनीनित्ये
नित्यक्लिन्नानित्ये
भेरुण्डानित्ये ४०

वह्निवासिनीनित्ये
महावज्रेश्वरीनित्ये
शिवदूतीनित्ये
त्वरितानित्ये
कुलसुन्दरीनित्ये
विमलानित्ये
नीलपताकानित्ये
विजयानित्ये
सर्वमङ्गलानित्ये
ज्वालामालिनीनित्ये ५०
चित्रानित्ये
महानित्या ललिते
तिथिनित्ये (तिथ्यनुसारम्)
दिननित्ये (दिनानुसारम्)
श्रीविद्यानन्दनाथात्मकचर्यानन्दनाथ
श्रीउड्डीशानन्दनाथ
श्रीप्रकाशानन्दनाथ
श्रीविमर्शानन्दनाथ
श्रीआनन्दानन्दनाथ
श्रीषष्ठीशानन्दनाथ ६०
श्रीज्ञानानन्दनाथ
श्रीसत्यानन्दनाथ
श्रीपूर्णानन्दनाथ
श्रीमित्रेशानन्दनाथ
श्रीस्वभावानन्दनाथ
श्रीप्रतिभानन्दनाथ
श्रीसुभगानन्दनाथ
कामगिरिपीठस्थमहाकामेश्वरि
जालन्धरपीठस्थमहावज्रेश्वरि
पूर्णगिरिपीठस्थमहाभगमालिनि ७०
महोड्ड्याणपीठस्थमहात्रिपुरसुन्दरि
अतिरहस्ययोगिनि
सृष्टिकामेश्वरी-सृष्टिकामेश्वरबाणौ
सृष्टिकामेश्वरी-सृष्टिकामेश्वर-धनुषी
सृष्टिकामेश्वरी-सृष्टिकामेश्वर-पाशौ
सृष्टिकामेश्वरी-सृष्टिकामेश्वराङ्कुशौ
सृष्टिकामेश्वरि
सृष्टिकामेश्वर
श्रीपरप्रकाशानन्दनाथ
श्रीपराशिवानन्दनाथ ८०
श्रीपराशक्त्यम्ब
श्रीकौलेश्वरानन्दनाथ
श्रीशुक्लदेव्यम्ब
श्रीकुलेश्वरानन्दनाथ
श्रीकामेश्वर्यम्ब
श्रीभोगानन्दनाथ
श्रीक्लिन्नानन्दनाथ
श्रीसमयानन्दनाथ
श्रीसहजानन्दनाथ
श्रीगगनानन्दनाथ ९०
श्रीविश्वानन्दनाथ
श्रीविमलानन्दनाथ
श्रीमदनानन्दनाथ
श्रीभुवनानन्दनाथ
श्रीलीलाम्ब देवि
श्रीस्वात्मानन्दनाथ
श्रीप्रियानन्दनाथ
श्रीसहजानन्दनाथ
श्रीस्वच्छन्दानन्दनाथ
श्रीप्रकाशानन्दनाथ १००
श्रीअमृतानन्दनाथ
श्रीकपिलानन्दनाथ
श्रीअत्र्यानन्दनाथ
श्रीवशिष्ठानन्दनाथ
श्रीसनकानन्दनाथ
श्रीसनन्दनानन्दनाथ

श्रीभृग्वानन्दनाथ
श्रीसनत्सुजातानन्दनाथ
श्रीवामदेवानन्दनाथ
श्रीनारदानन्दनाथ ११०
श्रीगौतमानन्दनाथ
श्रीशौनकानन्दनाथ
श्रीसत्यानन्दनाथ
श्रीमार्कण्डेयानन्दनाथ
श्रीकौशिकानन्दनाथ
श्रीपराशरानन्दनाथ
श्रीशुकानन्दनाथ
श्रीअङ्गिरसानन्दनाथ
श्रीकण्वानन्दनाथ
श्रीजाबाल्यानन्दनाथ १२०
श्रीभरद्वाजानन्दनाथ
श्रीवेदव्यासानन्दनाथ
श्रीगौडपादाचार्य
श्रीगोविन्दपादाचार्य
श्रीभगवत्पादाचार्य
श्रीपद्मपादाचार्य
श्रीहस्तामलकाचार्य
श्रीत्रोटकाचार्य
श्रीसुरेश्वराचार्य
श्रीपरात्परगुरो १३०
श्रीपरमेष्ठिगुरो
श्रीपरमगुरो
समस्तगुरुमण्डलविलीनश्रीदक्षिणामूर्ते
श्रीआचार्यगुरो
श्रीपरमाचार्यगुरो
श्रीपूर्वसिद्धगुरो
श्रीआदिसिद्धगुरो
श्रीनाथादिगुरो
श्रीसिद्धनाथादिगुरो
श्रीत्रिपुरादिनाथगुरो १४०
श्रीआत्मपादुके
त्रिपुराम्ब
वज्रकुब्जिके
इच्छासिद्धे
सर्वबीजमुद्रे
शाक्तदर्शन
सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिनि
अतिरहस्ययोगिनि
वशिनीवाग्देवते
कामेश्वरीवाग्देवते १५०
मोदिनीवाग्देवते
विमलावाग्देवते
अरुणावाग्देवते
जयिनीवाग्देवते
सर्वेश्वरीवाग्देवते
कौलिनीवाग्देवते
त्रिपुरासिद्धे
समयकुब्जिके
पूर्वाम्नायोन्मनि
दक्षिणाम्नायभोगिनि १६०
पश्चिमाम्नायकुब्जिके
उत्तराम्नायचण्डयोगेश्वरि
ऊर्ध्वाम्नायश्रीविद्ये
अनुत्तरवादिनीमहात्रिपुरसुन्दरि
भुक्तिसिद्धे
सर्वखेचरीमुद्रे
वैष्णवदर्शन
सर्वरोगहरचक्रस्वामिनि
रहस्योगिनि नमो नमः ।

१- समष्टिपूजनम् :—

सष्टिलयात्मक-पश्चिमाम्नायेशी-अघोरकुब्जिकाविलीनसृष्टिलय—

महाकामेश्वरी-सभैरवशिवादि-स्वगुरुपूर्वक-पश्चिमाम्नायात्मक-—शक्तिकूटदेवताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमस्करोमि। (इति सम्पूज्य सन्तर्प्य नमस्कृत्य च)

सर्वज्ञादेवि १७०
सर्वशक्तिदेवि
सर्वैश्वर्यप्रदादेवि
सर्वज्ञानमयीदेवि
सर्वव्याधिविनाशिनीदेवि
सर्वाधारस्वरूपादेवि
सर्वपापहरादेवि
सर्वानन्दमयीदेवि
सर्वरक्षास्वरूपिणीदेवि
सर्वेप्सितफलप्रदादेवि
त्रिपुरमालिनि १८०
सिद्धलक्ष्मि
पातालदर्शन
वैदिकदर्शन
शैवदर्शन
सौरदर्शन
वैष्णवदर्शन
शाक्तदर्शन
प्राकाम्यसिद्धे
सर्वमहाङ्कुशामुद्रे,
सौरदर्शन १९०
सर्वरक्षाकर-चक्रस्वामिनि
निगर्भयोगिनि
सर्वसिद्धिप्रदादेवि
सर्वसम्पत्प्रदादेवि
सर्वप्रियङ्करीदेवि
सर्वमङ्गलकारिणीदेवि
सर्वकामप्रदादेवि
सर्वदुःखविमोचिनीदेवि
सर्वमृत्युप्रशमनीदेवि
सर्वविघ्ननिवारिणीदेवि २००

सर्वाङ्गसुन्दरीदेवि
सर्वसौभाग्यदायिनीदेवि
त्रिपुराश्रि
श्यामाकालि
श्रीविद्यारत्नाम्ब
सिद्धलक्ष्मीरत्नाम्ब
राजमातङ्गीरत्नाम्ब
भुवनेश्वरीरत्नाम्ब
वाराहीरत्नाम्ब
वशित्वसिद्धे २१०
सर्वोन्मादिनीमुद्रे
वैदिकदर्शन
सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिनि
कुलोत्तीर्णयोगिनि
सर्वसंक्षोभिणि
सर्वविद्राविणि
सर्वाकर्षिणि
सर्वाह्लादिनि
सर्वसम्मोहिनि
सर्वस्तम्भिनि २२०
सर्वजृम्भिणि
सर्ववशङ्करि
सर्वरञ्जनि
सर्वोन्मादिनि
सर्वार्थसाधिनि
सर्वसम्पत्तिपूरिणि
सर्वमन्त्रमयि
सर्वद्वन्द्वक्षयङ्करि
त्रिपुरवासिनि
आद्याकालि २३०

श्रीविद्याकल्पलताम्ब
त्वरिता-कल्पलताम्ब
पारिजातेश्वरीकल्पलताम्ब
त्रिपुराकल्पलताम्ब
पञ्चबाणेश्वरीकल्पलताम्ब
ईशित्वसिद्धे
सर्ववशङ्करीमुद्रे
सांख्यदर्शन
सर्वसौभाग्यदायकचक्रस्वामिनि
सम्प्रदाययोगिनि नमो नमः। २४०

२- समष्टिपूजनम् :—

सृष्टिस्थितिनिलयात्मक—दक्षिणाम्नायेशी—श्यामा-दक्षिणकाली–विलीन-सृष्टि–स्थिति--महाकामेश्वरी--सभैरव--शिवादि–स्वगुरु–पूर्वक-दक्षिणाम्नायात्मक—वाग्भवकूटदेवताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमस्करोमि।

(एवं पूर्ववत् पूजादि विधाय ततः परम् —)

अनङ्गकुसुम
अनङ्गमेखल
अनङ्गमदन
अनङ्गमदनातुर
अनङ्गरेख
अनङ्गवेगिन्
अनङ्गाङ्कुश
अनङ्गमालिन्
त्रिपुरसुन्दर
भुवन २५०
चैतन्यभैरव
द्वितीयचैतन्यभैरव
कामेशभैरव
रुद्रप्रेतासन
अघोरभैरव
महाभैरव
ललितभैरव
कामेश्वरभैरव
रक्तनेत्रभैरव
ईश्वरप्रेतासन २६०
षट्कूटभैरव
नित्यभैरव
मृतसञ्जीवनभैरव
मृत्युञ्जयपरभैरव
वज्रप्रस्तारणभैरव
ब्रह्मप्रेतासन
भुवनेश्वरभैरव
कमलेश्वरभैरव
सिद्धकौलेशभैरव
डामरभैरव २७०
कामभैरव
विष्णुप्रेतासन
वालभैरव
सम्पत्प्रदभैरव
प्रथमसुन्दर
द्वितीयसुन्दर
तृतीयसुन्दर

चतुर्थसुन्दर
पञ्चमसुन्दर
सदाशिवमहाप्रेतासन
महिमासिद्धे
सर्वाकर्षण (मुद्रा)
गाणपत्यदर्शन
सर्वसंक्षोभण-चक्रस्वामिन्
गुप्ततरयोगिन्
कामाकर्षण
वुद्ध्याकर्षण
अहङ्काराकर्षण
शब्दाकर्षण
स्पर्शाकर्षण
रूपाकर्षण
रसाकर्षण
गन्धाकर्षण
चित्ताकर्षण
धैर्य्याकर्षण
स्मृत्याकर्षण
नामाकर्षण
बीजाकर्षण
आत्माकर्षण
अमृताकर्षण
शरीराकर्षण
त्रिपुरेश
अन्नपूर्ण
श्रीविद्याकोशाम्ब
परंज्योतिःकोशाम्ब
परनिष्कलाकोशाम्ब
अजपाकोशाम्ब
मातृकाकोशाम्ब
लघिमासिद्धे
सर्वविद्रावण (मुद्रा)

वौद्धदर्शन
सर्वाशापरिपूरकचक्रस्वामिन्
गुप्तयोगिन्
कामेश्वरयोगिन्
भगमालियोगिन्
नित्यक्लिन्नयोगिन्
भेरुण्डयोगिन्
वह्निवासियोगिन्
महावज्रेश्वरयोगिन्
शिवदूतयोगिन्
त्वरितयोगिन्
कुलसुन्दरयोगिन्
विमलयोगिन्
नीलपताकयोगिन्
विजययोगिन्
सर्वमङ्गलयोगिन्
ज्वालामालियोगिन्
चित्रयोगिन्
ललितमहायोगिन्
अमृत
आकर्षण
इन्द्र
ईशान
उम
ऊर्ध्वकेश
ऋद्धिद
ऋष
लृकार
लृषिक
एकपाद
ऐश्वर्यात्मक
ओङ्कार
औषधात्मक

अम्बिक
अक्षर
कालरात्र
खातीत
गायत्र
घण्टाधारण
ङार्णात्मक ३५०
चण्ड
छाय
जय
झङ्कारण
ञार्णात्मक (ज्ञानरूप)
टङ्कहस्त
ठङ्कारण
डामर
ढङ्कारण
णङ्कार (णार्ण) ३६०
तामस
स्थानदेव (स्थाणो)
दाक्षायण
धातः
नन्दिन् (नर)
पार्वत
फट्कारण
बन्धन (बन्धिन्)
भद्रकाल
महामाय ३७०
शशिन्
षण्ढ
सरस्वत्
हंसवत्

त्रिपुरेशिन्
महोन्मनः
श्रीविद्याकामधुग्
अमृतपीठेश्वरकामधुग्
सुधासूकामधुग्
अमृतेश्वरकामधुग् ३८०
अन्नपूर्णकामधुग्
गरिमासिद्धे
महायोने (मुद्रा)
स्मार्तदर्शन (जितेन्द्रदर्शन)
त्रिवर्गसाधनचक्रस्वामिन्
मातृकायोगिन्
सर्वसंक्षोभण
सर्वविद्रावण
सर्वाकर्षण
सर्ववशङ्कर ३९०
सर्वोन्मादन
सर्वमहाङ्कुश
सर्वखेचर
सर्वबीज
सर्वयोने
सर्वत्रिखण्ड
असिताङ्गभैरवसहित ब्राह्मि
उन्मत्त „ माहेश्वरि
चण्ड „ वाराहि
भीषण „ माहेन्द्रि ४००
रुरु „ कौमारि
कपाल „ वैष्णवि
क्रोध „ चामुण्डे
संहार „ महालक्ष्मि
अणिमासिद्ध

गरिमासिद्ध
लघिमासिद्ध
महिमासिद्ध
ईशित्वसिद्ध
वशित्वसिद्ध ४१०
प्राकाम्यसिद्ध
भुक्तिसिद्ध
इच्छासिद्ध
प्राप्तिसिद्ध
सर्वकामसिद्ध
त्रिपुर
उन्मन
श्रीविद्यालक्ष्म
एकाक्षरीलक्ष्म
महालक्ष्म ४२०
त्रिशक्तिलक्ष्म
सर्वसाम्राज्यलक्ष्म
अणिमासिद्ध
सर्वसंक्षोभण (मुद्रा)
चार्वाकदर्शन
त्रैलोक्यमोहनचक्रस्वामिन्
प्रकटयोगिन्
कच्छपनिधे
मुकुन्दनिधे
नन्दनिधे ४३०
नीलनिधे
शङ्खनिधे
पद्मनिधे
महापद्मनिधे
मकरनिधे
पश्चिमाम्नायनायक घोरकुब्जिक
उत्तराम्नायनायक सिद्धलक्ष्म
पूर्वाम्नायनायकोन्मनः
दक्षिणाम्नायनायक आदिकाल
तिरस्करण ४४०
वनदुर्ग
कामरती
वसन्तप्रीती
वज्र
शक्ते
दण्ड
खड्ग
पाश
अङ्कुश
गदे ४५०
त्रिशूल
पद्म
चक्र
इन्द्र
अग्ने
यम
निर्ऋते
वरुण
वायो
सोम ४६०
ईशान
ब्रह्मन्
अनन्त
वटुकभैरव
सर्व-योगिन्
क्षेत्रपाल
गणपते
वनदुर्गे
अघोर
सुदर्शन ४७०
शरभ नमो नमः।

३- समष्टिपूजनम् :—

सृष्टिनिलयात्मक-पूर्वाम्नायेशी- सृष्टिसृष्टिमहाभुवनेश्वरीविलीन-सृष्टिसृष्टिमहाकामेश्वरीसभैरवशिवादिस्वगुरुपूर्वक-पूर्वाम्नायात्म-ककामराजकूटदेवताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमस्करोमि।

(एवं पूर्ववत् पूजादि विधाय ततः परं—)

तत्त्वज्ञे - त
तत्त्वज्ञानप्रबोधिनि - त्
सर्वशास्त्रार्थवादिनि - स
विविधार्थस्वरूपिणी - वि
तुर्यामार्गप्रदर्शिनि - तु
रमे (रसदे) - र्
वयोवस्थाविवर्जिते - व
रेवातीरनिवासिनि - रे
निखिलागमबोधिनि - णि ४८०
यमुने - य
मोक्षदे - म्
भक्ताभीष्टफलप्रदे - भ
रम्ये (रसज्ञे) - र
गोवर्धनविवर्धिनि - गो
देशोपद्रवनाशिनि - दे
वक्रतुण्डवरप्रदे - व
स्पन्दरूपे - स्
योगगम्ये - य
धीरवन्द्ये - धी ४९०
महावैरिविनाशिनि - म
हितकर्मफलप्रदे - हि
धिषणे - धि
योधिनि - यो
योगक्षेमविहारिणि - यो
नवसिद्धिसमाराध्ये - नः
प्रभवे - प्
रोगप्रशमनि - र्-
चोरघ्नि - चो
दक्षिणामूर्तिरूपिणि - द ५००
यात्रापापविवर्जिते - या
तुरीयावस्थागामिनि - त्
परब्रह्मात्मिके - प
रोगेशि - रो
रमणीप्रिये - र
जगत्प्रिये - ज
सेव्यमाने - से
सागराम्ब - सा
वेदाक्षरपरीताङ्गि - व
दोहिंनि - दो ५१०
माधवि - म्
बालात्रिपुरसुन्दरि
महात्रिपुरसुन्दरि
चक्रस्थसिद्धे
चक्रस्थमुद्रे
स्पन्दी-चक्राधिष्ठात्रीमहात्रिपुरसुन्दरि
चक्रस्थयोगिनि
कालि
तारे
षोडशि ५२०
भुवनेश्वरि
त्रिपुरभैरवि
छिन्नमस्ते
धूमावति
बगले
मातङ्गि
कमले
दशविद्यामय-महात्रिपुरसुन्दरि
पञ्चवक्त्रमहाकालि

सिद्धलक्ष्मि (अथवा रक्तदन्तिके) ५३०
दशवक्त्रमहाकालि
कमले
वगलामुखि
महालक्ष्मि
चण्डमातङ्गि
छिन्नमस्ते
महासरस्वति
चामुण्डे (अथवा उग्रतारे)
भद्रकालि (अथवा मोहिनीमातङ्गी-चामुण्डे)
उपाम्नायनायिके त्रिशक्तिचामुण्डे (सादिकूटात्मिके) ५४०
उग्रचण्डोपाम्नायसहितमहात्रिपुर-सुन्दरि
वालात्रिपुरसुन्दरि
प्राकाम्यसिद्धे
महायोनिमुद्रे
स्पन्दीचक्राधिष्ठात्री-महात्रिपुरसुन्दरि
निगर्भरहस्ययोगिनि
लयकामकलागुह्यकालीसहितसंहारभैरव
महाभुवनेश्वरीसहितसदाशिवभैरव
दक्षिणकालीसहितमहाकालभैरव
महोग्रतारासहिताक्षोभ्यभैरव ५५०
सिद्धलक्ष्मीपञ्चवक्त्रदशवक्त्रमहाकाली-सहितरुद्रभैरव
बगलाकमलामहालक्ष्मीसहितविष्णुभैरव-
छिन्नमस्ताचण्डमातङ्गीमहासरस्वती-सहितब्रह्मभैरव
चामुण्डासहितभीषणभैरव
उग्रचण्डासहितपाण्डुनाथभैरव
वज्रकुब्जिकासहितशिखास्वच्छन्दभैरव
शारदे
वालात्रिपुरासहितत्रिपुरभैरव
वालासुन्दरीसहितवटुकभैरव
बालामहात्रिपुरसुन्दरीसहित-त्रिपुरेश्वरभैरव ५६०
कादिविद्येश्वरि कालि
हादिविद्येश्वरि सुन्दरि
सादिविद्येश्वरि तारे
ललितामहात्रिपुरसुन्दरीसहितललि-तेश्वरभैरव
उर्ध्वाम्नायेश्वरीलघुषोडशीसहित-लघुकामेश्वरभैरव
महाषोडशीसहितमहाकामेश्वरभैरव
ललितामहात्रिपुरसुन्दरि
कामकलागुह्यकालि
सर्वकामसिद्धे
त्रिखण्डामुद्रे ५७०
मुक्तिप्रद-बैन्दवात्मक-सामरस्य-चक्राधि-ष्ठात्रि महात्रिपुरसुन्दरि
परापररहस्ययोगिनि नमो नमः ।

४- समष्टिपूजनम् :—

अनाख्या-निलयात्मक-उत्तराम्नायेशीकामकलागुह्यकाली-विलीन-अनाख्यामहात्रिपुरसुन्दरी — सभैरवशिवादिस्वगुरुपूर्वकोत्तरा—म्नायात्मक-अनाख्याकूट देवताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमस्करोमि । (एवं पूर्ववत् पूजादि विधाय ततः परं—)

(बिन्दावुपरि प्रणवं विचिन्त्य—)

ऋक्स्वरूपिणि ब्रह्माणि
यजुःस्वरूपिणि रुद्राणि
सामस्वरूपिणि वैष्णवि
अम्ब
अम्बिके
अम्बालिके
विद्ये
अविद्ये ५८०
परशिव
सर्वमन्त्रेश्वरि
सृष्टिसुन्दरि
स्थितिसुन्दरि
लयसुन्दरि
अनाख्यासुन्दरि
भासासुन्दरि
ऊर्ध्वाम्नाय-महात्रिपुरसुन्दरि
महाकामेश्वरि समयानित्ये
महावज्रेश्वरि समयानित्ये ५९०
महाभगमालिनि समयानित्ये
बालामहात्रिपुरसुन्दरि समयानित्ये
शुक्लचरण
रक्तचरण
मिश्रचरण

विश्रान्तिचरण
निर्वाणचरण
तुरीयचरण
तुरीयातीतचरण
षडन्वयशाम्भव ६००
परमेश्वरशाम्भव
विच्चेश्वरशाम्भव
हंसेश्वरशाम्भव
संवर्तेश्वर-शाम्भव
द्वीपेश्वर-शाम्भव
नवात्मेश्वर-शाम्भव
वाग्भवकूट (कूटोच्चारणम्)
कामराजकूट ”
शक्तिकूट ”
महात्रिपुरसुन्दरि (चक्रनायिका षोड-
शाक्षरी लघुषोडशी) ६१०
महात्रिपुरसुन्दरि (उर्ध्वाम्नायनायिका-
सप्तदशाक्षरी)
सर्वकामसिद्धे
त्रिखण्डामुद्रे
कौलदर्शनपरब्रह्मात्मकसामरस्यचक्राधि-
ष्ठात्री-महात्रिपुरसुन्दरि
परापररहस्ययोगिनि

(बिन्दुमध्ये षट्कोणं विभाव्य तत्र अर्धनारीश्वरसहितं महाशाम्भवं विचिन्त्य-)

निर्वाणभैरवमहात्रिपुरसुन्दरि,
षट्पञ्चाशत्संख्याकपार्थिवरश्मिसहितनवात्मेश्वर
द्विपञ्चाशत्संख्याक-जलरश्मिसहित-द्वीपेश्वर
द्विषष्टिसंख्याक-अग्निरश्मिसहितसंवर्तेश्वर
चतुःपंचाशत् संख्याकवायुरश्मिसहितहंसेश्वर ६२०
द्विसप्ततिसंख्याक-आकाशरश्मिसहितविच्चेश्वर
चतुःषष्टिसंख्याक-मानसरश्मिसहितपरेश्वर

पूर्वाम्नायनिर्वाण-भुवनेश्वरि
पश्चिमाम्नाय-निर्वाण-कुब्जिके

दक्षिणाम्नाय-निर्वाण-दक्षिणकालि   उत्तराम्नाय-निर्वाणगुह्यकालि

अधराम्नाय-निर्वाण-महोग्रतारे   उर्ध्वाम्नायनिर्वाणश्रीमहात्रिपुरसुन्दरि

चतुर्दशबीजसहित-द्विकूटात्मिका-निर्वाणबगले (समयाविद्ये) ६३०

द्वादशबोजसहित-चतुष्कूटात्मिका-निर्वाण-कालदात्रि (समयाविद्ये)

दशजीजसहित-षट्कूटात्मिका-निर्वाण जयदुर्गे (समयाविद्ये)

अष्टबीजसहित-अष्टकूटात्मिका-निर्वाणछिन्नमस्ते (समयाविद्ये)

षड्वीजसहितदशकूटात्मिका-निर्वाणमहा-त्रिपुरसुन्दरि (समयाविद्ये)

अघोरकुब्जिके   तारासुन्दरि

वज्रकुब्जिके   रमासुन्दरि

समयकुब्जिके   मायासुन्दरि

घोरकुब्जिके   वाक्सुन्दरि

वीरकुब्जिके

जयकुब्जिके   दिव्यसुन्दरि

सिद्धकुब्जिके   ६४० परासुन्दरि

भोगकुब्जिके   निर्वाणसुन्दरि ५५०

मोक्षकुब्जिके   मोक्षसुन्दरि

कामसुन्दरि   निर्वाणमहात्रिपुरसुन्दरि

सप्तकोटिनिर्वाणसिद्धान्त-सर्वाधिकारस्वरूपिणि महात्रिपुरसुन्दरि

सर्वाधिकारनिर्वाणगुरुपङ्क्तिमहानिर्वाणभैरवपरापररहस्ययोगिनि

चतुर्बीजसहितद्वादशकूटात्मिका-निर्वाण-महात्रिपुरसुन्दरि

बीजद्वयसहित-चतुर्दशकूटात्मिका-निर्वाणमहात्रिपुरसुन्दरि

षोडशकूटात्मिका-निर्वाणमहात्रिपुरसुन्दरि अष्टादशि (चक्रनायिका)

सर्वाम्नायनायिकामहात्रिपुरसुन्दरि

६६० त्रिखण्डामुद्रे

मोक्षसिद्धे

परब्रह्मात्मकचक्राधिष्ठात्री-महात्रिपुरसुन्दरि

परापररहस्योगिनी   राकिनीसहित-सदाशिव

कलाध्वन्   लाकिनीसहित-विष्णो

तत्त्वाध्वन्   काकिनीसहित-ब्रह्मनाथ

वर्णाध्वन्   साकिनीसहित-गणनाथ

भुवनाध्वन्   हाकिनीसहितपरमात्मन्

पदाध्वन्   याकिनीसहितस्वगुरो

मन्त्राध्वन्   श्रीमहात्रिपुरसुन्दरि

तत्वात्मन्   ६७० श्रीमहात्रिपुरसुन्दर

डाकिनीसहित-जोवेश्वर

मोक्षसिद्धे
त्रिखण्डामुद्रे
सर्वदर्शनोत्तीर्णस्वरूपिणि ६८०
सर्वाध्वशोधनचक्रस्वामिनि
परापररहस्ययोगिनि नमस्ते नमस्ते
नमस्ते । (स्वाहा) ।६८४
ॐ श्रीं ह्रीं ऐं ।

समष्टिपूजनम्—

सर्वाम्नायात्मकोर्ध्वाम्नायेशी-भासाचक्राधिष्ठात्री-भासाचक्रनिलया-श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरी-विलीनभासामहाकामेश्वरी-समस्त-श्रीचक्रपीठादिभासान्तपाशुपतस्वरूप-महापाशुपतविद्यातदूर्ध्वं ज्योतिरूर्ध्ववक्त्रशिवादिस्वगुरुपूर्वक-सर्वाम्नायात्मकभासाकूटदेवताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमस्करोमि ।

— समष्टि-पुष्पाञ्जलिः —

ॐ एं ह्रीं श्रीं समस्त-परापर-रहस्यातिरहस्य-रहस्य-निगर्भ-कुलोत्तीर्ण-सम्प्रदाय-गुप्ततर-गुप्त-मातृका-प्रकटयोगिनी-देवताभ्यो नमः ।

(इति समष्टिपुष्पाञ्जलिं समर्प्य नैवेद्यं च निवेद्य पूर्ववदुत्तरन्यासान् विधाय ध्यानपूर्वकं श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै पूजां समर्पयेत् ।[1])

॥ श्रीपरदेवतार्पणमस्तु ॥



१– इस 'खड्गमाला' के अन्य प्रयोगो के बारे में देखिए—"प्राक्कथन"

विशेष-सूचना—

कतिपय साधक प्रातः, मध्याह्न और सांयकालीन उपासना क्रम की पूर्ति के पश्चात् तुरीयकाल में भी भगवती के श्रीयन्त्र की आवरण-पूजा करते हैं, अतः उनके लिये तुरीया-पूजा में जो विशेष क्रम होता है उसका विधान आगे दिया जा रहा है ।

तुरीयोपासकानां कृते विशिष्ट-पूजाक्रमः

(अष्टदल-मूलवृत्ते वामाद्याः शक्तयः)

	१- वामे	४- अम्बिके	
	२- ज्येष्ठे	५- इच्छे	
	३- रौद्रि	३- ज्ञाने	
लयक्रमस्य	७- क्रिये		सृष्टिक्रमस्य
|	८- कुब्जिके	१३- खेचरि	|
चतुर्थावरणे	९- विल्वि	१४- उमे	सप्तमावरणे
	१०- चित्रे	१५- विजये	
	११- विषघ्निके	१६- नन्दे	
	१२- भूचरि	१७- सुनन्दे	

(चतुर्दशार-चक्रस्य पार्श्वयोरग्रे बिन्दुमध्ये च चतस्रोऽवस्थाः)

लयक्रमस्य	१- (उत्तरे) जाग्रदवस्थादेवि	३- अग्रतः सुषुप्त्यवस्थादेवि	सृष्टिक्रमस्य
पंचमावरणे	२- (दक्षिणे) स्वप्नावस्थादेवि	४- तुरीयावस्थादेवि	षष्ठावरणे

(बहिर्दशार-चक्रस्य पार्श्वयोरग्रे (मध्ये च) षड्वाचः शक्तयः)

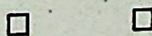
लयक्रमस्य	ॐ लीनावाक्शक्ते	" मध्यमावाक्शक्ते	सृष्टिक्रमस्य
षष्ठावरणे	ॐ अपरावाक्शक्ते	" पश्यन्तीवाक्शक्ते	पंचमावरणे
	" परावाक्शक्ते	" वैखरीवाक्शक्ते	

(अन्तर्दशार-चक्रस्य पार्श्वयोरग्रे च पञ्च-कामपूजा)

लयक्रमस्य	ॐ काम	" कन्दर्प	सृष्टिक्रमस्य
सप्तमावरणे	" मन्मथ	" मकरध्वज	चतुर्थावरणे
		" मीनकेतो	

(वसुकोण-पार्श्वयोरग्रे च पञ्चबाण-देवताः)

लयक्रमस्य	१- ॐ क्षों क्षोभणबाणदेवते	३- " आं आकर्षणबाणदेवते	सृष्टिक्रमस्य
अष्टमावरणे	२- ,, द्रां द्रावणबाणदेवते	४- " वं वश्यकृद्बाणदेवते	तृतीयावरणे
		५- " सं सम्मोहनबाणदेवते	



□स्तुतिपद्यानि—

वालार्कारुणतेजसं त्रिनयनां रक्ताम्वरोल्लासिनीं,
नानालङ्कृतिराजमानवपुषं वोलोडुराट् शेखराम् ।
हस्तैरिक्षु-धनुः-सृणो-सुमकरां पाशं मुद्रां बिभ्रतीं,
श्रीचक्रस्थितसुन्दरीं त्रिजगतामाधारभूतां भजे ॥

Λ Δ Δ Δ

ह्रोङ्कारासनगर्भितानलशिखां सौः क्लीं कलां बिभ्रतीं,
सौवर्णाम्वरधारिणीं वरसुधाधौतां त्रिनेत्रोज्ज्वलाम् ।
वन्दे पुस्तकपाशमङ्कुशधरां स्रग्भूषितामुज्ज्वलां,
त्वां गौरीं त्रिपुरां परात्पर-कलां श्रीचक्रसञ्चारिणीम् ॥

□ □ □ □

आरक्ताभां त्रिनेत्रामरुणिमवसनां रत्नाताटङ्करम्यां,
हस्ताम्भोजैः सपाशाङ्कुशम दनधनुः सायकैर्विस्फुरन्तीम् ।
आपीनोतुङ्गवक्षोरुहविलुठत्तारहारोज्ज्वलाङ्गीं,
ध्यायेदम्भोरुहस्थामरुणिमवसनामीश्वरीमीश्वराणाम् ॥

□ □ □ □

प्रसीद परदेवते मम हृदि प्रभूतं भयं,
विदारय दरिद्रतां दलयं देहि सर्वज्ञताम् ।
निधेहि करुणानिधे चरणपद्मयुग्मं स्वकं,
निवारय जरामृतिं त्रिपुरसुन्दरि श्रीशिवे ॥

□ □ □ □

चिन्तां मोचय सम्पदं वितर मे स्त्री-पुत्र-पौत्रान्वितां,
दारिद्र्यं दलयाशु लम्ब कवितास्फूर्तिं कुरुष्वाम्बिके ।
ज्ञानं देहि रिपूञ्जयं क्षयमिह ध्वान्तं विधेह्याज्ञया,
शोकं नाशय बालशीतकिरणोत्तंसप्रिये ! पाहि माम् ॥

॥ श्रीपरदेवतार्पणमस्तु ॥

दुर्गासप्तशत्यन्तर्गता श्रीविद्यार्णव-सम्मता
श्रीचक्रावरणार्चने नवरात्रपूजाक्रमेण
लयक्रम-समन्विता

षष्ट्युत्तरत्रिशत-शक्तिनामावली

※

(प्रतिपदायां भूपुरे त्रिपुरादेवी प्रकाशानन्दनाथदिने)

श्रीनित्यायै नमः
जगन्मूर्तये
देव्यै
भगवत्यै
महामायायै
प्रसन्नायै
वरदायै
मुक्तिदायिन्यै
परमायै
हेतुभूतायै १०
सनातन्यै
संसारबन्धहेतवे
सर्वेश्वर्यै
ईश्वर्यै
योगनिद्रायै
हरिनेत्रकृतालयायै
विश्वेश्वर्यै
जगद्धात्र्यै
स्थितिकारिण्यै
संहारकारिण्यै २०

श्रीनिद्रायै नमः
भगवत्यै
अतुलायै
तेजसांनिधये (प्रभवे)
स्वाहायै
स्वधायै
वषट्कारायै
स्वरात्मिकायै
सुधायै
अक्षरायै ३०
त्रिधामात्रात्मिकायै
अर्धमात्रात्मिकायै
स्वरस्वरूपिण्यै
अनुच्चार्यायै
सन्ध्यायै
सावित्र्यै
जनन्यै
परायै
सृष्टिरूपायै
जगद्योन्यै ४०

(द्वितीयायां त्रिवृत्त-चक्रे त्रिपुरेशिनीदेवी विमर्शानन्दनाथदिने)

श्रीस्थितिरूपायै नमः
संहृतिरूपायै
जगन्मयायै
महाविद्यायै
महामायायै
महामेधायै
महास्मृत्यै
महामोहायै
भवत्यै
महादेव्यै ५०
महासुर्यै (महेश्वर्यै)
प्रकृत्यै
सत्त्वादिगुणत्रयविभाविन्यै
कालरात्र्यै
महारात्र्यै
मोहरात्र्यै
दारुणायै
सुरेश्वर्यै
ह्रियै
बुद्ध्यै ६०

श्रीबोधायै नमः
सुलक्षणायै
लज्जायै
पुष्ट्यै
तुष्ट्यै
शान्त्यै
क्षान्त्यै
खड्गिन्यै
शूलिन्यै
घोरायै ७०
गदिन्यै
चक्रिण्यै
शङ्खिन्यै
चापिन्यै
बाणायै
भुशुण्ड्यै
परिघायुधायै
सौम्यायै
सौम्यतरायै
सुन्दर्यै ८०

(तृतीयायां षोडशारचक्रे त्रिपुरेशीदेवता आनन्दानन्दनाथदिने)

श्रीपरायै नमः
परमायै
परमेश्वर्यै
सदात्मिकायै
असदात्मिकायै
सदसदात्मिकायै
अखिलात्मिकायै
नार्यै
शिवायै
सिंहवाहिन्यै ९०
अम्बिकायै

श्रीभद्रकालिकायै नमः
चण्डिकायै
जगन्मात्रे
महिषासुरघातिन्यै
आत्मशक्तये
सर्वानन्दमय्यै
श्रद्धायै
गुणात्मिकायै
सर्वाश्रयायै १००
अव्याकृतायै
" आद्यायै

श्री शब्दात्मिकायै नमः
वार्तायै
आर्तिहन्त्र्यै
मेधायै
दुर्गायै
भवसमुद्रनावे
असङ्गायै
कैटभारातिहृदयैककृतालयायै ११०
गौर्य्यै

श्री सदार्द्रचित्तायै नमः
गीर्वाणवरदायिन्यै
देव्यै
महादेव्यै
शिवायै
भद्रायै
रौद्र्यै
धात्र्यै
ज्योत्स्नायै १२०

(चतुर्थ्याम् अष्टदले त्रिपुरसुन्दरीदेवो ज्ञानानन्दनाथदिने)

श्री-इन्दुरूपिण्यै नमः
सुखायै
कल्याण्यै
ऋद्ध्यै
सिद्ध्यै
कूर्मिकायै
नैर्ऋत्यै
भूभृतां लक्ष्म्यै
शर्वाण्यै
दुर्गायै १३०
दुर्गपारायै
सारायै
सर्वकारिण्यै
क्षान्त्यै
कृत्स्नायै
धूम्रायै
अतिसौम्यायै
अतिरौद्रिण्यै
जगत्प्रतिष्ठायै
कृष्णायै १४०

श्री विष्णुमायायै नमः
चेतनायै
बुद्धिरूपायै
निद्रारूपायै
क्षुधारूपायै
छायारूपायै
शक्तिरूपायै
तृष्णारूपायै
क्षान्तिरूपायै
जातिरूपायै १५०
लज्जारूपायै
शान्तिरूपायै
श्रद्धारूपायै
कान्तिरूपायै
लक्ष्मीरूपायै
वृत्तिरूपायै
धृतिरूपायै
स्मृतिरूपायै
दयारूपायै
तुष्टिरूपायै १६०

(पञ्चम्यां चतुर्दशारचक्रे त्रिपुरवासिनीदेवी सत्यानन्दनाथदिने)

श्रीपुष्टिरूपायै नमः
मातृरूपायै
भ्रान्तिरूपायै
शुभहेतवे
पार्वत्यै
कौशिक्यै
कालिकायै
उग्रचण्डायै
कृष्णायै
हिमाचलकृताश्रयायै १७०
धूम्रलोचनहन्त्र्यै
असिन्यै
पाशिन्यै
विचित्रखट्वाङ्गधरायै
नरमालाविभूषणायै
द्वीपिचर्मपरीधानायै
शुष्कमांसायै
अतिभैरवायै
अतिविस्तारवदनायै
जिह्वाललनभीषणायै १८०

श्रीनिमग्नायै नमः
आरक्तनयनायै
नादापूरितदिङ्मुखायै
भीमाक्ष्यै
भीमरूपायै
चण्डविनाशिन्यै
मुण्डविनाशिन्यै
चामुण्डायै
लोकविख्यातायै
ब्रह्माण्यै १९०
ब्रह्मवादिन्यै
माहेश्वर्यै
वृषारूढायै
त्रिशूलधारिण्यै
वरधारिण्यै
महाबलायै
अहिवलयायै
चन्द्ररेखाविभूषणायै
कौमार्यै
शक्तिहस्तायै २००

(षष्ठ्यां वहिर्दशारचक्रे त्रिपुराश्रीदेवता पूर्णानन्दनाथदिने)

श्रीमयूरवाहनायै नमः
गुहरूपायै
वैष्णव्यै
गरुडोपरिसंस्थितायै
शङ्खहस्तायै
चक्रहस्तायै
गदाहस्तायै
शार्ङ्गहस्तायै
खड्गहस्तायै
वाराह्यै २१०

श्रीनारसिंह्यै नमः
नृसिंहसदृश्यै
घोररवायै
सटाक्षेपक्षिप्तनक्षत्रसंहृत्यै
वज्रहस्तायै
ऐन्द्र्यै
गजराजोपरिस्थितायै
सहस्रनयनायै
शक्रहस्तायै
भीषणायै २२०

श्रीशक्तये नमः
अत्युग्रायै
शिवाशतनिनादिन्यै
अपराजितायै
शिवदूत्यै
कात्यायन्यै
रक्तबीजनाशिन्यै
चन्द्रघण्टिकायै
अष्टादशभुजायै
उग्रायै २३०
निशुम्भासुरघातिन्यै
शुम्भहन्त्र्यै
प्रपन्नार्तिहरायै
विश्वेश्वर्यै
आधारभूतायै
महीरूपायै
अपांस्वरूपायै
आप्यायिन्यै
अलङ्घ्यवीर्यायै
अनन्तवीर्यायै २४०

(सप्तम्याम् अन्तर्दशारचक्रे त्रिपुरमालिनीदेवी स्वभावानन्दनाथदिने).

श्रीबीजस्वरूपिण्यै नमः
सम्मोहिन्यै
विद्यायै
स्वर्गप्रदायिन्यै
मुक्तिप्रदायिन्यै
अशेषजनहृत्संस्थायै
नारायण्यै
शिवायै
कलाकाष्ठादिरूपायै
परिणामप्रदायिन्यै २५०
सर्वमङ्गलमाङ्गल्यायै
शिवायै
सर्वार्थसाधिकायै
शरण्यायै
त्र्यम्बकायै
गौर्यै
सृष्ट्यात्मिकायै
स्थित्यात्मिकायै
लयात्मिकायै
शक्त्यै २६०
श्रीसनातन्यै नमः
गुणाश्रयायै
गुणमयायै
नारायणस्वरूपिण्यै
शरणागतपरित्राणपरायणायै
दीनपरित्राणपरायणायै
आर्तपरित्राणपरायणायै
सर्वस्यार्तिहर्यै
देव्यै
विष्णुरूपायै २७०
परात्परायै
हंसयुक्तविमानस्थायै
ब्रह्माणीरूपधारिण्यै
कौशाम्भोधारिण्यै
क्षुरिकाधारिण्यै
शूलधारिण्यै
चन्द्रधारिण्यै
अहिधारिण्यै
वरधारिण्यै
महावृषभसंरूढायै २८०

(अष्टम्याम् अष्टारचक्रे त्रिपुरासिद्धादेवी प्रतिभानन्दनाथदिने)

श्रीमाहेश्वर्यै नमः
त्रैलोक्यत्राणसहितायै
किरीटवरधारिण्यै
वृत्रप्राणहरायै
शिवदूतीस्वरूपिण्यै
हृतदैत्यायै
महासत्त्वायै
घोररूपायै
महारवायै
दंष्ट्राकरालवदनायै २९०
शिरोमालाविभूषणायै
चामुण्डायै
मुण्डमथन्यै
लक्ष्म्यै
लज्जायै
महाविद्यायै
श्रद्धायै
पुष्ट्यै
सदाध्रुवायै
महारात्र्यै ३००

श्रीमहाविद्यायै
महामेधायै नमः
सरस्वत्यै
वरायै
भीतिदायै
तामस्यै
नियतेशायै
सर्वतः पाण्यन्तायै
सर्वतः पादान्तायै
सर्वतोऽक्ष्यन्तायै ३१०
सर्वतः शिरोन्तायै
सर्वतो मुखान्तायै
सर्वतः श्रवणान्तायै
सर्वतो घ्राणान्तायै
सर्वस्वरूपिण्यै
सर्वेशायै
सर्वरूपायै
सर्वशक्तिसमन्वितायै
समस्तरोगहन्त्र्यै
समस्ताभीष्टदायिन्यै ३२०

(नवम्यां त्रिकोणचक्रे त्रिपुराम्बादेवी सुभगानन्दनाथदिने)

श्रीविश्वात्मिकायै नमः
विश्वेशवन्द्यायै
पापहारिण्यै
उत्पातपाकजनितोपसर्गचयनाशिन्यै
विश्वार्तिहारिण्यै
त्रैलोक्यवरदायिन्यै
नन्दगोपगृहेजातायै
यशोदागर्भसम्भवायै
विन्ध्याद्रिवासिन्यै
रौद्ररूपिण्यै ३३०

श्रीरक्तदन्तिकायै नमः
दाडिमीकुसुमप्रख्यायै
अयोनिजायै
शतलोचनायै
भीमायै
शाकंम्भर्यै
दुर्गायै
दानवेन्द्रविनाशिन्यै
महाकाल्यायै
महाकाल्यै ३४०

श्रोमहामायै नमः
अजायै
लक्ष्मीप्रदायै
वृद्धिप्रदायै
नित्यायै
पुत्रपौत्रवर्धिन्यै
शैलपुत्र्यै
ब्रह्मचारिण्यै
चन्द्रघण्टायै
विशालाक्ष्यै ३५०

श्रीकुष्माण्डायै नमः
वेदमातृकायै
स्कन्दमात्रे
गणेश्यै
विरूपाक्ष्यै
अम्विकायै
महागौर्यै
महावीर्यायै
महाबलायै
महापराक्रमायै नमः ३६०

(दशम्यां बिन्दौ समाष्टिपूजेति ।)

※ देवीनामावली के सम्बन्ध में—

जो साधक प्रतिदिन एक-आवरण (४० नाम) की पूजा करते हैं वे विजय दशमी को विन्दु में समस्त ३६० नामों से अर्चन करें ।

प्रायः इस अर्चना के तीन प्रकार प्रचलित हैं—

१– दैनिक आवरणार्चन के पश्चात् जहां सहस्रनामार्चन किया जाता है। वहीं इन ३६० नामों से भी अर्चना की जातो है ।

२– प्रत्येक आवरणार्चन की पूर्ति के पश्चात् जहां "एता······चक्र·········योगिन्यः सम्पूजिताः" इत्यादि समर्पण से पूर्व ४०-४० नामों से अर्चना करते है तथा नौ आवरणों की पूर्ति के पश्चात् पुनः सम्पूर्ण आर्वर्तन द्वारा विन्दु में अर्चना होती है ।

३– जो साधक केवल नौ आवरणों वाली पूजा करते हैं, वे अन्तिम आवर्त्तन नहीं करते हैं ।

'अधिकस्याधिकं फलम्' के अनुसार प्रत्येक चक्र की देवी का ध्यान और उनके मन्त्र श्रीचक्रपूजाक्रमवत् ही ग्राह्य हैं । इस दृष्टि से ध्यान और मन्त्र के साथ स्वतन्त्र केवल इन्हीं नामों से भी पूजा हो सकती है। यह पूजा शारद नवरात्र में अथवा नाथवासरों में पुष्पों द्वारा करने का भी निर्देश है ।

प्रत्येक चक्र की देवी का ध्यान वहां इस प्रकार बताया गया है—

१. भूपुरे— शुद्धस्फटिकवर्णाभां त्रिनेत्रां च चतुर्भुजाम् ।
पुस्तकञ्चाक्षसूत्रं च पद्मद्वयकरां शुभाम् ॥१॥
अणिमादि-सुसंयुक्तां सौख्यदां सिद्धिदायिनीम् ।
त्रैलोक्यमोहने वन्दे त्रिपुरां चतुरस्रके ॥ २॥

२. त्रिवृत्ते— रक्तवर्णां त्रिनेत्रां च पुस्तकाक्ष-वराभयैः ।
शोभितां हस्तकमलां महावृत्तत्रयाधिपाम् ॥३॥
मातृकायोगिनीयुक्तां मुद्रायुधविराजिताम् ।
त्रैवर्ग्यसाधके चक्रे वन्दे श्रीत्रिपुरेशिनीम् ॥४॥

३. षोडशदले— शुभ्रां चतुर्भुजां वन्दे पाशाङ्कुशवराभयैः ।
भूषितां षोडशाराब्जे त्रिपुरेशीं सुरेश्वरीम् ॥५॥

४. अष्टदले— रक्तवर्णां चतुर्हस्तां पुस्तकाक्ष-वराभयैः ।
विभूषितां सर्वसंक्षोभणाष्टदलचक्रके ॥६॥
अनङ्गकुसुमाद्यष्ट-देवीभिः परिवारिताम् ।
त्रिनेत्रां सस्मितां वन्दे देवीं त्रिपुरसुन्दरीम् ॥७॥

५- चतुर्दशारे— रक्तवर्णां चतुर्हस्तां पुस्तकाक्षवराभयैः ।
भूषितां सर्वसौभाग्यदायके मनुकोणके ॥८॥
सर्वसंक्षोभिणीशक्तिप्रभृतिप्रावृतां पराम् ।
मातरं स्थिरया भक्त्या वन्दे त्रिपुरवासिनीम् ॥९॥

६. बहिर्दशारे— सहस्रार्कसमाभासां पुस्तकाक्षवराभयैः ।
शोभितां हस्तकमलां दशारे बाह्यचक्रके ॥१०॥
सर्वसिद्धिप्रदाद्याभिर्देवीभिः परिवारिताम् ।
सर्वार्थसाधके चक्रे वन्दे श्रीत्रिपुराश्रियम् ॥११॥

७. अन्तर्दशारे— रक्तवर्णां त्रिनयनां पाशाङ्कुश-कपालकम् ।
वराभयाक्षमालां च करेषु दधतीं पराम् ॥१२॥
सर्वज्ञादि-समायुक्तां देवीं त्रिपुरमालिनीम् ।
चक्रे ह्यन्तर्दशाराख्ये सर्वरक्षाकरे भजे ॥१३॥

८. अष्टारे— शुक्लवर्णां त्रिनयनां पाशाङ्कुश-कपालिनीम् ।
वाग्देवताऽष्टकयुतां सर्वालङ्कार-भूषिताम् ॥१४॥
मातरं त्रिपुरासिद्धां सायुधां च सशक्तिकाम् ।
सर्वरोगहरेऽष्टारे चक्रे चक्रेश्वरीं भजे ॥१५॥

९. त्रिकोणे— रक्ताम्बरां मुण्डमालां पुस्तकाक्षवराभयैः ।
शोभितां त्र्यस्रमध्यस्थां शक्तित्रय-समन्विताम् ॥१६॥
सर्वसिद्धिप्रदे चक्रे सर्वसिद्धिप्रदायिकाम् ।
सर्वालङ्कारसंयुक्तां वन्दे श्रीत्रिपुराम्बिकाम् ॥१७॥

१० बिन्दौ— सूर्येन्द्वग्निमयैकपीठनिलयां बालार्कबिम्बारुणां,
त्र्यक्षां चन्द्रकलावतंसमुकुटां पीनस्तनीं सुन्दरीम् ।
पाशं चाङ्कुशमिक्षुचापविधृतां पुष्पेषुहस्तां परां,
नानाभूषणभूषितातिसुकुमाराङ्गीं भजे बैन्दवे ॥१८॥

श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-त्रिशती-नाममाला[1]

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं
कामेश्यै नमः
कामदायै
काम्यायै
कमनीयायै
कुलेश्वर्यै
कामाख्यायै
कञ्जपत्रास्यायै
कामदेवप्रपूजितायै
कालनिर्नाशिन्यै
काल्यै १०
कदम्बवनचारिण्यै
कालरात्रीस्वरूपायै
कान्तारवनवासिन्यै
कामिन्यै
कामिकायै
कान्तायै
कालेश्यै
कुलपूजितायै
कादम्बरीप्रियायै
कुल्लायै २०
कुरुकुल्लायै
कपालिन्यै
कपर्दिन्यै
कामकलायै
कलायै (कलासायै)
कलात्मिकायै
काम्बोजायै
कालदोषघ्न्यै
कुलमार्गविवर्धिन्यै
क ५ स्वरूपायै ३०
कामराजात्मिकायै
कलायै
कम्बुकण्ठ्यै
कुलीनायै
कुलीनाचारतत्परायै
कादिवर्णायै
कहायै
कक्षायै
कक्षदेशनिवासिन्यै
कूर्मरूपायै ४०
कूर्मसंस्थायै
कूर्मपृष्ठविहारिण्यै
कमलाक्ष्यै
कुलश्रेष्ठायै

१- यह त्रिशतीनाममाला श्रीदेवी के आग्रह से भगवान् शिव ने व्यक्त की है। प्रसंगवश वहाँ बतलाया गया है कि महर्षि-अगस्त्य ने देवी से प्रार्थना की थी कि—कलियुग में लोग आपकी अर्चना, मन्त्रजप आदि करने में अशक्त हो जाएँगे,' तब उन्हें सरलता से सिद्धि कैसे मिलेगी ? इसके लिये आप रहस्य बताएँ तब भगवती ने उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर यह त्रिशती प्रदान की । इसका विधान भी वहां दिखलाया गया है जिसका सार यह है कि— पूजा के पश्चात् विन्दुचक्र में श्रीदेवी की पञ्चोपचार पूजा करके इसके द्वारा पुष्पाक्षतार्चन करे अथवा पाठ करे। मूल श्लोकों में जो 'नित्यं', सदा, च आदि अव्यय आये हैं उनको नामों से मुक्त रखा है।

कौलिन्यै
कुलतर्पितायै
कौसुम्भवर्णायै
कौसुम्भायै
कौसुम्भाम्बरधारिण्यै
कवीनामग्रणिये ५०
काव्यायै
कवित्वफलदायिन्यै
काम्यरूपायै
काम्यफलायै
काम्यसिद्धिकर्यै
कामेश्वरप्रियायै
काम्यै
कामरूपनिवासिन्यै
कालबीजस्वरूपायै
कालसङ्कर्षिण्यै ६०
कुजायै
कुन्दपुष्पप्रियायै
कुन्दायै
कुन्दमाल्यविभूषितायै
कर्णिकारसुशोभाढ्यायै
कर्णिकारप्रसूतिकृते
कर्णिकामध्यसंस्थायै
कर्णिकारप्रपूजितायै
कहस्वरूपायै
अकहस्वरूपायै ७०
कहमन्त्रपरायणायै
कादिमन्त्रस्वरूपायै
कादिसिद्धान्तकारिण्यै
कएईल ह्रीं स्वरूपायै
हसकल ह्रीं स्वरूपिण्यै
ऐं क ५ स्वरूपायै
ह्रीं ह ४ ह्रींशरीरिण्यै
ऐं आं ह्रीं सौः कलह्रीं शरीरिण्यै
ऐं आं सौः कलह्रीं शरीरिण्यै
ऐं ऐं ईं कलह्रींरूपायै ८०
क्लीं ह्रीं ऐं कलह्रीं रूपायै
ऐं क्लीं सौः कलह्रीं रूपायै
हसौः ऐं कलह्रीं रूपायै
दक्षिणाम्नायरूपायै
पश्चिमाम्नायरूपायै
शाम्भव्यै
चतुष्कूटायै
शाङ्कर्यै
षट्कूटायै
भैरव्यै ९०
क ५ ह ५ हकहल ह्रीं कएईलह्रीं कह-
कह सलह्रीं पञ्चकूटात्मिकाविद्यायै
क ५ ह्रीं कलह्रीं नादबिन्दुस्वरूपिण्यै
कूटस्थायै
कूटमन्त्रस्थायै
उपकूटस्वरूपिण्यै
भावकूटस्थितायै
कामकूटनिवासिन्यै
यन्त्रकूटमयीदेव्यै
मन्त्रकूटविधायिन्यै
पञ्चकूटमहामन्त्रपालिन्यै १००
कूटरूपिण्यै
कौलिकाचारसन्तुष्टायै
कौलिकानन्ददायिन्यै
कुलमन्त्रायै
कुलद्रव्यायै
कुलीनाचारगोपिन्यै
काल्यै
कामेश्वर्यै
नित्यायै

कुल्लुकायै ११०
क्लींस्वरूपिण्यै
क ५ ह ६ स४ स्वरूपिण्यै
हसक्षमलवरयूं हक्षमलवरयीं स्वरूपिण्यै
उन्मनीबीजसंयुक्तायै
बीजसर्वाङ्गसुन्दर्यै
ऐं क्लीं सौःत्र्यक्षरीविद्यायै
ह्रीं क्लीं सौः
श्रीरमायै
परायै
हसौः हस्क्लीं हसौः श्रीं हसौः विद्यायै
डामरेश्वर्यै
हसौः क्लीं हसौः श्रीं क्लीं हसौः श्रीं-
विद्यायै
कवर्गायै
कुलिशान्तायै
कुमार्यै
कपटेश्वर्यै
काहंसिकभयत्राणायै
भानुमण्डलचारिण्यै
भानव्यै
भानुतेजस्विन्यै १३०
भीमायै
भानुप्रपूजितायै
भालचक्रस्थितायै
भालरेखाविनाशिन्यै
श्रीविद्याषोडशाक्षर्यै
विन्दुचक्रस्वरूपायै
षोडशाधारसंस्थितायै
षोडशारप्रतिष्ठायै
षोडशस्वरभूषितायै
षोडशीमन्त्ररूपायै १४०
षोडशाक्षररूपिण्यै

शृङ्गारषोडशाराध्यायै
कलायै
षोडशरूपिण्यै
मन्त्रदेहायै
मन्त्रपदायै
मन्त्रशीर्षायै
मन्त्रहृदे
मन्त्रमालायै
महामन्त्रायै १५०
मन्त्रदेहस्वरूपिण्यै
ऐं शीर्षायै
क्लीं मस्तकायै
सौः ग्रीवायै
ह्रीं बाहुकायै
श्रींस्तनायै
कूटसर्वाङ्ग्यै
ओङ्कारप्राणरूपिण्यै
ह्रौं रूपायै
ह्सौः रूपायै १६०
हूंहूंकारप्रणादिन्यै
हसक्षमलरूपायै
स्हक्षमलरूपिण्यै
कलह्रीं मन्त्ररूपायै
सकलह्रीं स्वरूपिण्यै
सुधामसुद्रमध्यस्थायै
सुधापानपरायणायै
सुधाक्षरमहामन्त्रायै
सुधाधाराप्रवर्द्धिन्यै
पद्मायै १७०
पद्मावत्यै
पद्मधारिण्यै
पद्मचारिण्यै
षट्कोटिमन्त्ररूपायै

नवत्यर्बुदसिद्धिदायै
पाशधरायै
अङ्कुशधरायै
धन्यायै
धरण्यै
धारिण्यै १८०
धरायै
धर्मधात्र्यै
धुरीणायै
धर्मश्रियै
धर्मसाक्षिण्यै
स्वधर्मपालिन्यै
धर्मायै
धर्मनिन्दकनाशिन्यै
त्वरितायै
अन्नपूर्णायै १९०
पूर्णायै
महिषमर्दिन्यै
परस्यै
परमात्मने
परमायै
परमज्योतीरूपिण्यै
परोपकारिण्यै
पुण्यायै
अपुण्यविनाशिन्यै
पापविनाशिन्यै २००
जालन्धर्यै
जलेश्यैं
जलतत्त्वस्वरूपिण्यै
जयदायै
ज्वालिन्यै
ज्वालायै
जालन्धरनिवासिन्यै
चन्द्रधरायै
चन्द्रचक्रिण्यै
चान्द्र्यै २१०
चक्रेन्द्रपूजितायै
चन्द्रमण्डलमध्यस्थायै
शरच्चन्द्रसमप्रभायै
कोटिचन्द्रसमाभासायै
रात्रिचन्द्रसमाननायै
सहस्रचन्द्रशीताङ्ग्यै
वालचन्द्रकिरीटिन्यै
योनिरूपस्वरूपायै
यौवनोन्मत्तरूपिण्यै
वृद्धायै २२०
बालायै
युवत्यै
युवतीमण्डलप्रियायै
भुवनेश्यै
भयत्रात्र्यै
भगेश्यै
भगपूजितायै
भैरव्यै
भूतिन्यै
भव्यायै २३०
भैरवानन्दवर्धिन्यै
सम्पत्प्रदाभैरव्यै
षट्कूटाभैरव्यै
त्रिपुराभैरव्यै
भीमाभैरव्यै
कौलेशभैरव्यै
आनन्दभैरव्यै
मायाभैरव्यै
कुलभैरव्यै
श्रीबालाभैरव्यै २४०
भीमाभैरव्यै

ज्ञानभैरव्यै
कौलेशीभैरव्यै
छिन्नाभैरव्यै
श्रीमहाकालभैरव्यै
संहारभैरव्यै
गुह्याभैरव्यै
कौलिकानन्दभैरव्यै
राजराजेश्वर्यै
राज्यै २५०
षट्चक्रकुलनायिकायै
षट्चक्रभेदिन्यै
मेधायै
सहस्रारनिवासिन्यै
श्रीचक्रमध्यसंस्थायै
श्रीचक्रक्रमपूजितायै
संहारक्रमपूज्यायै
सृष्टिक्रमप्रपूजितायै
सुन्दर्यै
सुन्दराङ्ग्यै २६०
महात्रिपुरसुन्दर्यै
श्रीमहासुन्दर्यै
कालसुन्दर्यै
शिवसुन्दर्यै
मन्दारकुसुमप्रीतायै
मन्दराचलवासिन्यै
मदिरायै
मदिराक्ष्यै
मदिरानन्दकारिण्यै
मदनोन्मत्तरूपायै २७०
मदनान्तकवल्लभायै
रतिरूपायै
रतानन्दायै
रतिकामप्रदायिन्यै
रतिपुष्पप्रियायै
रम्यायै
रमण्यै
रामण्यै
रत्यै
रक्तवर्णायै २८०
रक्ताक्ष्यै
रक्तपानपरायणायै
रक्तपुष्पप्रियायै
देव्यै
पायिन्यै
रक्ततर्पितायै
कुमार्यै
चर्चिकायै
चण्ड्यै
चण्डासुरविनाशिन्यै २९०
चण्डाट्टहासिन्यै
चण्डायै
चामुण्डायै
चण्डनायिकायै
पञ्चम्यै
मन्त्रवर्णाढ्यायै
पञ्चमाचारपूजितायै
पञ्चवर्षस्थितायै
पञ्चस्वर्चिकायै
पञ्चचर्चिकायै नमो नमः । ३००

इति सम्पूज्य पूर्ववद् न्यासादिकं विधाय श्रीदेव्यै समर्पयेत् ।
क्षमाप्रार्थनां च कुर्यात् । श्रीप· देवतार्पणमस्तु ।।

श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी त्रिशती-नाममाला
के सम्बन्ध में
विशेष ज्ञातव्य

नित्य अथवा नैमित्तिक अर्चना में विभिन्न प्रकार की नामावलियों से अर्चना की जाती है। नामावलियां आगमों-तन्त्रों में अनेक रूपों में उपलब्ध हैं उनमें यह नाममाल भी अत्यन्त सिद्धमन्त्रगर्भ है।

इस नामावली के अन्त में भगवान् शिव ने कहा है कि—

इति ते कथितं देवि ! त्रिशती-स्तोत्रमुत्तमम् ।
यस्य संस्मरणादेव त्रैलोक्य-विजयी भवेत् ॥ ७५॥ इत्यादि ।

इसके अनुसार यह नामावली अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। 'श्रीललितात्रिशती-स्तोत्र" की जिस प्रकार यह प्रसिद्धि है कि अन्य न्यास, पूजा, जपादि कर्म यदि यथासमय सम्पन्न नहीं किये जा सकें तो इसका पाठ करने से उनकी पूर्ति हो जाती है। और इसी लिये उसका अपरनाम "सर्वसम्पूर्तिकर-स्तव" भी कहा गया है। उसी प्रकार महाषोडशी के उपासकों के लिये यह त्रिशती-नाममाला 'सर्वसम्पूर्तिकर' मानी गई है।

इसके माहात्म्य में तो यहां तक कहा गया है कि—

प्रातः काले च सन्ध्यायां निशायां भक्तिसंयुतः ।
यः पठेत् त्रिशतीस्तोत्रं स एव श्रीसदाशिवः ॥ ७६॥

यह नाममाला 'श्रीसुन्दरीस्तव' नाम से भी अभिहित है। जैसे अन्य नामावलियों के पुरश्चरण तथा विभिन्न काम्य-प्रयोग होते हैं उसी प्रकार उनका भी उक्त माहात्म्यरूप पुष्पिका में समावेश हुआ है। यही कारण है कि इसका यहाँ समावेश किया गया है।



अथ श्रीयन्त्रे लक्ष्मीपूजन-विधानाय

चतुरशीत्युत्तरशत-महालक्ष्मी-नामावली

ध्यानम्— नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते ।
शङ्खचक्रगदा हस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥

ॐ ह्रीं श्रीं सकल ह्रींरूपिणीं श्रीशक्तिपादुकां पूजयामि ।[1]

हारनूपुरसंयुक्तायै	नमः		हिरण्यवर्णायै नमः	,,	२०
कमलद्वयधारिण्यै	,,		हरिण्यै	,,	
लक्ष्म्यै	,,		सुवर्णललितस्रजायै	,,	
परशिवमय्यै	,,		समस्तसम्पत्सुखदायै	,,	
शुद्धजाम्बूनदप्रभायै	,,		अखिलसौभाग्यदायिन्यै	,,	
तेजोरूपायै	,,		समस्तकल्याणकर्यै	,,	
कमलवसत्यै	,,		ज्ञानदायै	,,	
विश्वमोहिन्यै	,,		हरिप्रियायै	,,	
सर्वभूषोज्ज्वलायै	,,		विज्ञानसम्पत्सुखदायै	,,	
बीजापूरधरायै	,,	१०	अश्वपूर्णायै	,,	
आद्याशक्तये	,,		हिरण्मय्यै	,,	३०
सकलजनन्यै	,,		विचित्रवाग्भूतिकर्यै	,,	
कलशधारिण्यै	,,		रथमध्यायै	,,	
विष्णुवामाङ्गसंस्थायै	,,		मनोहरायै	,,	
कमलालयायै	,,		हस्तिनादप्रमोदायै	,,	
श्रीमत्सौभाग्यजनन्यै	,,		अनन्तसौभाग्यदायिन्यै	,,	
भार्गव्यै	,,		सर्वभूतान्तरस्थायै	,,	
सनातन्यै	,,		स्वर्णप्राकारमध्यगायै	,,	
सर्वकामफलावाप्तिसाधनसुखावहायै	,,		समस्तभूतेश्वर्यै	,,	

१- यह विधान 'श्रीविद्यार्णव' में वर्णित है। १८४ नामों की इस माला में लक्ष्मी के सभी महत्त्वपूर्ण नामों का समावेश हुआ है। श्रीसूक्त की ऋचाओं में जो नाम आते हैं, वे भी इस नामावली में आये हैं।

यन्त्रराज की पूजा कर लेने के पश्चात् अक्षत से, पुष्पों से अथवा लक्ष्मी को प्रिय लगनेवाली वस्तुओं —बिल्वफल, आंवला, दाख, कमलगट्टे और तालमखाने से भी यह पूजा की जा सकती है। इससे लक्ष्मी-प्राप्ति होती है।

विश्वरूपायै नमः
प्रभामय्यै " ४०
दारिद्र्यदुःखौघतमोपहन्त्र्यै "
पद्मिन्यै "
दीनार्तिविच्छेददक्षायै "
कृपाकलितलोचनायै "
प्रणतस्वान्तशोकघ्न्यै "
शरणागतरक्षणायै "
शान्त्यै "
कान्त्यै "
पद्मसंस्थायै "
कमनीयगुणाश्रयायै " ५०
क्षान्त्यै "
दान्त्यै "
दुरितक्षयकारिण्यै "
शशिशेखरसंस्थायै "
धनधान्यसमृद्धिदायै "
शक्त्यै "
रक्त्यै "
नित्यपुष्टायै "
रजनीकरसोदरायै "
करीषिण्यै " ६०
भक्त्यै "
भवसागरतारिण्यै "
मत्यै "
सिद्ध्यै "
धृत्यै "
मधुसूदनवल्लभायै "
पुष्ट्यै "
हिरण्यमालायै "
शुभलक्षणलक्षितायै "
अतिदुर्गतिहन्त्र्यै " ७०

वरसद्गतिदायिन्यै नमः
दिविदेवगणाराध्यायै "
भुवनार्तिविनाशिन्यै "
आर्द्रायै "
पुष्करिणी-पुष्ट्यै "
धरणीधरवल्लभायै "
दारिद्र्यदुःखहन्त्र्यै "
भयविध्वंसिन्यै "
श्रीविष्णुवक्षःस्थलगायै "
अशेषसुविभूतिदायै " ८०
लक्षणालक्षिताङ्ग्यै "
पद्मायै "
पद्मासनार्चितायै "
विद्यासम्पत्कर्यै "
देवसङ्घाभिपूजितायै "
भद्रायै "
भाग्यरूपायै "
नित्यायै "
निर्मलबुद्धिदायै "
सत्यायै " ९०
सर्वभूतसंस्थायै "
रत्नगर्भान्तरस्थितायै "
रम्यायै "
शुद्धायै "
कान्तायै "
कान्तिमद्भासिताङ्ग्यै "
सर्वसौख्यप्रदादेव्यै "
भक्तौघाभयदायिन्यै "
श्वेतद्वीपकृतावासायै "
जगन्मात्रे " १००
जगन्मय्यै "
रत्नगर्भस्थितायै "

सौम्यायै नमः
क्षीराम्बुधिकृतालयायै "
प्रसन्नहृदयायै "
परिपूर्णायै "
हिरण्मय्यै "
वसुन्धरायै "
श्रीधरायै "
वसुदोग्ध्र्यै " ११०
कृपामय्यै "
विष्णुप्रियायै "
रत्नगर्भायै "
समस्तफलदायै "
रसातलगतायै "
सुव्रतायै "
हरिप्रियायै "
धरणीगर्भसंस्थायै "
समुन्नतमुख्यै "
समस्तपुरसंस्थायै " १२०
परिपूर्णमनोरथायै "
करुणारसनिःष्यन्दनेत्रद्वयविलासिन्यै "
सर्वराजगृहावासायै "
महालक्ष्म्यै "
गुणान्वितायै "
वैकुण्ठनगरस्थायै "
क्षीरसागरकन्यकायै "
योगिहृत्पद्मसंस्थायै "
कल्पवल्ल्यै "
दयावत्यै " १३०
भक्तचिन्तामण्यै "
आदिमायायै "
इन्दिरायै "
रमायै

निराकारायै नमः
साकारायै "
ब्रह्माण्डचयधारिण्यै "
एकनाथायै "
आद्यलक्ष्म्यै "
अज्ञानहन्त्र्यै " १४०
गुणातिगायै "
प्रज्ञानलोचनायै "
अशेषवाग्जाड्यमलहारिण्यै "
सुस्पष्टवाक्प्रदायै "
सर्वसम्पद्विराजितायै "
प्रभालावण्यसुभगायै "
दोग्ध्र्यै "
स्वर्णप्रदायै "
समस्तविघ्नौघहन्त्र्यै "
भोगदायै " १५०
विचक्षणायै "
देवाधिनाथवन्द्यायै "
दीनपोषणतत्परायै "
माङ्गल्यबीजमहिम्ने "
निधिरूपिण्यै "
अनन्तगायै "
आद्यायै "
आदिलक्ष्म्यै "
महासिद्धलक्ष्म्यै "
राजलक्ष्म्यै " १६०
दिव्यलक्ष्म्यै "
सुश्रियै "
मङ्गलदेवतायै "
भक्तिदायै "
भुक्तिदायै "
मुक्तिदायै "

सदगतिप्रदायै (सङ्गति?)	नमः		गोदाय्यै	नमः	
कोर्तिदायै	,,		धनदाय्यै	,,	
धनदायै	,,		महाधनायै	,,	
पुत्रपौत्रविवर्धिन्यै	,,	१७०	चन्द्रसूर्याग्निसर्वाभायै	,,	
पद्माननायै	,,		जातवेदास्त्रसंस्थितायै	,,	१८०
पद्मोर्वे	,,		दिग्गजेन्द्रसमाराध्यायै	,,	
पद्माक्ष्यै	,,		दिव्यभूषणभूषितायै	,,	
पद्मसम्भवायै	,,		सर्वसम्पत्प्रदायै	,,	
अश्वदाय्यै	,,		सर्वार्थसाधिन्यै	नमो नमः	१८४

महालक्ष्मी-नामावली के सम्बन्ध में ज्ञातव्य

यह नामावली भगवान् शिव के द्वारा कथित है। इसके आरम्भ में कहा गया है कि-

शीघ्रसम्पत्समृद्ध्यर्थं भार्गवेण कृता पुरा ।
श्रीमत्त्रिपुरसुन्दर्याः सा पूजा कथ्यते मया ।। ३ ।।
यथाऽतिमन्दभाग्योऽपि कुबेरसदृशो भुवि ।
जायते नात्र सन्देहस्तां पूजां शृणु वल्लभे ।। ४ ।।

"शीघ्रसम्पत्ति की प्राप्ति के लिए पहले भार्गव-श्रीपरशुराम ने जिस पूजा का आश्रय लिया था, उस श्रीत्रिपुसुन्दरी का पूजा का मैं वर्णन करता हूं। जिससे मन्दभागी मनुष्य भी पृथ्वी पर निःसन्देह कुवेर के समान वन जाता है, उस पूजा को हे देवी ! तुम सुनो' ।

और इसके पश्चात् कहा है कि—

चक्रपूजां विधायादौ नैमित्तिकमथाचरेत् ।
तत्तदावरणस्थानेष्वियं पूजा विधीयते ।। ५ ।। इति ।

यहां आवरणस्थानों पर की जानेवाली पूजा के साथ इसका प्रयोग किस प्रकार होगा, यह ज्ञात नहीं है, अतः इसका स्पष्टीकरण विशेष रूप से गुरु-कृपा से प्राप्त करें। यदि किसी साधक को पूरा प्रयोग ज्ञात हो तो मुझे भी वताने की कृपा करें जिससे अग्रिम संस्करण में स्पष्ट किया जा सके।

इस नामावली के अन्त में— — कहा गया है कि

एताश्च शक्तयो देव्याः पूजनीयाः प्रयत्नतः ।
सर्वसम्पत्समृद्धिः स्यादचिरेण न संशयः ।। ४० ।।
सर्वदा पूजयेद् देवीं कृत्वा चक्रसमर्चनम् ।
तस्य गेहे स्थिरा लक्ष्मीः पुत्रपौत्रानुगामिनी ।। ४१ ।।
शक्तयः शतङ्ख्याताश्चाशीतिश्चतुरुत्तरम् ।



श्री 'गर्भकुलार्णव -रहस्यजीवतन्त्रोक्ता

श्रीदेवीवैभवाश्चर्याष्टोत्तरशतदिव्यनामावली

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं
परमानन्दलहर्यै नमः
परचैतन्यदीपितायै
स्वयम्प्रकाशकिरणायै
नित्यवैभवशालिन्यै
विशुद्धकेवलाखण्डसत्यकालात्मरूपिण्यै
आदिमध्यान्तरहितायै
महामायाविलासिन्यै
गुणत्रयपरिच्छेत्र्यै
सर्वतत्त्वप्रकाशिन्यै
स्त्रीपुंसभावरसिकायै १०
जगत्सर्गादिलम्पटायै
अशेषनामरूपादि-भेदच्छेदरविप्रभायै
अनादिवासनारूपायै
वासनोद्यत्प्रपञ्चिकायै
प्रपञ्चोपशमप्रौढायै
चराचरजगन्मय्यै
समस्तजगदाधारायै
सर्वसञ्जीवनोत्सुकायै
भक्तचेतोमयानन्तस्वार्थवैभव-
विभ्रमायै
सर्वाकर्षणवश्यादिसर्वकर्मधुरन्धरायै २०
विज्ञानपरमानन्दविद्यायै
सन्तानसिद्धिदायै
आयुरारोग्यसौभाग्यबलश्रीकीर्ति-
भाग्यदायै
धनधान्यवस्त्रभूषालेपनमाल्यदायै
गृहग्राममहाराज्यसाम्राज्य-सुखदायिन्यै
सप्तासकलसम्पूर्णसार्वभौमफलप्रदायै
ब्रह्मविष्णुशिवेन्द्रादिपदविश्राणनक्षमायै
भुक्तिमुक्तिमहाभक्तिविरक्त्यद्वैतदायिन्यै
निग्रहानुग्रहाध्यक्षायै
ज्ञाननिर्णैतदायिन्यै ३०
परकायप्रवेशा-दियोगसिद्धिप्रदायिन्यै
शिष्टसञ्जीवनप्रौढायै
दुष्टसंहारसिद्धिदायै
लीलाविनिर्मितानेककोटिब्रह्माण्ड-
मण्डलायै
एकस्यै
अनेकात्मिकायै
नानारूपिण्यै
अर्धाङ्गनेश्वर्यै
शिवशक्तिमय्यै
नित्यशृङ्गारैकरसप्रियायै ४०
तुष्टायै
पुष्टायै
अपरिच्छिन्नायै
नित्ययौवनमोहिन्यै
समस्तदेवतारूपायै
सर्वदेवादिदेवतायै
देवर्षि-पितृसिद्धादियोगिनीभैरवा-
त्मिकायै
निधिसिद्धिमणीमुद्रायै
शस्त्रास्त्रायुधभासुरायै
छत्रचामरवादित्रपताकव्यज-
नाञ्चितायै ५०
हस्त्यश्वरथपदात्यमात्यसेनासुसेवितायै
पुरोहित-कुलाचार्यगुरुशिष्यादिसेवितायै
सुधासमुद्रमध्योद्यत्सुरद्रुमनिवासिन्यै
मणिद्वीपान्तरप्रोद्यत्कदम्बवनवासिन्यै

चिन्तामणिगृहान्तस्थायै
मणिमण्डपमध्यगायै
रत्नसिंहासनप्रोद्यच्छिवमञ्चाधिशायिन्यै
सदाशिवमहालिङ्गमूलसंघट्टयोनिकायै
अन्योन्यालिङ्गसंघर्षकण्डूसंक्षुब्ध-
मानसायै
कलोद्यद्बिन्दुकालिन्यातुर्यनादपरम्परायै ६०
नादान्तानन्दसन्दोहस्वयंव्यक्तवचो-
ऽमृतायै
कामराजमहातन्त्ररहस्याचारदक्षिणायै
मकारपञ्चकोद्भूतप्रौढान्तोल्लाससुन्दर्यै
श्रीचक्रराजनिलयायै
श्रीविद्यामन्त्रविग्रहायै
अखण्डसच्चिदानन्दशिवशक्त्यैक्यरूपिण्यै
त्रिपुरायै
त्रिपुरेशान्यै
महात्रिपुरसुन्दर्यै
त्रिपुरावासरसिकायै
त्रिपुराश्रीस्वरूपिण्यै ७०
महापद्मवनान्तस्थायै
श्रीमत्त्रिपुरमालिन्यै
महात्रिपुरसिद्धाम्बायै
श्रीमहात्रिपुराम्बिकायै
नवचक्रक्रमादेव्यै
महात्रिपुरभैरव्यै
श्रीमात्रे
ललितायै
बालायै ८०
राजराजेश्वर्यै
शिवायै
उत्पत्तिस्थितिसंहारक्रमचक्रनिवासिन्यै
अर्धमेर्वात्मचक्रस्थायै
सर्वलोकमहेश्वर्यै
वल्मीकपुरमध्यस्थायै
जम्बूवननिवासिन्यै
अरुणाचलशृङ्गस्थायै
व्याघ्रालयनिवासिन्यै
श्रीकालहस्तिनिलयायै ९०
काशीपुरनिवासिन्यै
श्रीमत्कैलासनिलयायै
द्वादशान्तमहेश्वर्यै
श्रीषोडशान्तमध्यस्थायै
सर्ववेदान्तलक्षितायै
श्रुतिस्मृतिपुराणेतिहासागमकलेश्वर्यै
भूतभौतिकतन्मात्रदेवताप्राणहृन्मयै
जीवेश्वरब्रह्मरूपायै
श्रीगुणाढ्यायै
गुणात्मिकायै १००
अवस्थात्रयनिर्मुक्तायै
वाग्रमोमामहीमय्यै
गायत्रीभुवनेशानीदुर्गाकाल्यादिरूपिण्यै
मत्स्यकूर्मवराहादिनानारूपविलासिन्यै
महायोगीश्वराराध्यायै
महावीरवरप्रदायै
सिद्धेश्वरकुलाराध्यायै
श्रीमच्चरणवैभवायै नमः । १०८

॥ श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीराजराजेश्वरीपरदेवतार्पणमस्तु ॥

सर्वावरण-समष्टि-पुष्पाञ्जलिः

[सृष्टि-क्रमानुसारिणी]

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कएईल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं लं वं सं हं ईं यं रं कं हं समस्त- परापरातिरहस्यातिरहस्य-रहस्य-निगर्भ-कुलोत्तीर्ण-सम्प्रदाय-गुप्ततर-गुप्त-मातृका-प्रकट-योगिनीदेवताभ्यो नमः ।

(इति लघुसमष्टि-मन्त्रेण पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा
पूजनं तर्पणं नमस्करणं च कुर्यात् ।)

१– बैन्दव-चक्रे

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हं शिवस्वरूप-बैन्दवात्मक-सर्वानन्दमय-लयलयात्मक-चक्राधिष्ठात्री-सर्वंवोरेश्वरी-हसकलरडैं हसकलरडीं हसकलरडौः-त्रिपुरभैरवीचक्र-नायिका-ऐं सर्वयोनि - मुद्रा-देवी-प्राप्तिसिद्धि-शैवदर्शन-वीरकुब्जिकाऽऽम्नाय-नायिका-युत-सर्वज्ञादि-षडङ्गयुवति-रत्यादि-षोडश-परापरयोगिनीमयूखा-४ क ५ ह ६ स ४-श्रीमहाकामेश्वर-सहित-महात्रिपुरसुन्दरीस्वरूपिणी ४ हलकस ह्रीं हसकल ह्रीं हहकल ह्रीं कं हं हस्ख्फ्रें काल-नाद-शिवस्वरूप-वसुकोण-त्रिकोण-बैन्दवात्मक-पश्चिमाम्नायसमष्टिपरपर्याय-महाकीर्तिप्रद-लयचक्राधिष्ठात्री-सर्वसिद्धेश्वरी-साङ्गा-सपरिवारा-साघोरकुब्जिकेश्वराघोरकुब्जिकाम्नायनायिकाससद्यो-जात-४ सहकल ह्रीं हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं-पश्चिमाम्नायसुन्दरीसहितोत्तराम्नाय-तिरोधान - चक्रनिलया-दशानना-सिद्धिकराली- गुह्यकालीस्वरूपिणीं पूजयामि तर्पयामि नमस्करोमि ।

२– त्रिकोण-चक्रे

४ नादस्वरूप-त्रिकोणात्मक-सर्वसिद्धिप्रद-लयस्थित्यात्मक-चक्राधिष्ठात्री-सर्वकामेश्वरी हस्रैं हसकलरीं हस्रौः त्रिपुराम्बाचक्रनायिका हसौः सर्वबीजमुद्रादेवीच्छासिद्धि-शाक्तदर्शन-वज्रकुब्जिकाम्नायनायिकायुत - षोडशी-तुरीया-निद्रालीन-त्याऽष्टादशी- तुरीयातीता-नित्या-परौघ-पङ्क्तियुत-शिवादिस्वगुरुपर्यन्त-त्रिलीन-त्याऽष्टादशो- तुरीयातीता-नित्या-परौघ-पङ्क्तियुत-शिवादिस्वगुरुपर्यन्त-त्रिलीन-

स- ४ महात्रिपुरसुन्दरीस्वरूपिणीं पूजयामि तर्पयामि नमस्करोमि ।

३- अष्टकोण-चक्रे

४ कं कालस्वरूपा-वसुकोणात्मक-सर्वरोगहर-लय-सृष्ट्यात्मक-चक्राधिष्ठात्री-सर्ववागीश्वरी ह्रीं श्रीं सौः त्रिपुरासिद्धा-चक्रनायिका ह्स्ख्फ्रें सर्वखेचरी-मुद्रादेवी- भुक्तिसिद्धि-वैष्णव -दर्शन-समयकुब्जिकाऽऽम्नायनायिकायुत- वाग्देवता-वशिन्याद्यष्ट-रहस्ययोगिनीमयूखां ४ कं वसुकोण-त्रिकोणान्तराले दिव्यौघ-सिद्धौघमानवौघ-गुरुसन्तति-गुरुपङ्क्तित्रययुत-सर्वायुधशक्तिमयूखां ४ क ५ ह ६ स ४ श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीस्वरूपिणीं पूजयामि तर्पयामि नमस्करोमि ।

४- अन्तर्दशार-चक्रे

४ रं अग्निस्वरूपान्तर्दशारात्मक-सर्वरक्षाकर-स्थिति-लयात्मक-चक्राधिष्ठात्री-सर्वयोगेश्वरी ह्रीं क्लीं ब्लूं त्रिपुरामालिनीचक्रनायिका-क्रों सर्वमहाङ्कुशामुद्रादेवी-प्राकाम्यसिद्धि-सौरदर्शन-सिद्धिकाल्याम्नायनायिकायुत -सर्वज्ञादि-दशनिगर्भयोगिनीमयूखा- ४ हलकस ह्रीं कसहलसह्रीं ईं यं रं क्लीं मायाविश्वयोनिवाय्वग्निस्वरूपा - चतुर्दशार-वहिर्दशारान्तर्दशारात्मक-दक्षिणाम्नाय-समष्टि-परपर्याय-महाज्ञानप्रद-स्थिति-चक्राधिष्ठात्री-सर्वविद्येश्वरी-समहाकाल-दक्षिणकाल्याम्नायनायिका साघोर -कलह्रीं हसकलह्रीं सकलह्रीं -दक्षिणाम्नायसुन्दरी-सहितोत्तराम्नाय - तिरोधानचक्रनिलयां सिद्धिलक्ष्मी-स्वरूपिणीं पूजयामि तर्पयामि नमस्करोमि ।

५- वहिर्दशार-चक्रे

४ यं वायुस्वरूप-वहिर्दशारात्मक-सर्वार्थसाधक-स्थिति-स्थित्यात्मकचक्राधिष्ठात्री सर्वपीठेश्वरी हसैं हस्क्लीं हसौः त्रिपुराश्री-चक्रनायिका सः सर्वोन्मादिनीमुद्रादेवी-वशित्व-सिद्धि-वैदिकदर्शन- परमाद्याकाल्याम्नायनायिकायुत–सर्वसिद्धिप्रदादि-दश-कुलोत्तीर्णयोगिनीमयूखां ४ क ५ ह ६ स ४ श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-स्वरूपिणीं पूजयामि तर्पयामि नमस्करोमि ।

६- चतुर्दशार-चक्रे

४ ईं मायाविश्वयोनिस्वरूप-चतुर्दशारात्मक-सर्वसौभाग्यदायकस्थितिसृष्ट्यात्मकचक्राधिष्ठात्री सर्वतत्त्वेश्वरी हैं हक्लीं हसौः त्रिपुरवासिनीचक्रनायिका ब्लूं सर्ववशङ्करीमुद्रादेवी -वशित्वसिद्धि-साङ्ख्यदर्शनाद्याकाल्याम्नायनायिकायुत-सर्वसंक्षोभिण्यादिचतुर्दश-सम्प्रदाययोगिनीमयूखां ४ क ५ ह ६ स ४ श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीस्वरूपिणीं पूजयामि तर्पयामि नमस्करोमि ।

७– अष्टदलचक्रे

४ हं व्योमस्वरूपाष्टदलात्मक-सर्वसंक्षोभण-सृष्टिलयात्मकचक्राधिष्ठात्री-सर्वतन्त्रेश्वरी ह्रीं क्लीं सौः त्रिपुरसुन्दरीचक्रनायिका क्लीं सर्वाकर्षिणीमुद्रादेवी-महिमासिद्धि-गाणपत्यदर्शन- भुवनाम्नायनायिकायुतानङ्गकुसुमाद्यष्टगुप्ततरयोगिनीमयूखां ४ क ५ ह ६ स ४ श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीस्वरूपिणीं पूजयामि तर्पयामि नमस्करोमि ।

८– षोडशदलचक्रे

४ सं सोमस्वरूप-षोडशदलात्मक-सर्वाशापरिपूरक-सृष्टिस्थित्यात्मकचक्राधिष्ठात्री सर्वमन्त्रेश्वरी ऐं क्लीं सौः त्रिपुरेशीचक्रनायिका द्रीं सर्वविद्राविणी-मुद्रादेवी-लघिमासिद्धि-बौद्धदर्शन - पूर्णेश्वर्याम्नायनायिकायुत - कामाकर्षिण्यादि-षोडश-गुप्तयोगिनीमयूखां ४ क ५ ह ६ स ४ श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीस्वरूपिणीं पूजयामि तर्पयामि नमस्करोमि ।

९– त्रिवृत्तचक्रे

४ वं जलस्वरूप-त्रिवृत्तात्मक-त्रिवर्गसाधनकरसृष्टिसृष्ट्यात्मकचक्राधिष्ठात्री सर्वजीवेश्वरी ऐं क्लीं ह्रीं त्रिपुरेशिनीचक्रनायिका ऐं महायोनिमुद्रादेवी-गरिमासिद्धि -स्मार्तदर्शनोन्मन्याम्नायनायिकायुत - कालरात्र्यादि-नवविंशत्यमृतादिषोडशमातृका-कामेश्वर्यादिषोडशनित्यैवमेकषष्टिमातृकायोगिनोमयूखां ४ क ५ ह ६ स ४ श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीस्वरूपिणीं पूजयामि तर्पयामि नमस्करोमि ।

१०– चतुरस्रचक्रे

४ लं पृथ्वीस्वरूप-चतुरस्रत्रयात्मक-त्रैलोक्यमोहन-सृष्टिसृष्ट्यात्मक-चक्राधिष्ठात्री सर्वचक्रेश्वरी अं आं सौः त्रिपुराचक्रनायिका द्रां सर्वसंक्षोभिणीमुद्रा देव्यणिमासिद्धि - कामरूपादिपीठस्थितासिताङ्गादिभैरवोत्सङ्गे ब्राह्म्याद्यष्टमातृकादेवी-सर्वसंक्षोभिण्यादिमुद्रादेव्येवमष्टाविंशतिप्रकटयोगिनीमयूखां ४ हसकल-ह्रीं हलकहस ह्रीं सकल ह्रीं हं सं वं लं व्योम-सोम-जल-पृथ्वी-स्वरूप-चतुरस्र-त्रय - त्रिवृत्तषोडशदलाष्टदलात्मकपूर्वाम्नायसमष्टिपरपर्याय-महासुखप्रद-सृष्टि-चक्राधिष्ठात्रीस र्वलोकेश्वरीससदाशिवभुवनेश्वर्याम्नायनायिकासतत्पुरुष ४ हस-ह्रीं कहह्रीं सहह्रीं पूर्वाम्नायसुन्दरीसहितोत्तराम्नायतिरोधानचक्रनिलया-सिद्धल-क्ष्मीस्वरूपिणीं ४ क ५ ह ६ स ४ श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीस्वरूपिणीं पूजयामि तर्पयामि नमस्करोमि ।

११– चतुर्दशार-बहिर्दशार-निर्मितस्पन्दीचक्रे (१४+१० =२४ स्थानेषु)

४ ईं यं चतुर्दशार-बहिर्दशार-स्पन्दीचक्राधिष्ठित-चतुर्विंशति-गायत्रीवर्ण-परिवृत-बिन्दौ वेदकर्णीभूतचतुष्पादगायत्रीसहित ऐं क्लीं सौः बालात्रिपुराचक्र-नायिकास्वरूपिणीं पूजयामि तर्पयामि नमस्करोमि ।

१२– बहिर्दशारान्तर्दशार-निर्मितस्पन्दीचक्रे (१० स्थानेषु)

४ यं रं बहिर्दशारान्तर्दशार-स्पन्दीचक्राधिष्ठित-कालिकादि-दशमहाविद्या-परिवृतबिन्दौ ह्लीं श्रीं सौः बालासुन्दरीचक्रनायिकास्वरूपिणीं पूजयामि तर्पयामि नमस्करोमि ।

१३– अन्तर्दशार-वसुकोण-निर्मित-स्पन्दीचक्रे (महाबिन्दवचक्रे वा)

४ रं कं अन्तर्दशारवसुकोणस्पन्दीचक्राधिष्ठितमहाकाल्यादि-चतुरुपाम्ना-यनायिका - पूर्वाम्नायसुन्दर्यादिचतुराम्नायसुन्दरीपरिवृतबिन्दुस्थितोर्ध्वाम्नायिसु-न्दरीसहित ऐं त्रिपुरे सर्ववाञ्छितं मे देहि स्वाहा बालाभैरवीचक्रनायिकास्वरू-पिणीं पूजयामि तर्पयामि नमस्करोमि ।

१४– बिन्दुविभावित-पञ्चकोणषट्कोणयोः क्रमेण

४ हुं सर्वानन्दमयबिन्दुविभावितपञ्चकोणषट्कोणयोः क्रमेण पञ्चपञ्चि-कासहित-पञ्चसिंहासनदेवता-डाकिन्यादिपरिवृत ४ ह्लीं क ५ ह ६ स ४ श्रीललि-तामहात्रिपुरसुन्दरीचक्रनायिकास्वरूपिणीं पूजयामि तर्पयामि नमस्करोमि ।

१५– बिन्दुविभावितषट्कोणे

४ हुं सर्वानन्दमयबिन्दुविभावित-षट्कोणचक्राधिष्ठित-डाकिन्यादिषट्चक्र-देवीपरिवृत-याकिन्यम्बासहित- ४ क ५ ह ६ स ४ श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरी-चक्रनायिकास्वरूपिणीं पूजयामि तर्पयामि नमस्करोमि ।

१६– भूपुराद् बहिर्भागे

४ भूपुराद् बहिश्चक्राधिष्ठिताघोरादिपञ्चसमयविद्या-सन्निधि-द्वारादि-द्वारनायिकापरिवृतां ४ क ५ ह ६ स ४ श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीचक्रनायिका-स्वरूपिणीं पूजयामि तर्पयामि नमस्करोमि ।

॥ श्रीपरदेवतार्पणमस्तु ॥

